वैश्विक संवाद

7.2

17 भाषाओं में एक वर्ष में 4 अंक

डयूटरटे की निरंकुशता

वाल्डेन बेल्लो

पाकिस्तान से समाजशास्त्र

अयाज कुरैशी,
निदा किरमानी,
कावेरी कुरैशी,
तानिया सईद,
अमीन जफर

जिगमन्ट बाउमन को श्रद्धाँजलि

पीटर मेकमिसलोद,
मासीज ग्डूला,
पीटर बेलहार्ज

कनाडाई समाजशास्त्र

हॉवर्ड रमोस,
रीमा विल्केस,
नील मेक लागलिन,
डेनियल बेलाण्ड,
पेट्रिशिया लेण्डोल्ट,
चेरिल तिलकसिंह,
कैरेन फोस्टर,
फ्यूकी कुरासावा

विशिष्ट कॉलम

> अमरीकी विश्वविद्यालयों में अप्रवासियों का संघर्ष
> अर्जेंटीना के संपादकीय दल का परिचय

GD
अंक 7 / क्रमांक 2 / जून 2017
www.isa-sociology.org/global-dialogue/

पत्रिका

International Sociological Association

> सम्पादकीय

प्रतिक्रिया के युग में समाजशास्त्र

डयूटरटे, ए रडोगान, और बान, पुतिन, ले पेन, मोदी, जुमा और ट्रम्प – ये सभी समान राष्ट्रवादी, अज्ञात जनमीत, सत्तावादी प्रवृत्ति से बने प्रतीत होते हैं। ट्रम्प की जीत ने गैर–उदारवादी आंदोलनों और दक्षिणपंथी तानाशाही में नई उर्जा का संचार किया है। निस्संदेह, राजनैतिक प्रतिक्रिया दशकों से विकसित हो रही थी क्योंकि उदार लोकतंत्रों ने अपनी अनिश्चितता, अपवर्जन और असमानता के साथ बाजारीकरण की तीसरी लहर को प्रेरित किया है। आज का अग्रदूत, 1920 और 1930 के दशकों का फासीवादी मोड़, ने बाजारीकरण की दूसरी लहर का अनुगमन किया। वह द्वितीय विश्वयुद्ध के साथ ढह गया लेकिन क्या हम यकीन कर सकते हैं कि प्रतिक्रिया का यह दौर भी हार जायेगा? लोकतंत्र की उदार संस्थाएँ कितनी मजबूत हैं? ट्रम्प प्रशासन के शुरूआती दिन सुझाते हैं कि वे कार्यकारी आदेशों की झड़ी के सामने लचीलेपन के बिना नहीं हैं। पोर्टाकरेरो और लारा गार्सिया का लेख विश्वविद्यालयों को प्रतिरोध के एक ऐसे क्षेत्र के रूप में इंगित करता है।

अन्य देशों के बारे में क्या? इस अंक में वाल्डेन बेल्लो फिलीपीनी राष्ट्रपति डयूटरटे द्वारा किये गये अत्याचार का वर्णन करते हैं। डयूटरटे के शासन में उत्थान को मार्कोस शासन के तख्तापलट के बाद उदार लोकतंत्र की विफलता में देखा जा सकता है। ये विफलता बेशर्म राजनैतिक भ्रष्टाचार, बढ़ती असमानता में व्यक्त और अमरीकी विदेश नीति के अधीन होने से संयोजित हुई। उदार लोकतंत्र की कमियों के प्रति इस राजनैतिक प्रतिक्रिया चरित्र में लोकलुभावन हो सकती है। इसके बावजूद कि वह आबादी के एक कलंकित वर्ग नशेड़ी और नशे के व्यापारियों को डराते हुए प्रभुत्व वर्ग के हितों की रक्षा करते हैं। इसी प्रकार एकडोगान कुर्द वो डराते हैं, ट्रम्प अप्रवासियों का डराते हैं और जर्मन फासीवाद ने गैर–आर्यन को डराया। वास्तव में, बेल्लो का जर्मन फासीवाद के साथ समानान्तर का बयान काफी विश्वसनीय है।

पाकिस्तान एक अन्य देश है जिसके लिए सैन्य शासन अजनबी नहीं है और जहां जनवादी अपील आर्थिक शक्ति के सकेन्द्रीकरण के साथ आती है। पाकिस्तानी समाजशास्त्र एक प्रतिबंधित उद्यम है लेकिन तथापि नवाचारी और विवेचनात्मक है। जैसा कि हम इस अंक में बुनियादी विकास से बहु–राष्ट्रीय निगमों के लाभ, कैसे खाड़ी देश सबसे अधिक उत्पादक पाकिस्तानी श्रीमिक चुनने के लिए शरीरों की निगरानी करते हैं और कैसे श्रमबल में महिलाओं के प्रवेश के बावजूद महिलाओं के विरूद्ध हिंसा में कभी नहीं आती है, पर छपे लेखों के माध्यम से देख सकते हैं। हमारे पास यू. के. में पाकिस्तानी पर दो अध्ययन भी हैं जो पाकिस्तान–अप्रवासी वैवाहिक सम्बन्धों में परिवर्तन के साथ मुस्लिम छात्र कैसे निगरानी के शिकार बनने से निपटते हैं। ये पाँच वैयक्तिक अध्ययन मिलकर एक वास्तविक औपनिवेश–पश्चात अधीनता के समाजशास्त्र को राष्ट्रीय सीमाओं के परे जाता है का विकास करती हैं।

आव्रजन और पर्यावरणीय न्याय जैसे मुद्दों से बँधा कनाड़ा से अधिक आशावादी समाजशास्त्र बिल्कुल अलग है। कनाडा का समाजशास्त्र नीतिगत दुनिया से कहीं अधिक जुड़ा है। पूर्व प्रधानमंत्री स्टीफन हार्पर के अपमानजनक दुर्वचन के बावजूद, कनाडियाई समाजशास्त्रीयों को व्यापक समाज से अपेक्षाकृत मित्रवत् स्वागत प्राप्त होता है। उनके निराशाजनक स्वर अभी सामाजिक लोकतांत्रिक राज्य से केवल उनकी उच्च अपेक्षाओं को दर्शाते हैं।

यदि कोई एक समाजशास्त्री है जिसने हमारे युग के महत्व को पकड़ा है, वह जिगमन्ट बाउमन हैं जिनका 91 वर्ष की उम्र में निधन हो गया। हमारे तीन संस्मरण लेख लिखने वाले उनके असाधारण जीवन जो एक शक्तिशाली नैतिक दृष्टि से सूचित एवं संदेह आदर्शवाद से सजा था, का वर्णन करते हैं। उनको प्रेरणादायक समाजशास्त्र कई दशकों तक जीवित रहेगा।

> ***वैश्विक संवाद*** को आईएसए वैबसाइट पर 17 भाषाओं में देखा जा सकता है।
> प्रस्तुतियां (Submissions) burawoy@berkeley.edu पर प्रेषित की जा सकती हैं।

वाल्डेन बेल्लो, *समर्पित विद्वान, राजनैतिक कार्यकर्त्ता और वैश्विक समाजशास्त्री फिलीपीन्स ने राष्ट्रपति रोड्रिगो डयूटरेट के नये शासन का वर्णन करते हैं।*

पाकिस्तान *: लाहौर प्रबंधन विज्ञान विश्वविद्यालय से संलग्न, पारदेशीय समाजशास्त्र*

जिगमन्ट बाउमन *: हमारे समय के मकान समाजशास्त्रियों में से एक को श्रद्धांजलि*

कनाडा *: देश भर से बिना पछतावे की ओर प्रभावशाली समाजशास्त्र*

GD

Global Dialogue is made possible by a generous grant from **SAGE Publications.**

> Editorial Board

Editor: Michael Burawoy.

Associate Editor: Gay Seidman.

Managing Editors: Lola Busuttil, August Bagà.

Consulting Editors:
Margaret Abraham, Markus Schulz, Sari Hanafi, Vineeta Sinha, Benjamín Tejerina, Rosemary Barbaret, Izabela Barlinska, Dilek Cindoğlu, Filomin Gutierrez, John Holmwood, Guillermina Jasso, Kalpana Kannabiran, Marina Kurkchiyan, Simon Mapadimeng, Abdul-mumin Sa'ad, Ayse Saktanber, Celi Scalon, Sawako Shirahase, Grazyna Skapska, Evangelia Tastsoglou, Chin-Chun Yi, Elena Zdravomyslova.

Regional Editors

Arab World:
Sari Hanafi, Mounir Saidani.

Argentina:
Juan Ignacio Piovani, Pilar Pi Puig, Martín Urtasun.

Bangladesh:
Habibul Haque Khondker, Hasan Mahmud, Juwel Rana, US Rokeya Akhter, Toufica Sultana, Asif Bin Ali, Khairun Nahar, Kazi Fadia Esha, Helal Uddin, Muhaimin Chowdhury.

Brazil:
Gustavo Taniguti, Andreza Galli, Ângelo Martins Júnior, Lucas Amaral, Benno Alves, Julio Davies.

India:
Rashmi Jain, Jyoti Sidana, Pragya Sharma, Nidhi Bansal, Pankaj Bhatnagar.

Indonesia:
Kamanto Sunarto, Hari Nugroho, Lucia Ratih Kusumadewi, Fina Itriyati, Indera Ratna Irawati Pattinasarany, Benedictus Hari Juliawan, Mohamad Shohibuddin, Dominggus Elcid Li, Antonius Ario Seto Hardjana.

Iran:
Reyhaneh Javadi, Niayesh Dolati, Mina Azizi, Mitra Daneshvar, Vahid Lenjanzade.

Japan:
Satomi Yamamoto, Miki Aoki, Masataka Eguchi, Mami Endo, Akane Higuchi, Yuka Hirano, Hikaru Honda, Yumi Ikeda, Izumi Ishida, Aina Kubota, Yuna Nagaye.

Kazakhstan:
Aigul Zabirova, Bayan Smagambet, Adil Rodionov, Gani Madi, Almash Tlespayeva, Kuanysh Tel.

Poland:
Jakub Barszczewski, Katarzyna Dębska, Paulina Domagalska, Adrianna Drozdrowska, Łukasz Dulniak, Jan Frydrych, Krzysztof Gubański, Kinga Jakieła, Justyna Kościńska, Kamil Lipiński, Mikołaj Mierzejewski, Karolina Mikołajewska-Zając, Adam Müller, Zofia Penza, Teresa Teleżyńska, Anna Wandzel, Jacek Zych, Łukasz Żołądek.

Romania:
Cosima Rughiniș, Raisa-Gabriela Zamfirescu, Costinel Anuța, Maria-Loredana Arsene, Tatiana Cojocari, Andrei Dobre, Diana Alexandra Dumitrescu, Iulian Gabor, Rodica Liseanu, Mădălina Manea, Mihai-Bogdan Marian, Andreea Elena Moldoveanu, Rareș-Mihai Mușat, Oana-Elena Negrea, Mioara Paraschiv, Ion Daniel Popa, Diana Pruteanu Szasz, Eliza Soare, Adriana Sohodoleanu.

Russia:
Elena Zdravomyslova, Anna Kadnikova, Asja Voronkova.

Taiwan:
Jing-Mao Ho.

Turkey:
Gül Çorbacıoğlu, Irmak Evren.

Media Consultant: Gustavo Taniguti.

> इस अंक में In This Issue

सम्पादकीय : प्रतिक्रिया के युग में समाजशास्त्र **2**

उदारवादी लोकतंत्र के खिलाफ डयूटरटे का विद्रोह
वाल्डेन बेल्लो, फिलीपीन्स द्वारा **4**

> पाकिस्तान से समाजशास्त्र

खाडी प्रवसन की चिकित्सीय निगरानी
अयाज कुरैशी, पाकिस्तान द्वारा **7**

आर्थिक भागीदारी और महिलाओं के विरूद्ध हिंसा
निदा किरमानी, पाकिस्तान द्वारा **9**

प्रवासियों में तलाक
कावेरी कुरैशी, पाकिस्तान द्वारा **11**

इस्लामोफोबिया और ब्रिटिश सुरक्षा एजेण्डा
तानिया सईद, पाकिस्तान द्वारा **13**

बुनियादी ढाँचे की राजनीति
अमीन जफर, पाकिस्तान द्वारा **15**

> स्मृति में

जिगमन्ट बाउमन की नैतिक दृष्टि
पीटर मेकमिसलोद, यू. के. द्वारा **17**

जिगमन्ट बाउमन, एक संशयी आदर्शवादी
मासीज ग्डूला, पौलेण्ड द्वारा **19**

जिगमन्ट बाउमन को याद करते हुए
पीटर बेलहार्ज, आस्ट्रेलिया द्वारा **21**

> कनाडा से समाजशास्त्र

गैर समाजशास्त्रीय समय में समाजशास्त्र
हॉवर्ड रमोस, **रीमा विल्केस** और **नील मेक लागलिन**, कनाडा द्वारा **23**

जन नीति में समाजशास्त्र की प्रतिबद्धता
डेनियल बेलाण्ड, कनाडा द्वारा **25**

कनाडा में अनिश्चित गैर–नागरिकता
पेट्रिशिया लेण्डोल्ट, कनाडा द्वारा **27**

पर्यावरणीय न्याय के द्वारा समाजशास्त्र को समर्पित करना
चेरिल तिलकसिंह, कनाडा द्वारा **29**

अन्य किसी समय जैसे में (पूर्णतया कभी नहीं) समाजशास्त्र
कैरेन फोस्टर, कनाडा द्वारा **31**

संकटग्रस्त समय में मीडिया को साथ जोड़ना
फ्यूकी कुरासावा, कनाडा द्वारा **33**

> विशिष्ट स्तम्भ

अमरीकी विश्वविद्यालय : अप्रवासी संघर्षो के लिए नये स्थल?
सैंड्रा पोर्टोकेरों और **फ्रांसिस्को लारा गार्सिया**, यू. एस. ए. द्वारा **35**

अर्जेंटीना की संपादकीय दल का परिचय
जुआन इग्नासियो पाओवानी, **पिलार पी पुइग** और **मार्टिन उर्त्सुन**, अर्जेन्टीना द्वारा **37**

> उदारवादी लोकतंत्र के खिलाफ डयूटरटे का विद्रोह

वाल्डेन बेल्लो, न्यूयार्क राज्य विश्वविद्यालय, बिंगहेम्पटन एवं फिलीपीन्स की प्रतिनिधि सभा के पूर्व सदस्य

पुराने शैली के प्रतिशोधी रोड्रिगो डयूटरटे यानि कि "DUBO" (जिसे ''डयू–टरटे'' कहा गया) या ''दण्ड देने वाला'' अर्बु द्वारा चित्रण

नाजी प्रतिक्रांति की जीत के साथ युसुफ गोबबेल्स ने विख्यात रूप से कहा, ''1789 का वर्ष अब इतिहास से मिटा दिया गया है।'' इसी तरह, क्या हम यह तर्क दे सकते हैं कि अमरीका, यूरोप और अन्यत्र बढ़ रहे फासीवादी आंदोलन इतिहास से 1989 को मिटा देने का प्रयास कर रहे हैं?

1789 ने फ्रांस की क्रान्ति का आगाज किया। उसी प्रकार फ्रांसिस फुकायामा और अन्य के लिए 1989 उदारवादी लोकतंत्र के दिग्गज के रूप में चिन्हित हुआ। फुकायामा ने जिसे ''इतिहास का अंत'' कहा, ''यूरोप में साम्यवाद की और विकासशील देशों में दक्षिण पंथी सत्तावादी शासनों की पराजय ने ''आर्थिक और राजनीतिक उदारवाद [.....] की अविस्मरणीय विजय और मानव शासन के अंतिम स्वरूप के रूप में पश्चिमी उदार लोकतंत्र के सार्वभौमिकरण को अंकित किया।''

फुकायामा के न्वोन्मेष आदर्शवाद को शीर्घ ही उदार–विरोधी आंदोलनों, मुख्य रूप से मध्यपूर्व में राजनैतिक इस्लाम और पूर्वी यूरोप में नस्लीय अलगाववादी जैसी धर्म प्रेरित ताकतों द्वारा चुनौती दी गई। लेकिन किसी भी आंदोलन या व्यक्ति उदारवादी लोकतांत्रिक आदर्शों का इतना मुखर रूप से तिरस्कार नहीं किया है जितना कि मई 2016 में एक विद्रोही चुनावी आंदोलन द्वारा फिलीपीन्स के निर्वाचित राष्ट्रपति रोड्रिगो डयूटरटे।

> उन्मूलनवाद

डयूटरटे का हस्ताक्षर अभियान मादक पदार्थों पर उनका युद्ध रहा है, जिसने नौ महीनों के बाद ही लगभग 8000 जिंदगियां लील ली। यह कोई सामान्य कानून व्यवस्था का अभियान नहीं है। आदर्शवाद की सीमा पर जाती कट्टरवादिता और छद्म वैज्ञानिक

> >

नाजी नस्लीय सिद्धान्त के विचारों की याद दिलाते हुए इस अभियान ने समाज के एक पूरे तबके से जीवन का अधिकार, उचित प्रक्रिया या समाज की सदस्यता छीन ली है। डयूटरटे ने नशा करने वालों और मादक पदार्थों के व्यापारियों – एक समूह जो देश की 103 मिलियन आबादी में से 3 मिलियन है – को मानव जाति के बाहर कर दिया है। एक विशिष्ट आलांकारिक हावभाव के साथ उन्होंने सुरक्षा बलों को कहा : ''मानवता के खिलाफ अपराध?'' सबसे पहले, मैं आपसे स्पष्ट बोलना चाहूंगा : क्या वे इंसान हैं? आपकी इंसान की क्या परिभाषा है?

पुलिस द्वारा की गई हत्याओं को ''आत्म सुरक्षा'' के रूप में न्यायसंगत ठहरा, डयूटरटे इस पर जोर देते हैं कि ''शाबु'' – मेथ या मेथाम्फेटमाइन हाइड्रोक्लोराइड का स्थानीय नाम–का सेवन ''एक व्यक्ति के दिमाग को सिकोड़ सकता है, जो फिर पुनर्वास के लायक भी नहीं रह जाता है।'' नशा करने वालों को ''जीवित मृत'' जो समाज के किसी भी काम के नहीं है कह कर वे जोर देते हैं कि वे ''व्यामोहाम पीड़ित'' और खतरनाक हैं। डयूटरटे ने पुलिस को नशेडियों को मारने, चाहे वे गिरफ्तारी का विरोध कर या न करें, की खुली छूट प्रदान की है। वास्तव में, बिना किसी कारण के नशेड़ियों को मारने के लिए अपराधी ठहराये जा सकने वाले किसी भी पुलिस कर्मी के लिए उन्होंने तत्काल क्षमा की पेशकश की है। ''ताकि तुम उन लोगों के पीछे जा सको जिनके कारण तुम अदालत में पहुंचे।''

इन विचारों के बावजूद या इनके कारण, डयूटरटे जिसने अपने अभियान के दौरान वादा किया था कि वे हजारों अपराधियों के शरीर से मनीला खाड़ी की मछलियों को मोटा कर देंगे – आज भी बेहद लोकप्रिय है। इसकी समर्थन रेटिंग्स लगभग 83% प्रतिशत के आस पास है और नेटिजन के कट्टर अनुयायी हैं जो इनके शासन की अधि–न्यायोत्तर वध की आलोचना करने की हिम्मत करने वालों पर साइबर हमला करते हैं।

> डयूटरतिस्मों की जड़ें

डयूटरटे की जन अपील की जड़े क्या हैं? यह सच है कि उनके द्वारा नशेड़ियों की समाज की महामारी के रूप में पहचान व्यापक रूप से प्रतिरूपित होती है। लेकिन इसके और गहन कारण भी है। समाज पर डयूटरटे की पकड़, फरवरी 1986 में फर्डिनेंड मार्कोस के तख्तापलट, तथाकथित EDSA विद्रोह के बाद शासन में आये उदार लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था के साथ गंभीर मोहभंग दर्शाती है। असल में, ''EDSA गणतंत्र''–जिसका नाम मनीला राजमार्ग पर मार्कोस की तानाशाही को गिराने हेतु जन विरोध प्रदर्शन के कारण रखा गया, की असफला डयूटरटे की सफलता की शर्त थी।

डयूटरटे का मार्ग फिलीपीन्स के चुनाव व्यवस्था पर अभिजात वर्ग का नियंत्रण, धन का सतत संकेन्द्रण, नवउदारवादी आर्थिक नीतियों और विदेशी ऋण चुकौती के लिए वाशिंग्टन का आग्रह के घातक संयोजन से प्रशस्त हुआ था। 2016 के चुनाव के समय तक, फिलीपीन्स की वास्तविक स्थिति (भीमकाय गरीबी, कुत्सित असमानता और व्यापक भ्रष्टाचार) और EDSA गणतंत्र के सशक्तीकरण और धन पुर्नवितरण के लोकप्रिय वादों के मध्य एक गहरा फासला हो गया था। इसके साथ राष्ट्रपति बेनिगोओ एक्विनो III के शासन के दौरान अयोग्य प्रशासन की व्यापक धारणा को जोड़ दीजिए और यह कोई आश्चर्यजनक नहीं है कि मतदाताओं का लगभग 40 प्रतिशत, 16 मिलियन से भी अधिक मतदाताओं ने डयूटरटे द्वारा दक्षिण सीमावर्ती शहर डावाओ के महापौर के रूप में तीस वर्षों से विकसित कठोर व्यक्ति, सत्तावादी दृष्टिकोण की छवि को देश की जिसे जरूरत है के रूप में देखा। उपन्यासकार एंथनी डोअर्र ने जैसा युद्ध–पूर्व के जर्मन नागरिकों के लिए कहा, फिलीपीन्स के नागरिक ''ऐसे व्यक्ति के लिए बेताब थे जो चीजों को ठीक कर सके।''

इसके अलावा, EDSA गणतंत्र का विमर्श – लोकतंत्र, मानवाधिकार और कानून का शासन – शक्तिहीनता की भावना से अभिभूत फिलीपीन्स अधिकांश नागरिकों के लिए दमघोंटू प्रतीत होने लगा। डयूटरटे का भाषण – मौत की स्पष्ट धमकियों, उज्जड़ नुक्कड़ भाषा और उन्मादी रेलिंग जो कुलीन वर्ग जिसे उन्होंने ''कोनोस'' या कमीना कहा, की ओर केन्द्रित घृणायुक्त हारूस का मिश्रण उनके श्रोताओं के लिए एक प्राण पोषक फार्मूला साबित हुआ जो स्वयं को दमघोंटू पाखंड से मुक्त महसूस कर रहे थे।

> एक असली फासीवादी

डयूटरटे के उन्मूलन अभियान, बहुवर्गीय आधार का उनकी लामबंदी और उनके द्वारा शक्ति के संकेन्द्रण ने फिलीपीन्स की अमरीकन शैली के शक्तियों के विभाजन के चिथड़े कर दिये। उनके शासन की ये विशेषताएं उन्हें एक फासीवादी–लेकिन एक असाधारण तरह का–के रूप में चिन्हित करती हैं। यदि पारंपरिक फासीवादी अधिग्रहण नागरिक स्वतन्त्रताओं के उल्लंघन से प्रारम्भ हो कर निरंकुश सत्ता को हथियाने और फिर अंधाधुंध दमन की तरफ बढ़ता है, डयूटरटे इस क्रम को उलट देते हैं, वे पहले थोक में हत्याओं का आदेश देते हैं और नागरिक स्वतन्त्रताओं पर आक्रमण में कमी लाते हैं और बिना किसी विशिष्ट विरोध का सामना किये राजनैतिक क्षेत्र में सफाई अभियान से पहले निरंकुश सत्ता के लिए झपटटा मारते हैं। यह तूफानी फासीवाद है।

डयूटरटे के दृष्टिकोण की एक अन्य विशेषता है पारंपरिक वाम नेताओं को अपने प्रशासन में कार्य करने का निमंत्रण देने की। यह एक ऐसा गठबंधन है जो पारंपरिक फासीवादी शासन में अकल्पनीय होता। वाम को अपने कठोर शत्रु के रूप में देखने के बजाय, डयूटरटे को विश्वास है कि वे उन्हें नियंत्रित कर सकते हैं; इस बीच कम्यूनिस्ट पार्टी और नेशनल डेमोक्रेटिक फ्रंट उनके प्रशासन में सम्मिलित होने में खुश हैं। उन्हें आशा है कि वे अपने वर्षों से कम होते प्रभाव को पलट देंगे।

विदेश नीति में नौसिखिया होने के बावजूद, डयूटरटे ने फिलीपीन्स के राष्ट्रवाद की गतिकि पर सहजज्ञान युक्त पकड़ को प्रदर्शित किया है। तत्कालीन अमरीकी राष्ट्रपति द्वारा डयूटरटे की अतिरिक्त न्यायिक वध की आलोचना करने और चीन की तरफ उसके खुलेपन के बाद, अमरीकी पूर्व राष्ट्रपति ओबामा को ''कमीना'' कहने की चाल राजनैतिक रूप से जोखिम भरी थी। ऐसा इसलिए था क्योंकि अमरीका–समर्थनवाद फिलीपींस में गहन रूप से आरोपित माना जाता है। आश्चर्यजनक रूप से, हालांकि डयूटरटे की चालों ने बहुत कम विरोध उकसाया, बल्कि इंटरनेट पर इसे काफी समर्थन प्राप्त हुआ। जैसा कई लोगों ने देखा है, आम फिलीपीनी को अमरीका और अमरीकी संस्थाओं के प्रति श्रद्धा हो सकती है, लेकिन वाशिंग्टन द्वारा थोपी गई असमान संधियों के कारण फिलीपीन्स पर अमरीकी औपनिवेशिक अधीनता के और स्थानीय संस्कृति पर ''अमरीकी जीवन शैली'' के पडने वाले व्यापक प्रभावों के प्रति असंतोष के मजबूत अंतप्रवाह भी हैं। अमरीका–फिलीपींस के सम्बन्धों में अंतप्रवाह के रूप में रहा ''पहचान के लिए संघर्ष'' को समझने के लिए हमें हीगल के जटिल मालिक–दास

>>

द्वन्द्व में जाने की आवश्यकता नहीं है। डयूटरटे फिलीपींस के नागरिकों की इस भावनात्मक तली को टैप करने में इस तरह सफल रहे हैं जैसा वामपंथी कभी नहीं कर पाये। अन्यत्र के कई सत्तावादी पूर्वर्त्तियों की तरह, डयूटरटे राष्ट्रवाद और सत्तावाद को एक साथ जोड़ने में प्रभावी रूप से सफल हुए हैं।

> वक्तव्य में लोकवादी, सार में फासीवादी

यद्यपि उनके अधिकांश वक्तव्य लोकवादी हैं, तो भी डयूटरटे कोई ढोंग नहीं करते हैं कि वे पुनर्वितरित सुधार के लिए आम जनता को भित्तिपातक के रूप में इस्तेमाल करेंगे। अपितु, पारंपरिक फासीवादियों की तरह, वे वर्ग संघर्ष के उपर रहने की छवि को प्रस्तुत करते हुए वर्ग ताकतों में संतुलन बनाये रखने का प्रयास करते हैं। अपने अभियान के दौरान डयूटरटे ने अनुबंधित श्रम को समाप्त करने, खनन उद्योग को दबाने और मार्कोस शासन द्वारा नारियल उगाने वाले लघु कृषकों से अन्यायपूर्ण तरीके से एकत्रित करों को लौटाने का वादा किया था; लेकिन मोटे तौर पर ये वादे अधूरे रह गये जबकि देश के प्रमुख कुलीन ने स्वयं को उनके सहयोगियों के रूप में तैनात किया है। लेकिन, जहां दीर्घावधि में सामाजिक और आर्थिक सुधार लाना उनके सत्तावादी प्रोजेक्ट के लिए समर्थन बनाये रखने के लिए केन्द्रीय भूमिका में होगा, अभी तक प्रगति के अभाव द्वारा लघु या मध्यम अवधि में डयूटरटे की लोकप्रियता में सेंध लगाने की संभावना कम प्रतीत होती है।

फिलहाल, अभी कुलीन वर्ग एवं राज्य संस्थाओं के मध्य डयूटरटे का विरोध कमजोर है। इसी तरह, कैथोलिक चर्च पदानुक्रम, जो पहले मानवाधिकारों के सशक्त पैरोकार थे, एक लोकप्रिय नेता के विरोध में आने में झिझक रहा है; आंतरिक भ्रष्टाचार और परिवार नियोजन पर अपने हठीले रवैये के कारण चर्च में विश्वसनीयता का अभाव है। जो कुछ भी विरोध है वह छुटपुट लोगों–जिसमें सेनेटर लैला द लीमा जो अभी इस गलत आरोप, कि वे ड्रग लाडर्स के पे–रोल पर हैं, के कारण कारावास में है सम्मिलित हैं; मीडिया के एक खण्ड से; और आई–डिफेंड जैसे मानवा–धिकार समूहों के गठबंधन से आया है।

> डयूटरटे, फिलीपीन समाज एवं समाजशास्त्र

डयूटरटे राजनैतिक रूप से निन्दनीय हो सकते हैं लेकिन उनके व्यक्तित्व एवं उसके विरोधाभासों ने समाज वैज्ञानिकों का काफी ध्यान आकृष्ट किया है। कुछ ने सामाजिक–ऐतिहासिक रूझानों एवं व्यक्तित्व के अंतः प्रतिच्छेदन के बारे में सवाल उठाये हैं। हाल ही की एक न्यूयार्क टाइम्स प्रोफाइल ने विवरण दिया कि हाई स्कूल में जब एक जेसुइट पादरी ने उनका यौन उत्पीड़न किया तो डयूटरटे कितना ज्यादा प्रभावित हुए। डयूटरटे स्वयं ने 2016 के चुनाव अभियान के दौरान इसका खुलासा किया था। बाद में लांस एंजेल्स में स्थानान्तरित होने पर, अपचारी पादरी बच्चों का यौन उत्पीड़न करने लगा। उसके वरिष्ठ अधिकारियों ने उसे अनुशासित करने की या कानून के हवाले करने की कोई कोशिश नहीं की (यद्यपि अंततः जेसुइट्स को मजबूरी में पीड़ितों को 16 मिलियन डालर का भुगतान करना पड़ा)। संभावित रूप से होने वाली मनोवैज्ञानिक हानि के मद्देनजर, क्या फिलीपिंस एक बाल दरिंदे के अपराधों का हिसाब चुकता कर रहा है?

दार्शनिक जॉन ग्रे के शब्दों में, समाजशास्त्री यह भी पूछ सकते हैं, ''जिन्हें हम सभ्य जीवन की अपरिवर्तनीय विशेषताओं के रूप में देखते हैं, वे पलक झपकते ही गायब हो जाती हैं।'' विशेष रूप से 1986 के EDSA विद्रोह के बाद, फिलीपींस को उदार लोकतंत्र के शोकेस के रूप में देखा गया। कई लोगों ने दलीलें दी कि मार्कोस का तख्तापलट करने में, फिलीपीनी नागरिकों ने अमरीकी औपनिवेशिक काल के दौरान आत्मसात की गई बहुकालीन व्यक्तिगत अधिकार, उचित प्रक्रिया और लोकतंत्र के मूल्यों को पुनः स्थापित किया EDSA गणतंत्र का उदार लोकतांत्रिक संविधान इन राष्ट्रीय राजनैतिक मूल्यों को निश्चित रूप देता प्रतीत होता है।

लेकिन अचानक, एक वर्ष से कम अवधि में अधिकांश फिलीपीसी नागरिक एक ऐसे व्यक्ति के प्रति मजबूत समर्थन व्यक्त करते हैं जिसका एजेण्डा एक विशिष्ट श्रेणी के मनुष्यों का अतिरिक्त––यायिक वध है; कई लोगों ने डयूटरटे के ''इच्छुक जल्लाद'' के रूप में कार्य किया है। डेनियल गोल्डहागेन द्वारा दिये गये नाजी युग में जर्मन नागरिकों के विवरण या कम से कम उसके ''इच्छुक सहयोगियों'' से उधार लिया गया है। कुछ लोगों के लिए, खूनी अभियान के दौरान हमवतनों द्वारा डयूटरटे की जय जयकार करते देखना अकथनीय के साथ साथ दुखद भी है। व्यवहार विज्ञान में संलग्न अन्य लोगों को हालांकि ऐसा लगता है कि अब इस धारणा को त्यागने का समय आ गया है कि हमारे लोग सभ्य प्राणी या करूणा वाले प्राणी है; इसके बजाय हमें शायद फिलीपींस के समाज को उसी लैंस से देखना चाहिए जिसे गोल्हागेन ने नाजी काल के दौरान जर्मनी के अध्ययन के लिए प्रस्तावित किया थाः

इनके काल को अज्ञात किनारों पर उतरने वाले मानवशास्त्रियों की विवेचनात्मक दृष्टि से देखा जा सकता है [....] जो पूर्ण रूप से भिन्न संस्कृति से मिलने के प्रति खुली है और इस संभावना के प्रति जागरूक है कि उसे संस्कृति के संविधन, उसके व्यवहार के विशिष्ट प्रतिमानों और उसके सामूहिक प्रोजेक्ट एवं उत्पादों की व्याख्या करने हेतु अपने सामान्य बोध धारणाओं की शायद अवहेलना कर के व्याख्यायें बनाने की आवश्यकता होगी। यह उस संभावना को स्वीकार करेंगे कि बड़ी संख्या में लोग अच्छे विवेक में [....] मारे गये हो या दूसरों को मारने को तैयार होंगे।

>तुलनात्मक नरसंहार

इस बीच, मृतकों की संख्या बढ़ती जा रही है। मादक पदार्थों पर डयूटरटे के युद्ध ने दक्षिण पूर्व एशिया के हाल ही के इतिहास में अधिकांश नरसंहार अभियानों से अधिक लोगों का जीवन लीला है। यह 1970 के दशक में, पोल पोट द्वारा लगभग 3 मिलियन कम्बोडियन निवासियों के संहार और 1965 में सुकर्नो सरकार के असफल तख्तापलट के बाद लगभग 1 मिलियन इंडोनेशियाई लोगों की नरहत्या के बाद आता है। हाल ही में, डयूटरटे ने अपने चिरपरिचित कुटिल मिजाज में देश को कहा कि देश को मादक पदार्थों से मुक्त करने के लिए और 20,000 से 30,000 जिंदगियाँ ली जा सकती हैं। डयूटरटे को जब वे मजाक कर रहे हों तब भी गंभीरता से लेने की सीख के कारण, कई पयवेक्षक इन आंकड़ों को कम मानते हैं। ■

वाल्डेन बेल्लो से पत्र व्यवहार हेतु पता
<waldenbello@yahoo.com>

> खाड़ी प्रवसन की चिकित्सीय निगरानी

अयाज कुरैशी, लाहौर प्रबंधन विज्ञान विश्वविद्यालय, पाकिस्तान

पेशावर में, अभीष्ट प्रवासी मेडिकल स्क्रीनिंग केन्द्र के बाहर लाइन में।
अयाज कुरैशी द्वारा फोटो

पिछले तीन दशकों से, जैसे जैसे अधिकाधिक विकासशील देशों ने अपने नागरिकों को विदेश में कार्य करने के लिए भेजा है, पाकिस्तानी नागरिक खाड़ी सहयोग परिषद (GCC) के देश–बहरीन, कुवैत, कतार, ओमान, सउदी अरब और संयुक्त अरब अमीरात में श्रमिकों की तरह भर्ती किये गये हैं। लेकिन GCC के लिए वीसा प्राप्त करने के लिए श्रमिक प्रवासियों को पाकिस्तान छोड़ते समय एक स्वास्थ्य प्रमाण पत्र देना आवश्यक है। ये प्रमाणपत्र केवल GCC अनुमोदित मेडिकल स्क्रीनिंग केन्द्रों से ही प्राप्त किये जा सकते हैं। इन अनुमोदित मेडिकल स्क्रीनिंग केन्द्रों, जो कुछ बड़े शहरों में स्थित हैं, पर अभिलाषी/इच्छुक प्रवासियों की भीड़ उमड़ रही हैं, जहां इनकी विकृतियों या बीमारियों के लिए स्क्रीनिंग और जांच की जाती है। केवल उन्हीं लोगों का चयन होता है जिन्हें, पूर्व या वर्तमान में, किसी प्रकार का रोग या संक्रमण नहीं है और शारीरिक कमजोरी के कोई लक्षण नहीं है।

GCC देशों को भेजने वाले देशों के सैंकड़ों और हजारों इच्छुक प्रवासियों में से केवल श्रेष्ठ शरीर को छांट कर भेजने की आवश्यकता के बारे में कोई परेशानी नहीं है। पाकिस्तान जैसे देश, जो अपने पड़ोसी भारत, बंग्लादेश और श्रीलंका एवं मलेशिया जैसे क्षेत्रीय दिग्गजों के साथ खाड़ी के प्रेषण के लिए प्रतिस्पर्धा करते है, आपत्ति करने की हिम्मत नहीं रखते हैं। यद्यपि पाकिस्तान की सरकार श्रमिक प्रवासियों को, उनके प्रेषित प्रेषणों के कारण, मूल्यवान आर्थिक परिसम्पत्ति मानती है – उन्हें अपनी पाकिस्तानी और मुस्लिम पहचान के प्रति सच्चा बने रहने की नैतिक जिम्मेदारी रखने वाले अनौपचारिक राजदूत के रूप में वर्णित करती हैं – GCC में पाकिस्तानी नागरिकों को अपने देश के राजनयिक मिशन, जो पाकिस्तान के वीसा कोटा बढ़ाने के प्रति चिंतित रहते हैं, से बहुत कम सार्थक समर्थक प्राप्त होता है।

>>

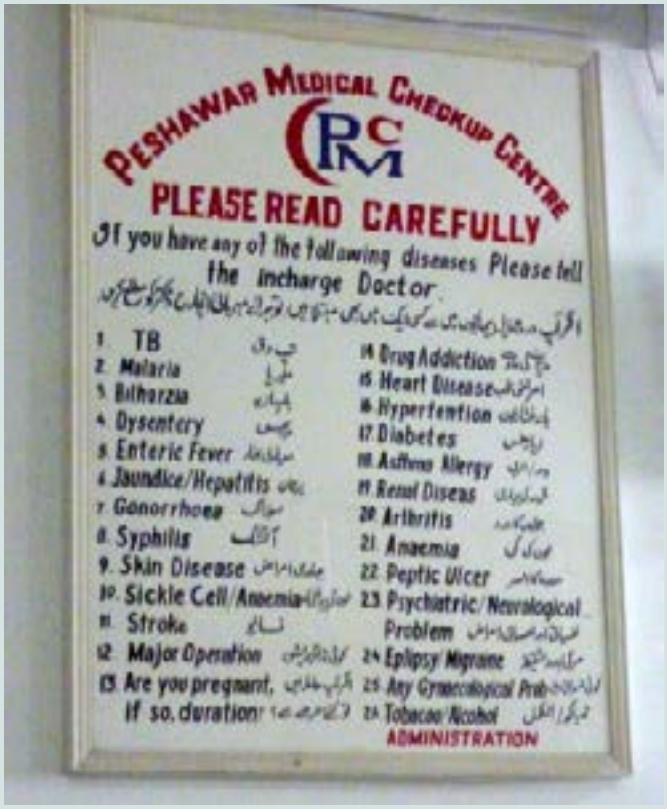

अभीष्ट प्रवासियों के लिए मेडिकल स्क्रीनिंग केन्द्र पेशावर में लगा एक पोस्टर। अयाज कुरैशी द्वारा फोटो।

इन केन्द्रों पर अनियमितताएं और स्क्रीनिंग प्रक्रिया में अनाचार की कहानियां प्रचुर मात्रा में है। इन में से ज्यादातर कहानियां अभिलाषी प्रवासियों के शोषण की भावना, अनुवीक्षण परिणाम, जो अक्सर अन्य निजी या सरकारी प्रयोगशालाओं द्वारा गलत साबित होते हैं, के साथ उनकी हताशा और राज्य द्वारा ऐसे व्यवसायी, जो उन्हें प्रवसन के लिए ''योग्य'' या ''अयोग्य'' पोषित करते हैं, के भरोसे छोड़ने की भावना को व्यक्त करती हैं।

ये केन्द्र क्षेत्रीय और केन्द्रीय खाड़ी अनुमोदित मेडिकल केन्द्र संघ के साथ मिलकर एक मजबूत कार्टेल का निर्माण करते हैं जो अपने प्रत्येक सदस्य के व्यापारिक हितों की देखभाल हेतु स्क्रीनिंग प्रक्रिया पर एकाधिकार बनाये रख, सदस्यों के मध्य संख्याओं को समान रूप से वितरित कर प्रतिस्पर्धा का निषेध करते हैं एवं चिकित्सीय ''अयोग्य'' घोषित व्यक्तियों द्वारा संभावित हमलों से केन्द्र के कर्मचारियों की रक्षा या पाकिस्तान के सरकारी विभागों द्वारा उन्हें नियमित करने के प्रयासों से बचाते हैं। स्क्रीनिंग मानक सउदी अरब में GCC सचिवालय द्वारा निर्धारित किये जाते हैं और स्क्रीनिंग केन्द्रों की स्थितियां – प्रयोगशाला उपकरण, जगह और कर्मीयों का भी GCC सचिवालय द्वारा वार्षिक निरीक्षण होना चाहिए।

संयुक्त राज्य में प्रवेश बिन्दु पर प्रवासियों की चिकित्सीय जांच, जैसा एलिस द्वीप एवं एंजेल द्वीप पर होता है के शास्त्रीय उदाहरणों के विपरीत, GCC के लिए पाकिस्तानी श्रमिक प्रवासियों की स्क्रीनिंग पाकिस्तान में ही होती है और यद्यपि इस तरह की स्क्रीनिंग एलिस द्वीप जैसे स्थानों पर होने वाली काफी आलोचनात्मक जांच प्रक्रियाओं की तुलना में कम प्रकट हैं, चिकित्सीय स्क्रीनिंग का यह स्वरूप समान रूप से आक्रामक है।

इन स्क्रीनिंग प्रक्रियाओं में असफल रहने के डर से, कुछ आकांक्षी श्रमिक प्रवासी शोषक चालबाजों, जिनके इन स्क्रीनिंग केन्द्रों में कार्यरत लोगों के साथ संपर्क हो सकते हैं (या दावा करते हैं), के चक्कर में फँस जाते हैं। अन्य, जो इन अनौपचारिक तरीकों के बावजूद भी स्वास्थ्य प्रमाण पत्र प्राप्त करने में असफल रहते हैं, प्रवास के अन्य माध्यमों के द्वारा प्रयास करते हैं। ऐसा कर वे अक्सर अवैध थल, वायु एवं समुद्री प्रवास के जाल में फँस जाते हैं।

स्वास्थ्य जांच में सफलता – कभी कभी जांचों के विभिन्न चक्रों और काफी वित्तीय लागत के बाद प्राप्त करने के बाद भी, जब प्रवासी खाड़ी क्षेत्र में पहुंचता है चिकित्सीय स्क्रीनिंग का एक और चक्र की आवश्यकता होती है। इस अंतिम परीक्षण में असफल रहने वाले सभी श्रमिकों को वापिस भेज दिया जाता है। यदि उन्हें GCC में प्रवेश करने की अनुमति मिलती हैं, रहवास की अनुमति का नवीनीकरण कराने हेतु उन्हें प्रत्येक वर्ष व्यापक चिकित्सीय स्क्रीनिंग करवानी पड़ती है।

विडंबना यह है कि महामारी विज्ञान के साक्ष्य सुझाव देते है कि गंतव्य देशों के अन्दर अपने रहवास के दौर प्रवासियों में अक्सर टी. बी. और एच आई वी जैसे संक्रमण विकसित होत जाते हैं। यह GCC में कार्य परमिट के नवीनीकरण में एक पूर्व–शर्त के रूप में अनिवार्य वार्षिक परीक्षण की नीतियां द्वारा सिद्ध होता है। ऐसा परागमन एवं श्रम की कठिन परिस्थितियों के कारण होता है। उदाहरण के लिए, एच आई वी संक्रमण के मामलों में, ऐसा आर्थिक और सांस्कृतिक नागरिकता के अभाव के कारण होता है, जो उन्हें कठोर श्रम शिविरों में जहां सेक्स वर्कर के पास जाने के अलावा आनंद के बहुत कम तरीके हैं, रहने के लिए मजबूर करते हैं।

किसी भी स्तर पर एच आई वी पॉजिटिव के रूप में चिन्हित होने वाले को हिरासत में लेकर निर्वासित किया जाता है। ऐसा अक्सर व्यक्ति या उसके देश के राजनयिक मिशन को निर्वासन के वास्तविक कारण बताये बिना किया जाता है। कुछ श्रमिकों को उनके नियोक्ताओं द्वारा ''आकस्मिक अवकाश'' पर भेजा गया और उन्हें दुबारा कभी नहीं बुलाया गया; भेजे जाने वाले लोगों में से कुछ को भीड़भाड़ वाले हिरासत केन्द्रों में ले जाने के पहले उनका सामान ले जाने, अपने सहनिवासियों/सहकर्मियों के साथ मामले निपटाने या नियोक्ता से अपने पासपोर्ट और बकाया वेतन लेने की भी अनुमति नहीं दी गई। कई श्रमिक पाकिस्तान में पहचान के साक्ष्य के रूप में सिर्फ एक पृष्ठ का आपातकालीन पासपोर्ट लेकर आते हैं, कुछ को फिर उनकी पाकिस्तानी नागरिकता की पुष्टि करने के लिए आव्रजन अधिकारियों द्वारा हिरासत में लिया जाता है। यह प्रक्रिया कई बार कई सप्ताह चलती है और तभी खत्म होती है जब परिवार जन अपने बेटों की रिहाई के लिए स्थानीय संरक्षक मिलता है।

जैसे लोग सरकारों पर स्वास्थ्य देखरेख तक पहुंच प्रदान करने की मांग रख रहे हैं और चिकित्सीय प्रक्रियाओं और निदान के प्रयोग से व्यक्तियों के अधिकारों को सीमित करने की कपटी तरीकों को चुनौती दे रहे हैं, दुनिया में ''स्वास्थ्य नागरिकता'' अधिकारों पर अधिकाधिक विरोध प्रदर्शन दिखाई दे रहा हैं हालांकि पाकिस्तान में श्रमिक प्रवासियों ने ऐसा कोई संकेत नहीं दिया है कि वे इस तरह की सामूहिक कार्यवाही में जुड़ने और संलग्न होने के लिए तैयार है और एजेन्टों को संभावित प्रवासियों को पशुओं की तरह एकत्रित करने उनके स्वास्थ्य के आधार पर छंटनी करने की अनुमति दे कर सरकार GCC देशों के साथ सहयोग करना जारी रखती है। ■

अयाज कुरैशी से पत्र व्यवहार हेतु पता <ayaz.qureshi@lums.edu.pk>

> आर्थिक भागीदारी एवं महिलाओं के विरूद्ध हिंसा

निदा किरमानी, लाहौर प्रबंधन विज्ञान विश्वविद्यालय, पाकिस्तान

वाणिज्य में संलग्न कराची की महिलाएं। निदा किरमानी द्वारा चित्र

विकास एजेंसियों और अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्थाओं का तर्क है कि महिलाओं की आर्थिक भागीदारी में वृद्धि से आर्थिक वृद्धि और महिला सशक्तीकरण दोनों को बढ़ावा मिलेगा – यह एक जीत की स्थिति है। इसके अलावा, यह अक्सर माना जाता है कि जो महिलाएँ आर्थिक रूप से सक्रिय है वे लिंग आधारित हिंसा से कम पीड़ित होंगी।

कराची की सबसे पुरानी कामगार वर्ग बस्ती में से एक–ल्यारी, पाकिस्तान में किये क्षेत्रीय कार्य के आधार पर मेरा शोध इन धारणाओं की एक अधिक जटिल वास्तविकता के खिलाफ परीक्षण करता है। वैतलिक रोजगार में सिर्फ 22% महिलाओं के साथ, पाकिस्तान में दुनिया की सबसे कम महिला श्रम भागीदारी दर है। मेरा क्षेत्रीय कार्य स्थल ल्यारी, राष्ट्रीय स्तर के आंकड़ों को दर्शाता है, लेकिन जहां पाकिस्तान में अधिकांश कार्यरत महिलाएं कृषि में कार्य करती हैं, ल्यारी की अधिकांश कामकाजी महिलाएं शहर के अधिक समृद्ध इलाकों में कम वेतन प्राप्त करने वाली घरेलू श्रमिक या सरकारी और निजी विद्यालयों में शिक्षिका के रूप में कार्य करती हैं। यद्यपि महिलाओं के मध्य वेतनिक रोजगार की दर कम हो सकती है, इसमें पिछली पीढ़ियों से नाटकीय वृद्धि हुई है – हालांकि आज की नवउदार अर्थव्यवस्था में महिलाओं के लिए उपलब्ध नौकरियाँ आम तौर पर कम भुगतान वाली, असुरक्षित और अनियमित है।

लेकिन ''आर्थिक रूप से सक्रिय'' होना आवश्यक रूप से 'सशक्तीकरण' में अनुवादित नहीं होता है जैसा कि नैला कबीर बहस करती हैं, बाजारी ताकतें अक्सर असमान मजदूरी दरों और भर्ती प्रक्रियाओं के माध्यम से लैंगिक असमानताओं को उत्पन्न करती हैं। इसी तरह, जहां नीति निर्माता अक्सर यह मानते हैं कि आर्थिक संलग्नता महिलाओं को अपनी आय पर नियंत्रण या

> >

सामाजिक और विधिक सहायता तक पहुंच प्रदान करती है और यह कि अधिक वित्तीय स्वतन्त्रता महिलाओं को अपमानजनक संबंधों से बाहर निकलने की गुंजायश देती है, वास्तविकता काफी जटिल है; महिलाओं की आर्थिक भागीदारी के प्रभाव उनके रोजगार की प्रकृति, उनके परिवारों के अन्तर्गत शक्ति सम्बन्धों, और उनके संबंधित समुदायों के अन्दर गतिकी पर निर्भर होते हैं।

क्या पैसा कमाना महिलाओं की लिंग आधारित हिंसा – जिसका पाकिस्तान में सभी विवाहित महिलाओं के 39% से 90% को प्रभावित करने का अनुमान है, जिनमें अधिकांश मामले रिपोर्ट भी नहीं किये जाते, से बचाव करता है? क्या कामकाजी महिलाएं नियोक्ताओं, जो महिलाओं को कम मजदूरी या फिर पूर्ण रूप से भुगतान के लिए मना करते हैं, के आर्थिक और भौतिक शोषण के सामान्य स्वरूपों का सामना करने में अधिक सक्षम हैं? क्या वेतन कमाने वाली महिलाएं घरेलू संसाधनों या अपनी कमाई पर अधिक नियंत्रण प्राप्त कर पाती हैं?

ल्यारी में महिलाओं के साथ मेरी चर्चा महिलाओं के वैतनिक रोजगार और घरेलू हिंसा के अनुभवों के मध्य जटिल संबंध का खुलासा करती है। कई महिलाओं के लिए, पैसा कमाना उन्हें एक हिंसक विवाह से निकलने की क्षमता या कम से कम निकलने की कल्पना उपलब्ध कराता है। लेकिन वेतन कमाने वालों के लिए भी, विशेष रूप से यदि बच्चें शामिल हों, एक हिंसक शादी से निकलने में विवाह में बने रहने का सामाजिक दबाव एक शक्तिशाली बाधा बना रहता है।

कई महिलाओं ने वैतनिक कार्य और घरेलू जिम्मेदारियों के दुहरे भार को हिंसा के एक स्वरूप के रूप में वर्णित किया : वैतनिक कार्य कभी कभी पारिवारिक विवाह में बने रहने के बारे में कहा। हालांकि युवा महिलाओं ने हिंसा को अक्सर नापसंद किया। उन्होंने सुझाव दिया कि महिलाओं को या तो अपने पैदायशी घर लौट कर या अधिक विरले, एक स्वतंत्र घर बसा के, हिंसक विवाह से निकलना चाहिए। यद्यपि तलाक पर आज भी अच्छा नहीं माना जाता है और कई महिलाएं अभी भी हिंसक विवाहों के भीतर रहने का दबाब महसूस करती हैं, अधिक से अधिक महिलाएं निरूद्ध परिस्थितियों के अन्तर्गत प्रतिरोध की रणनीति तैयार करती प्रतीत होती है। निस्संदेह, स्वतन्त्र कमाई तक पहुंच महिलाओं को हिंसक विवाह छोड़ने में मदद करती है, चाहे वह इसकी गारण्टी न दे कि वे ऐसा कर पायेंगी।

कुल मिलाकर, मेरा शोध सुझाता है कि महिलाओं की आर्थिक संलग्नता सशक्तीकरण की गारण्टी नहीं देती है। जहां यह महिलाओं की सौदेबाजी की स्थिति को मजबूत कर सकती है, बाल रोजगार अपनी कीमत के साथ आता है। पाकिस्तान में बड़ी संख्या में महिलाएं श्रम बाजार में प्रवेश कर रही हैं, लेकिन वे ऐसा उस समय में कर रही हैं जब बेहतर वेतन वाले, सुरक्षित रोजगार के बहुत कम विकल्प उपलब्ध हैं। महिलाओं को वास्तव में सशक्त बनाने के लिए रोजगार को व्यापक संरचनात्मक परिवर्तनों के साथ उपलब्ध होना चाहिए : महिलाओं को बेहतर वेतन वाली और सुरक्षित नौकरियों की आवश्यकता है, घर और समुदाय के भीतर लैंगिक शक्ति सम्बन्धों को बदलना होगा ताकि घरेलू जिम्मेदारियां पुरूषों द्वारा साझा की जाएं और महिलाओं की बढ़ती गतिशीलता और स्वतन्त्रता को व्यापक रूप से स्वीकारा जाना चाहिए। ■

निदा किरमानी से पत्र व्यवहार हेतु पता
<nida.kirmani@lums.edu.pk>

> प्रवासियों में तलाक

कावेरी कुरैशी, लाहौर प्रबंधन विज्ञान विश्वविद्यालय पाकिस्तान

ब्रिटेन में एक पाकिस्तानी विवाह, दूल्हे का इंतजार करती दुल्हन!
कावेरी कुरैशी द्वारा फोटो

38 वर्षीय सुकैना पाकिस्तानी मूल की लंदन निवासी है। लंकाशायर में 18 वर्ष की उम्र में अपने चचेरे भाई से विवाहित, सुकैना के मिड–टवेन्टीस तक तीन बच्चे हो गये थे। लेकिन उसके तीसरे बच्चे के जन्म होने के पहले ही उसकी शादी अपूरणीय रूप से बिगड़ गई। उसके पति ने टैक्सी चालक के रूप में कार्य करना प्रारम्भ कर दिया था। कार्य के अनिश्चित घंटों और गतिशीलता की आजादी के परिणामस्वरूप, उसने अपनी एक श्वेत ब्रिटिश प्रेमिका के साथ विवाह पूर्व सम्बन्ध को पुनः प्रारम्भ किया, शराब का सेवन करने लगा और सुकैना के अनुसार वह नशीली दवाओं का सेवन करने लगा। छः महीने तक, सुकैना ने अपनी वैवाहिक परेशानियों के बारे में अपने माता–पिता को नहीं बताया क्योंकि ''मेरे परिवार के लिए अपने परिवार के किसी के साथ विवाह करना एक स्वप्न के समान था और उन्हें लगता था कि हम खुश हैं और हमारे तीन खूबसूरत बच्चे हैं और सब एकदम बढ़िया है। इसलिए मैंने सोचा कि मैं उनका दिल नहीं तोड़ सकती हूं। अपने माता पिता से मदद मांगने के बाद भी दो वर्ष पश्चात उसने लंकाशायर में स्थित

> >

अपनी ससुराल को छोड़ा और लंदन लौट गई एवं उसके दो वर्ष के अंतराल के बाद तलाक की अर्जी लगाई।

दक्षिण–एशियाई मूल वाले अन्य परिवारों की तरह, ब्रिटिश पाकिस्तानीयों को लगभग सर्वभौम विवाह और बहुत कम तलाक के साथ लंबे समय से परम्परागत परिवारों के रखवालों के रूप में देखा जाता रहा है। सुकैना जैसी कहानियां ''कड़े सामाजिक मूल्य'' जैसे प्रतिमानात्मक स्टिरियोटाइप्स से छिपी, लगभग अदृश्य ही रही हैं। बाहरी व्यक्ति अक्सर ब्रिटिश पाकिस्तानी परिवारों को इस तरह से वर्णित करते हैं। 2007 में, बिरमिंगहम में एक पाकिस्तानी परिवार के साथ दो दिन बिताने के बाद, तत्कालीन रूढ़िवादी नेता डेविड केमरोन ने ब्रिटिश एशियाई परिवार की ''अविश्वसनीय रूप से मजबूत और संसक्त'' के रूप में प्रशंसा की ओर कहा, ''मैंने अपने आप को यह सोचते हुए पाया कि मुख्य धाराई ब्रिटेन को ब्रिटिश एशियाई जीवन पद्धति के साथ अधिक संघटित होने की आवश्यकता है न कि उन्हें।''

अल्पसंख्य समुदायों के चौथे राष्ट्रीय सर्वेक्षण, जो 1990 के मध्य में कराया गया था, के आंकड़ों को काम में लेते हुए मात्रात्मक समाजशास्त्री रिचर्ड बैरथौड़ ने ब्रिटिश दक्षिण एशियाई विवाहित व्यक्तियों में विलग होने एवं तलाक की दर को 4% पाया जो कि श्वेत ब्रिटिश व्यस्कों की दर (9%) से आधे से भी कम और अश्वेत कैरिबियाई व्यस्कों की दर (18%) की एक–चौथाई से कम थी। बेरथौड़ ने ब्रिटिश दक्षिण एशियाई लोगों को ''पुरातन'', ''अपने समुदायों के इतिहास और परम्पराओं के प्रति वफादार'' वैयक्तिकरण के रूझानों का प्रतिरोध का प्रतिरोध करते हुए के रूप में देखा। यद्यपि यू. के. के 2010–13 के त्रैमासिक श्रमशक्ति सर्वेक्षण के आंकड़े दर्शाते हैं कि आज ब्रिटिश पाकिस्तानी मुस्लिमों और भारतीय सिखों का लगभग 10% विलग या तलाकशुदा है। ऐसे ही ब्रिटेन में कभी भी विवाहित मिश्रित जातीय वयस्कों के 23%, श्वेत ब्रिटिश के 20%, और अश्वेत कैरिबियन के 27% की तुलना में 8% बंग्लादेशी मुस्लिम, 7% भारतीय मुस्लिम और 6% भारतीय हिन्दू विलग या तलाकशुदा हैं। यद्यपि ब्रिटेन में रह रहे अन्य व्यस्कों की तुलना में दक्षिण एशियाईयों की सामाजिक सर्वे में यह स्वीकार करने की संभावना कम ही है कि उनकी शादी टूट गयी है। पाकिस्तानी एवं बंग्लादेशी मुस्लिम और भारतीय सिखों में विवाह टूटने के मामलेउस स्तर तक बढ़ गये हैं जो 20 वर्ष पूर्व श्वेत आबादी में व्याप्त डर थी जब 1990 के दशक के मध्य ब्रिटेन के ''विलग व तलाक लेने वाले समाज'' के प्रति एंथोनी गिडिन्स की चिंता व्यापक चर्चा का विषय बनी थी।

2005–07 और 2012–14 के मध्य लंदन एवं प्रांतीय ब्रिटिश शहर पीटरबरों में कराये गये नृवंशविज्ञान सर्वेक्षण के अध्ययन के आधार पर मेरा तर्क है कि विवाह टूटने के बढ़ते मामले पाकिस्तानी प्रवासियों के पारिवरिक जीवन में बदलाव ला रहे हैं, जो पुरूष और उससे भी अधिक महिलाओं की बढ़ती संख्या जो पुनर्विवाह के प्रोत्साहन का प्रतिरोध करते हैं, मैं दिखाई देता है। मेरे द्वारा साक्षात्कार किये 52 तलाकशुदा में से 30 ने मेरे क्षेत्रीय–कार्य के अंत तक पुनर्विवाह विवाह कर लिया लेकिन 22 ने नहीं किया और अकेले रहने वाले 22 में से केवल 6 पुरूष थे। उदाहरण के लिए, सुकैना विवाह के टूटने के कई वर्षों तक अकेले रही और उसने जोर दिया कि वह ऐसे ही रहना चाहती है। विवाह टूटने के कई वर्षों तक सुकैना नैदानिक अवसाद में रही लेकिन अपने भाई–बहनों की मदद से वह प्रौण शिक्षा पाठ्यक्रम को पूरा करने, शिक्षण–सहायक के रूप में अर्हता प्राप्त करने और कार्य प्रारम्भ करने में सफल रही। इससे वह उन सामाजिक सुरक्षा लाभों को पहले अनुपूरक और फिर उन्हें छोड़ने में सफल रही। अब माता–पिता द्वारा ''प्रशिक्षित अच्छी बहू'' के रूप में न रह कर, सुकैना ने कई वर्षों तक माता–पिता की पुनर्विवाह की सलाह पर ध्यान नहीं दिया। उसने कहा, ''पहले मैं पुरूषों से नफरत करती थी, वाकई में नफरत, मैं उनकी सूरत भी नहीं देख सकती थी या उनकी गंध भी बर्दाश्त नहीं कर सकती थी।'' कुछ तलाकशुदा लोगों ने मुझे बताया कि उन्होंने अपने बच्चों को ''उचित'' दो अभिभावकों वाला परिवार प्रदान करने के लिए पुनर्विवाह किया लेकिन सुकैना के और उसके जैसे कई अन्य मामलों में पहले से देखभाल जीर्ण परिवार में सौतेले पिता को लाना पुनर्विवाह के लिए शक्तिशाली रूकावट था।

यदि कुछ महिलाएं और पुरूष तलाक के बाद अब विवाह के बाहर रहने का विकल्प चुनते हैं, जो पुनर्विवाह करते हैं उनमें अपने जीवन साथी स्वयं चुनने की संभावना अधिक होती है। मेरे उत्तरदाताओं द्वारा वर्णित 67 प्राथमिक विवाहों में से 58 को पारंपरिक योजित के रूप में वर्णित किया गया और केवल 9 ही प्रेम विवाह थे। इसकी तुलना में मुझे बताए गये 49 पुनर्विवाह में से सिर्फ 20 पारंपरिक रूप से योजित थे, 9 योजित प्रेम विवाह थे जहाँ जीवन साथी युगल द्वारा तय किये गये थे लेकिन दुनिया के सामने योजित विवाह के रूप में दिखाये गये थे और 20 पूर्ण रूप से स्वयं द्वारा योजित प्रेम विवाह थे। अतः पुनर्विवाह के अंतर्गत विवाह के पहले काफी प्रेमालाप एवं अंतरंगता सम्मिलित होने की संभावना अधिक थी। स्वयं द्वारा चयन किये गये पुनर्विवाह भी अंततः तलाकशुदा के विस्तृत परिवारों द्वारा भी समर्थित किये गये।

सुकैना के अनुभवों ने एक और प्रवृत्ति को स्पष्ट किया : पुनर्विवाह अक्सर प्रजातीय, नस्लीय, जातीय और धार्मिक लाइन को पार करते हैं। लगभग एक दशक तक बिना साथी के रहने के पश्चात् सुकैना को भारतीय मूल के सिख तलाकशुदा सुखविंदर से प्रेम हो गया। सुखविंदर ने धर्म परिवर्तन को स्वीकार किया और युगल ने सुकैना की एक बहन और तीन पुरूष गवाहों के समक्ष एक छोटे इस्लामी समारोह में विवाह कर लिया। सहमतिजन्य सम्बन्धों की दिशा में यह परिवर्तन उदार राजनीति के लिए अंतर्निहित रूप से आकर्षित लगता है परन्तु सुकैना गहरे असंतोष से ग्रसित थी : सुखविंदर ने इस्लाम धर्म परिवर्तन के प्रति गंभीर होने के कोई संकेत नहीं दिखाये थे और न ही उसने सिख के रूप में पहचान देने वाली पगड़ी को हटाया था। परिणामस्वरूप, सुकैना में अपने दूसरे विवाह के बारे में अपने माता पिता को बताने का साहस नहीं था और वह उसे ''अंत करने'' के बारे में विचार कर रही थी।

मैंने दूसरे विवाहों को अक्सर अस्थिर पाया। 30 पुनर्विवाहित साक्षात्कारदाताओं में से 9 ऐसे की दूसरी शादी भी टूट गयी थी या वे तीसरे विवाह की तरफ जा रहे थे और मेरे अध्ययन में सम्मिलित कई अन्य दूसरे और तीसरे विवाह भी संकट ग्रस्त थे। यह हमें स्मरण कराता है कि तलाक के समाजशास्त्र ने पुनः साथी बनाने पर कितना कम प्रकाश डाला है। हमें न सिर्फ तलाक पर अनुसंधान की आवश्यकता है बल्कि अनौपचारिक सम्बन्धों एवं उत्तरोत्तर पुनर्विवाह के साथ साथ प्रवास, पारगमनवाद और डायस्पोश जहां ''पीछे छूट जने वाली'' संस्कृति को स्थैतिक के रूप में देखने की प्रवृत्ति है, के संदर्भ में विवाह प्रतिमान कैसे परिवर्तित होते हैं पर भी अनुसंधान की आवश्यकता है। जैसा कि मेरा शोध सुझाव देता है, ऐसा न कभी अतीत में हुआ है न ही वर्तमान में। ■

कावेरी कुरैशी से पत्र व्यवहार हेतु पता <kaveri.qureshi@lums.edu.pk>

> इस्लामोफोबिया एवं ब्रिटिश सुरक्षा एजेण्डा

तानिया सईद, लाहौर प्रबंधन विज्ञान विश्वविद्यालय, पाकिस्तान

अर्बु द्वारा चित्रण

ब्रिटेन के शैक्षिक संस्थानों को तेजी से राज्य के सुरक्षा एजेण्डे में खींचा जा रहा है। आतंकवाद विरोधी एवं सुरक्षा अधिनियम (CTSA) 2015 के तहत, शैक्षिक संस्थानों द्वारा उग्रवादी बनने के 'खतरे में' माने जाने वाले छात्रों की सूचना देना वैधानिक कर्त्तव्य है। इस 'कटटरपंथ' के संकेत या लक्षणों को निरूपण करना कठिन है : यह स्पष्ट है कि ''आघात योग्य'' छात्र के मुस्लिम होने की संभावना है। अधिक समस्याग्रस्त, अहिंसावादी, अतिवादी विचार भी किसी को संदिग्ध बना सकती है यदि इन विचारों को ''ब्रिटिश मूल्यों'' के विपरीत माना गया हो। इस का परिणाम है कि इन विचारों को चुनौती दिये बिना या बहस किये बिना ही विश्वविद्यालयों में चुप करा देने की संभावना अधिक है।

आतंकवाद विरोधी अधिनियम 2015 को 7 जुलाई 2005 के लंदन बमबारी के एक दशक बाद लाया गया, हालांकि अन्य आतंकवादी विरोधी नीतियों ने भी शैक्षणिक संस्थानों पर ध्यान केन्द्रित किया है। मुस्लिम छात्र ''संदिग्ध'' समझे जाने से भलीभांति परिचित हैं। ब्रिटिश सरकार की एक रिपोर्ट प्रिवेंट स्ट्रेटजी (2011) के अनुसार सुरक्षाकर्मी पहले से ही ''खतरे पर'' छात्रों की निगरानी करने के लिए शैक्षणिक संस्थानों के साथ काम कर रहे थे। लंदन विश्वविद्यालय के पूर्व छात्र उमर फारूक अब्दुल मुतुल्लाब ने अमरीका जाने वाले एक विमान को निशाना बनाने का प्रयास किया; एक और पूर्व छात्र रशोनारा चौधरी ने इराक के लोगों का बदला लेने के लिए एक ब्रिटिश राजनेता को चाकू मार दिया; ISIS में शामिल होने के लिए भागने वाले युवा छात्रों जैसे मुट्ठीभर मामलों ने शिक्षित मुस्लिम पहचान के लिए अधिक संशय को उकसाया है। लेकिन नया कानून विश्वविद्यालय निगरानी को एक वैधानिक दायित्व बनाता है। मुस्लिम छात्रों के साथ बातचीत करने के बजाय, नीति उन्हें पृथक करती है और विडम्बना से बढ़ती असुरक्षा का माहौल तैयार होता है। जहां मुस्लिम पुरूष को एक अधिक तात्कालिक खतरा माना जाता है, मुस्लिम महिला को सामान्य दृष्टि से नकाब के पीछे छिपी एक पीड़िता या अतिवादी के बीच झूलते हुए देखा जाता है।

2010 और 2012 के मध्य किये गये एक अध्ययन ने 40 युवा मुस्लिम महिला छात्राओं और ब्रिटिश विश्वविद्यालयों की पूर्व छात्राओं के जीवन वृत्तान्तों का अन्वेषण किया। इसमें उन्होंने इस्लामोफोबिया और ब्रिटिश राज्य के सुरक्षा एजेण्डा के उनके अनुभवों की जांच की। ऐसे समय, जब ब्रिटिश मुस्लिम पाकिस्तानी पहचान अत्यधिक संशयी मानी जाती थी, में किये गये अध्ययन में पाकिस्तानी विरासत वाले ब्रिटिश छात्र और इंग्लैंड में अध्ययनरत गैर–ब्रिटिश पाकिस्तानी छात्रों दोनों को सम्मिलित किया गया। अध्ययन के अन्दर मुस्लिम महिलाएं जिनके लिबास विभिन्न प्रकार की 'धार्मिकता की डिग्री' निकाब से लेकर हिजाब के साथ जिलबाब, पारंपरिक पाकिस्तानी सलवार कमीज, बिना किसी शारीरिक पहचान के मुस्लिम को व्यक्त करते थे सम्मिलित की गई। अध्ययन ने इस्लामिक छात्र संघ (ISOCS), जिसनी कैम्पस पर कट्टरपंथीकरण का विरोध करने में असफल रहने पर आलोचना की गई, के अनुभवों पर ध्यान केन्द्रित किया। कल्याण अधिकारी, छात्र संघों के प्रतिनिधि और इस्लामिक छात्र संघ के मुखिया का भी साक्षात्कार लिया गया।

महिलाओं के अनुभव उनके शारीरिक ..... के अनुसार भिन्न थे। यह कोई आश्चर्य नहीं था कि निकाब ने ध्यान आकृष्ट किया; युवा महिलाओं ने उन पर चिल्लाये जाने के या उग्रवादी या 'ओसामा बिन लादेन की पत्नी' कहलाए जाने का वर्णन किया। इस वर्णन में नकाब अजनबी धर्म एवं पहचान का शारीरिक चिन्हक बन जाता है।

> >

उत्तरदाताओं ने नस्लीय कलंक का निशाना बनने का वर्णन किया जिससे पीड़ित से अधिक वक्ता के बारे में पता चला–विशेष रूप से उन मामलों में जहां ''समलैंगिक'' शब्द निकाब–या हिजाब पहनने वाले मुस्लिम की तरफ एक अपशब्द के रूप में इस्तेमाल किया गया था। अपशब्द के रूप में, यह शब्द इस्लामोफोब के विषय पूर्वाग्रह को दर्शाता है जहां मुस्लिम महिला अधिक असामान्य हो जाती है क्योंकि वह अकेलापन/एकाकीपन का निर्वाह करती है। इसके विपरीत, मुस्लिम महिलाएं जो स्पष्ट धार्मिक पहचान के कोई चिन्ह नहीं धारण करती थी, को लगा कि वे गैर–मुस्लिम नजर में पर्याप्त मुस्लिम नहीं थी और उन्हें महसूस हुआ कि उन्हें अपनी आस्था की सफाई देनी पड़ी। हालांकि, पाकिस्तानी वेशभूषा ने सांस्कृतिक रूप से दलित, अशिक्षित पाकिस्तानी महिला जो ऑनर हत्याओं एवं जबर्दस्ती के विवाह का समर्थन करने वाली आदिम संस्कृति का शिकार है, स्टिरियोटाइप उत्पन्न किया।

इन अनुभवों के साथ छात्रों ने कैम्पस पर और कैम्पस के बाहर संघर्ष किया लेकिन ISOCS के सदस्यों को विशेष रूप से चिन्हित किया गया। ISOCS के पुरूष और महिला सदस्यों को अक्सर न सिर्फ विश्वविद्यालय प्रशासन, जो छात्र कार्यक्रमों एवं वक्ताओं के प्रति शंकित थे, बल्कि स्व–घोषित ''नरम'' मुस्लिमों से भी अपना बचाव करना पड़ा। उत्तरदाताओं ने वर्णन किया कि संसर्ग के कारण अतिवादी ठहराये जाने के डर से 'नरम' मुस्लिमों ने अक्सर ISOC कार्यक्रमों से दूरी बनाई जबकि ISOC के सदस्यों ने आतंकवादी कहलाए जाने का वर्णन किया और यह संदेह व्यक्त किया कि उनकी खुफिया एजेंसियों द्वारा निगरानी की गई या जासूसों ने वहां घुसपैठ की थी। कई उत्तरदाताओं ने यह भी बताया कि अतिवादी लेवल किये जाने के डर ने उन्हें स्व–सेंसरशिप के लिए प्रेरित किया, चूंकि कुछ छात्रों ने उग्रवादी समझे जाने के डर से राजनैतिक अभियानों को टाला।

पाकिस्तानी–मुस्लिम गठजोड़ ने एक अन्य प्रकार की बेध्यता का खुलासा किया जहां पाकिस्तानी मुस्लिम उस समय 'अति–छानबीन' के शिकार हुए जब पाकिस्तानी जमीन पर लड़े जा रहे ''आतंक पर युद्ध'' के कारण पाकिस्तानी पहचान अधिक संशय से देखी जा रही थी। कुछ छात्रों ने पाकिस्तान से जुड़े राजनैतिक मामलों से दूरी बनाई लेकिन अरब क्रांति या फिलीस्तीन से सम्बन्धित मामलों में अपना जुड़ाव रखा; अन्य में विशेष तौर पर 7 जुलाई 2005 के बाद, अपनी राष्ट्रीयता के बारे में झूठ बोलने का विवरण दिया।

इन निष्कर्षों से पता चलता है कि विभिन्न मुस्लिम समुदाय सुरक्षा संलाप को भिन्न प्रकार से अनुभव करते हैं जो न केवल उनकी धार्मिकता पर बल्कि जातीय या राष्ट्रीय पहचान पर भी आधारित हो सकता है। अमरीकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प द्वारा 2017 में कुछ मुस्लिम देशों पर मुस्लिम प्रतिबंध जैसे सीरिया और आसपास के क्षेत्र पर वैश्विक आतंकवाद विरोधी एजेंडे का फोकस, एक विकसित सामाजिक–राजनीतिक संदर्भ में विभिन्न मुस्लिम पहचानों द्वारा विभिन्न प्रतिक्रियाओं का सामना करने का प्रमाण देता हैं।

यदि धार्मिकता के स्तर ने दैनिक जीवन में सामना कर रहे संदेह और भेदभाव के स्तरों को आकारित किया है, अध्ययन ने यह भी दर्शाया कि युवा छात्रों ने स्टिरियोटाइपस का प्रतिकार करने के लिए सक्रिय रूप से जागरूकता बढ़ाने का प्रयास किया। ''इस्लाम जागरूकता सप्ताह'' द्वारा या इस्लाम के प्रति पूर्व–कल्पित विचारों को चुनौती देने के द्वारा, मुस्लिम छात्रों के समूह ने नजरिया बदलने का प्रयास किया। जहां कुछ छात्रों ने ''सामान्य'' या ''निर्दोषता'' पर जोर देने के बोझ को खारिज किया, हम मुस्लिम और गैर–मुस्लिम छात्रों द्वारा सुरक्षा एजेंडा के विस्तार का प्रतिरोध करने हेतु किये प्रयासों को कम नहीं आँक सकते हैं।

कई विश्वविद्यालय छात्रों के प्रति ''देखरेख के कर्तव्य'' जैसे ''भाषण की स्वतन्त्रता'' सुनिश्चित करने का कर्त्तव्य और कट्टरपंथ के खतरे में समझे जाने वाले किसी भी छात्र को सूचित करने का वैधानिक कर्त्तव्य, से परिचित थे। हालांकि यह ''देखरेख का कर्त्तव्य'' कई बार जोखिम/संकट में रहा है जैसा कि स्टैफोर्डशायर विश्वविद्यालय के एक छात्र मोहम्मद उमर फारूक के मामले में हुआ जिसे आतंकवाद अध्ययन पर एक पाठ्यपुस्तक पढ़ने के कारण विश्वविद्यालय कर्मियों ने अधिकारियों को सूचित किया; रिजवान सबीर जिसे शोध हेतु अलकायदा के मैनुअल (एक दस्तावेज जो पुस्तक भंडार में पहले से ही उपलब्ध था) को डाउनलोड करने के लिए रिपोर्ट किया गया; और स्कूली छात्रों के कई मामलों में अधिकारियों को गलत तरीके से रिपोर्ट दी गई। 2015 के इंग्लैंड के उच्च शिक्षा निधि परिषद द्वारा CTSA 2015 के तहत विश्वविद्यालयों के ''वैधानिक कर्त्तव्य'' को लागू करने की रणनीति को अपनाने से विश्वविद्यालय राज्य के सुरक्षा एजेंडे में खिंचते रहेंगे। इस अध्ययन के लिए साक्षात्कार किये गये मुस्लिम छात्रों ने सुरक्षा कर्मियों से बात करने की इच्छा व्यक्त की, बशर्ते वे हमेशा संदेह में नहीं रहें। वे यह मानते हैं कि यद्यपि अधिकांश युवा ब्रिटिश मुस्लिम ISIS जैसे समूहों को अस्वीकार करते हैं, फिर भी समस्या से निपटना महत्व पूर्ण है। वास्तव में, अधिकांश उत्तरदाता इस चुनौती को विश्वविद्यालय के अन्दर लेने में इच्छुक थे। हालांकि, सभी मुस्लिम छात्रों को संदिग्ध करार करने से, असुरक्षा की संस्कृति, जिसमें विवादास्पद विचारों को बिना चुनौती के नकारा जाता है, को समर्थन दे कर, विश्वविद्यालय एक ऐसा वातावरण उत्पन्न करती है जहां मुस्लिम छात्र इस्लामोफोबिया और भेदभाव से पीड़ित होते हैं। इस तरह विश्वविद्यालय मुस्लिम छात्रों के प्रति ''देखभाल के कर्त्तव्य'' में विफल होने की जोखिम में रहते हैं और राज्य के सुरक्षा तंत्र में एक और चक्रदन्त बनने के खतरे में रहते हैं। ■

तानिया सईद से पत्र व्यवहार हेतु पता <tania.saeed@lums.edu.pk>

> बुनियादी ढाँचे की राजनीति

अमीन जफर, प्रबंधन विज्ञान लाहौर विश्वविद्यालय, पाकिस्तान

ओजपक कचरा ट्रक द्वारा कचरा संग्रहण के पहले पुनः चक्रित करने योग्य कचरे को ढूँढने के लिए भागते कचरा बीनने वाले। खुर्रम सिद्दीकी द्वारा फोटो

बीसवीं सदी के आखिरी दशक के बाद से पाकिस्तान की अर्थव्यवस्था निजीकरण और अविनियमन से परिवर्तित होती रही है–एक नव–उदारवादी आर्थिक व्यवस्था जो विभिन्न राजनीतिक दलों और एक सैन्य तानाशाही के दौरान सतत रही है। फिर भी राजनीतिक अभिजात वर्ग के मध्य एक व्यापक सहमति के बावजूद वर्तमान पाकिस्तान मुस्लिम लीग–नवाज (PML-N) सरकार आधारभूत संरचनाओं पर खास ध्यान केन्द्र कर अन्य शासनकालों से अलग है। 1990 के दशक से ..... सरकारों ने अपनी आर्थिक नीति और राजनीतिक रणनीति आधारभूत संरचना को ''विकसित करने'' के चारों ओर बनायी है–सबसे हाल ही में चीन पाकिस्तान आर्थिक कॉरीडोर (CPEC) पर एक बल देने का शामिल करते हुये सरकार द्वारा ''गेम चेंजर'' के रूप में दलील दी गयी कि पाकिस्तान की आर्थिक तकदीक का पूर्ण रूप से उद्धार कर देगा।

पाकिस्तान की सरकार दावा करती है कि ये नयी सड़क, रेल और फर्जा परियोजनायें–मुख्य रूप से .चीनी सरकार के ऋण से वित्तपोषित और प्रायः चीनी कंपनियों के द्वारा निर्मित–पाकिस्तानीयों के लिये नयी नौकरियां और आर्थिक अवसर पैदा करते हुये विदेशी और स्थायी निजी निवेश लेकर आयेंगी।

परंतु 1990 के दशक में पिछली PML-N सरकार के दौरान निर्मित लाहौर–इस्लामाबाद मोटरवे के सीमित उपयोग सहित पिछले उदाहरणों के कमजोर साक्ष्यों के बावजूद–यह आर्थिक नीति इस धारणा पर आधारित है कि बड़े पैमाने पर ढांचागत खर्च अकेले ही आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा देता है।

दुनियाभर से बढ़ते साक्ष्य दर्शाते हैं कि बड़ी आधारभूत संरचना परियोजनायें प्राथमिक रूप से विदेशी निवेशकों और बड़े निगमों को लाभ देती हैं। चरमराती सार्वजनिक सेवाओं वाले एक देश में, जहां की शिक्षा और स्वास्थ्य व्यवस्थायें विश्व की सबसे खराब व्यवस्थाओं में गिनी जाती हैं, इस तरह की असमान खर्च प्राथमिकतायें नागरिकों की वास्तविक आवश्यकताओं को नजरअंदाज करती हैं। यहां तक कि बुनियादी ढांचें के संदर्भ में भी, CPEC जैसी परियोजनायें बड़े निगमों की ढांचागत आवश्यकताओं पर ध्यान केंद्रित करती है, तथाकथित असंगठित क्षेत्र को नजरअंदाज और यहां तक कि नुकसान पहुंचाते हुये जहां पाकिस्तान के अधिकतर गरीब काम करते हैं और इस तरह पाकिस्तान की पहले से ही विचारणीय आर्थिक असमानता को और बदतर कर देती है।

उदाहरण के लिये, लाहौर की ठोस कचरा प्रबंधन योजना को ले लो। 2010 में, पंजाब सरकार ने एक सार्वजनिक कंपनी के रूप में लाहौर कचरा प्रबंधन कंपनी (LWMC) की स्थापना करते हुये लाहौर के कचरे के संग्रहण, परिवहन और निपटाने के काम का निजिकरण कर दिया। इस कंपनी ने बाद में कार्यों को दो तुर्की बहुराष्ट्रीय कंपनियों Ozpak और ilbayrak को, LWMC के कचरा क्षेत्र में जमा कराये गये प्रत्येक एक टन कचरे के लिये करीब 20 अमरीकी डॉलर भुगतान करते हुये आउटसोर्स कर दिया। नयी सड़कों के चल रहे निर्माण और पुरानी का विस्तार और पुर्नरचना ने ..... और ..... के कार्यों में बहुत फायदा किया क्योंकि पुनर्निर्धारित सड़क नेटवर्क उनके कचरा ट्रकों के बेड़े और अन्य मशीनरी को कुशलता से कार्य करने देता है।

> >

कचरा बीनने वालों की बस्ती जहाँ वे शहर से इकट्ठा कचरे की छँटनी करते है। खुर्रम सिद्दीकी द्वारा फोटो

..... के संचालन केंद्रों में से एक लाहौर रिंग रोड ..... एक नवनिर्मित छः लेन राजमार्ग के पास स्थित है। कई इलाकों से कचरा इकट्ठा किया जाता है और ..... के केंद्र तक कचरा संग्रहक ट्रकों के एक बेडे अधिकतर कचरा संग्रहण और संकुचित करने की तकनीक से युक्त बड़े आकार के आयातित कचरा ट्रक द्वारा ले जाया जाता है। (संकरी गलियों के लिये, कंपनी कुछ छोटे, स्थानीय रूप से संकलित, कर बाद में लगायी गयी विशिष्ट तकनीक से युक्त पिक–अप वैन का इस्तेमाल करती है।) एक बार कचरा ..... के केंद्र पर आ जाता है, तब मेकेनिकल लोडर इसे बड़े डंपस्टर ट्रकों पर डालकर इसे .....–स्वामित्व के कचरा क्षेत्र लाखोदर तक पहुंचा देते हैं जो भी रिंग रोड पर सुविधापूर्ण रूप से स्थित है। साफ तौर पर तब, LRR कार्य संचालन का केंद्रीय भाग है जो कि Ozpak के लिये ईंधन, समय और श्रमशक्ति में भारी बचत करता है।

..... का तकनीकी रूप से परिष्कृत संचालन ''असंगठित'' कचरा इकट्ठा करने वालों और कूड़ा उठाने वालों से बिल्कुल विपरीत है जो शहर भर से कचरा और पुर्नचक्रण योग्य वस्तुऐं/ रिसाइक्लेबलस इकट्ठा करते हैं और इसे पैदल, गधा–गाड़ीयों, साइकिलों और मोटरबाइकों पर ले जाते हैं। उनमें से कुछ लोग एक छोटे मासिक शुल्क के लिये कचरा डोर–टू–डोर इकट्ठा करते हैं जबकि अन्य सड़क के किनारे और डम्पस्टरस में कचरें के ढेरों में रिसाइक्लेबल वस्तुओं की खोज करते हैं। महत्वपूर्ण रूप से, जब ..... कूड़ा उठाने वालों को अपने क्षेत्र में प्रवेश की इजाजत नहीं देता है; अधिकतर सरकार–संचालित कचरा केंद्र और कचरा क्षेत्र कूड़ा उठाने वालों के लिये खुले हैं जो कि कचरे से रिसाइक्लेबल वस्तुऐं–बोतलें, कागज, कार्डबोर्ड, प्लास्टिक और धातु–को छांटने और अलग करने का गंदा काम करते हैं। ये रिसाइक्लेबल वस्तुयें आंगे छोटे रिसाइक्लिंग व्यापारीयों को बेच दी जाती हैं जो छोटी औद्योगिक इकाइयों को बेचने के पहले उनको आगे और छांटते हैं जो इनको उपयोग योग्य सामान में बदल देती हैं।

फिर भी, हालांकि ये लोग पुर्नचक्रण उद्योग की रीढ़ की हड्डी हैं, सबसे अधिक असहनीय और प्रायः खतरनाक स्थितियों में अत्यधिक श्रम की आवश्यकता वाले कार्य करते हुये कूडा उठाने वाले लोग अर्थव्यवस्था के तले में स्थित होते हैं, और अत्यंत कम और अप्रत्याशित कमाई करते हुये और इस व्यवसाय से जुड़े होने के सामाजिक कलंक और भेदभाव से पीड़ित होते हैं। आश्चर्य की बात नहीं है कि इनमें से अधिकांश लाहौर के सामाजिक पदानुक्रम के निम्नतम समूहों के सदस्य हैं।

पहले से ही अनिश्चित जीवन के कष्टों को आगे बढ़ाते हुये, लाहौर के सड़क के बुनियादी ढांचें के बदलाव ने कूडा उठाने वालों की तुच्छ आय को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से चुनौती दी है। लाहौर रिंग रोड, उदाहरण के लिये, कूडा उठाने वालों पर अनेक तरीकों से प्रतिकूल प्रभाव डाला है। पहला, उनके प्रमुख परिवहन के तरीके–गधागाड़ी और साइकिलों–को ..... पर अनुमति नहीं है, जो कूडा उठाने वालों को अत्यधिक–संकुचित छोटी सड़कों से यात्रा करने के लिये मजबूर करती है। दूसरा, कूडा उठाने वालों को अक्सर LRR को पार करने की आवश्यकता होती है, जो उन्हें या तो लंबी दूरी तक यात्रा करने के लिये मजबूर करती है, क्योंकि क्रॉसिंग कई मीलों दूर स्थित होती है और या तेजी से आते हुये ट्रैफिक में गैर–निर्दिष्ट स्थानों से पैदल पार करने का जोखिम लेने के लिये मजबूर करती है। इस प्रकार, कूडा उठाने वालों के लिये नया राजमार्ग सुविधा प्रदान करने के बजाय एक बाधा और अतिरिक्त भार बन जाता है।

परोक्ष रूप से, LRR कचरा कंपनियों का फायदा भी पहुंचाता है जिनके हित अक्सर कूडा उठाने वालों के हितों के साथ टकराते हैं। कुछ आसपास में, घरों ने कूड़ा उठाने वालों को कचरा संग्रह करने के लिये भुगतान करना बंद कर दिया है क्योंकि कचरा कंपनियां अब कचरा उनकी गली से ही इकट्ठा कर लेती हैं। इसके अलावा, कचरा कंपनियों की संग्रहण पद्धतियां कूडा उठाने वालों के लिये कचरा छांटने के लिये समय को कम करके कचरा कम सुलभ बना देती है; कंपनियों कूड़ा उठाने वालों के रिसाइक्लिंग कार्य को एक बाधा मानती है जो उनके संचालन को धीमा कर देता है।

इस प्रकार लाहौर की सड़कों के ढांचागत विकास ने कचरा कंपनियों को प्रत्याभूत और बढ़ते मुनाफे कमाने में मदद की है जबकि कूडा उठाने वाले नयी आर्थिक चुनौतियों का सामना करते हैं। जब लाहौर जैसे बड़े और फैलते हुये शहर में कुशल कचरा प्रबंधन को कचरा ट्रकों और संबंद्ध तकनीक की जरूरत है, इस क्षेत्र का निजिकरण गरीबों और सीमांत नागरिकों की आजीविका के बारे में बिना सोचे और उनके दुखों को बढ़ाते हुये, आयोजित किया जा रहा है।

ठोस कचरा प्रबंधन कई उद्योगों में से सिर्फ एक है जहां नये सार्वजनिक बुनियादी ढांचे ने पाकिस्तान की असमानताओं को बदतर कर दिया है : आर्थिक रूप से हाशिये के समूहों की नियोजन और डिजाइन में कोई राय नहीं ली जाती है। फिर भी, यहां आशावादिता का कारण हैः कुछ कम आय वाले समुदायों ने बुनियादी ढांचे को नागरिकता के एक केंद्रीय स्तंभ में बदल दिया है। हमारा शोध उजागर करता है कि इस तरह के अनेक लामबंदीयों ने विरोध प्रदर्शनों और अन्य राजनीतिक रणनीतियों के इस्तेमाल से कम आय वाले क्षेत्रों में बेहतर बुनियादी ढांचों की सफलतापूर्वक मांग की है। लंबे समय के गठजोड़, जिसने पाकिस्तान के सार्वजनिक संसाधनों को बुनियादी ढांचागत परियोजनाओं के माध्यम से कॉर्पोरेट हितों की ओर प्रवाहित किया है, को इसलिये नागरिकों की ओर से नयी चुनौतियों का सामना करने की संभावना है। ■

अमीन जफर से पत्र व्यवहार हेतु पता <amen.jaffer@lums.edu.pk>

> जिगमन्ट बाउमन की नैतिक दृष्टि

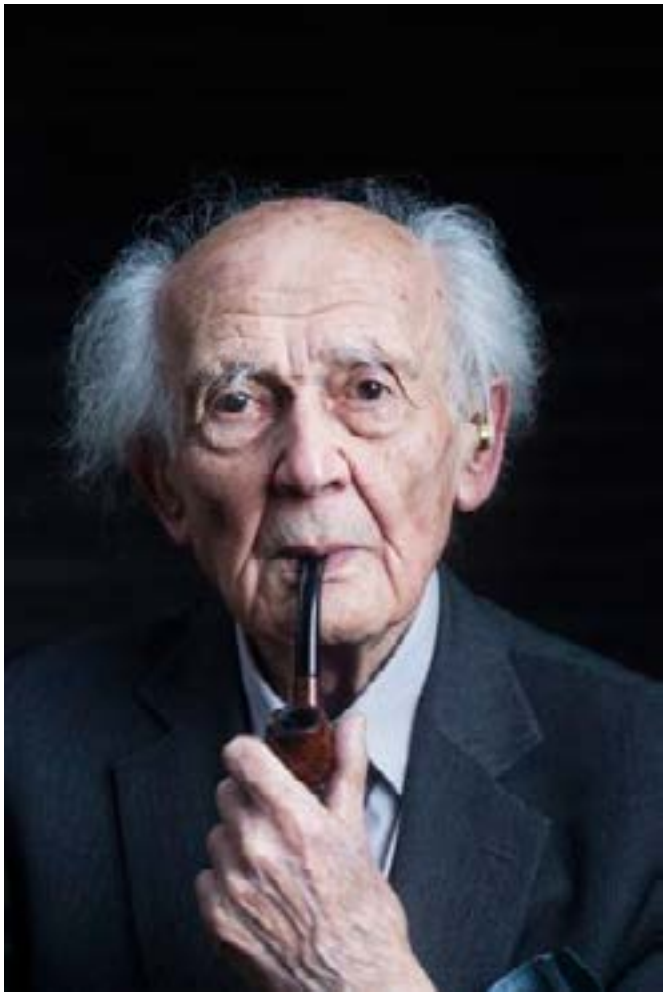

जिगमन्ट बाउमन

पोलिश समाजशास्त्री जिगमन्ट बाउमन का 91 साल की उम्र में निधन हो गया। यह समकालीन विश्व के एक अग्रणी समाजशास्त्री के रूप में उनके विलक्षण कैरियर का अंत ले आया। इतने विलक्षण व्यक्तित्व के जीवन एवं कार्यों की समीक्षा करना काफी कठिन है परन्तु यह पूर्णतः सत्य है जैसा कि कैथ टेस्टर ने कहा कि, ''जिगमन्ट बाउमन जैसी हस्ती शैक्षणिक जगत में फिर कभी नहीं पायी जायेगी। वो मध्य एवं पूर्वी यूरोपियन बुद्धिजीवियों की उस पीढ़ी में से एक थे जिन्होंने बीसवीं सदी की आपदाओं को जीया। उन्होंने वो अनुभव किया जिसके बारे में अन्य ने सिर्फ लिखा।''

बाउमन का जन्म 1925 में पोलैंड के पोजनेन के यहूदी परिवार में हुआ था। बाउमन एवं उनके परिवार को 1939 में नाजी सेना के आक्रमण से बचने के लिये सोवियत यूनियन भागना पड़ा। चार वर्ष पश्चात वे सोवियत यूनियन में पोलिश सेना में भर्ती हो गये और फिर पूर्वी फ्रन्ट पर युद्ध लड़ा। हालाँकि वो जख्मी हो गये थे, वे 1945 में बर्लिन की तरफ से युद्ध में भाग लेने के लिये दुबारा लौटे।

पोस्ट–वार पोलैंड में बाउमन को तीव्र तरक्की मिली और वो आर्मी कैप्टन एवं एक राजनीतिक अफसर बन गये। इस स्तर पर ऐसा प्रतीत हो रहो था कि वो एक आदर्शवादी कम्यूनिस्ट थे। परन्तु उनका पार्टी में विश्वास 1950 के दशक के प्रारम्भ में तब डगमगा गया जब एक यहूदी विरोधी अभियान के दौरान उनको सेना से हटा दिया गया। उन्होंने तुरंत ही शैक्षणिक कैरियर के अपनाया और 1954 में वे वारसॉ विश्वविद्यालय में समाजविज्ञान के व्याख्याता बने। उन्होंने, समाजशास्त्र में सफल कैरियर बनाया। विषयों की व्यापक श्रृंखला पर लेख प्रकाशित किये। 1960 के मध्य तक, वे वारसॉ विश्वविद्यालय में जनरल सोशियोलॉजी में अध्यक्ष के पद पर आसीन हुए।

हालाँकि ऐसा प्रतीत होता है कि बाउमन को पहले से ही अधिकारियों द्वारा एक संशोधित मार्क्सवादी के रूप में देखा गया, विशेष रूप से तब जब उन्होंने राज्य समाजवादी समाजों के पक्षों के संबंध में संशयपूर्ण लेख प्रकाशित किये। इसमें एक लेख नियोजन की सीमाओं के विषय में भी था। उनका पद सुरक्षित नहीं था और 1968 में शैक्षणिक क्षेत्र में होने वाले एक अन्य यहूदी विरोधी अभियान में उन्हें व पांच अन्य वारसॉ विश्वविद्यालय के प्रोफेसरों को बर्खास्त कर दिया गया। बाद में उसी वर्ष बाउमन और उनके परिवार ने पोलैंड छोड़ दिया। उसके उपरान्त इसराइल, ऑस्ट्रेलिया एवं कनाडा के अस्थायी शैक्षणिक पदों पर कार्य करने बाद, वो अंततः ब्रिटेन में बस गये। 1971 से उनकी सेवानिवृत्ति तक वो लीड्स विश्वविद्यालय में समाजशास्त्र के प्रोफेसर रहे।

एक बार अपने आपको लीड्स में सुरक्षित स्थापित करने के बाद बाउमन ने बड़ी तीव्रता से अपने आप को ब्रिटिश समाजशास्त्र की एक प्रसिद्ध हस्ती के रूप में स्थापित किया। विभिन्न यूरोपियन

> >

भाषाओं की उनकी समझ एवं दार्शनिक और समाजशास्त्रीय सिद्धान्तों को समझने की क्षमता का अर्थ था कि वे कॉन्टीनेन्टल सिद्धान्त में रूचि का विस्फोट लाने के लिये पूरी तरह तैयार थे। 1980 के दशक में बाउमन को जिसे ''उत्तर–आधुनिकता'' कहा जाता था, के अन्वेषण का एक मुख्य व्यक्ति माना जाता था। हालांकि बाउमन को यह अहसास होने लग गया था, कि उस वक्त स्थापित, अराजनीतिक एवं यहां तक कि प्रतिक्रियावादी बौद्धिक फ्रेमवर्क में सीमित हो जाने का खतरा था।

इस अवसीमित क्षण में उभरते हुये सामाजिक व्यवस्था की तरफ आलोचनात्मक प्रवृत्ति को बनाये रखने के लिये, उन्होंने अपने आप को ''द्रव आधुनिक'' की अन्वेषी छवि के रूप में स्थापित किया। 2000 में 'द्रव आधुनिकता' से शुरूआत करते हुये, बाउमन ने बाजारीकरण एवं वैयक्तिकरण के प्रभावों का अन्वेषण किया। इन प्रभावों ने व्यापक नव–उदारवादी प्रोजेक्ट को चित्रित किया है। यह प्रभाव उन तकलीफों एवं नुकसान के प्रति हमेशा संवेदनशल रहे है, जिन्हें इन प्रक्रियाओं ने काफी लोगों पर अधिरोपित किया है। बाउमन के बाद की वृत्तियों का केन्द्र स्वयं आधुनिकता का चरित्र रहा है उनकी पुरूस्कृत पुस्तक जिसमें इस विश्लेषण को स्पष्ट किया है, वो है 'मॉरडेनिटी एंड होलोकोस्ट' (1989)। यह एक पुरस्कार प्राप्त कृति है, एक विलक्षण कार्य समाजशास्त्र के क्षेत्र में जिसे अमाल्फी पुरस्कार प्राप्त हुआ। यह पुस्तक केन्द्रित है, आधुनिक प्रोजेक्ट के अन्तर्गत पायी जाने वाली बुराई के लिये अत्यधिक क्षमता पर। जो कि आधुनिक समाजों में फैलायी गयी ''तार्किक'' संगठनात्मक क्षमता द्वारा आती है। उसके बाद से उनके सभी कार्य में अपरोक्ष नैतिकता देखी गयी।

1993 में 'पोस्टमार्डन इथिक्स' के प्रकाशन के बाद बाउमन नैतिकता के समाजशास्त्र के महत्व को उभारने में प्रभावकारी हुये। नैतिकता के परम्परागत समाजशास्त्रीय विवरणों के प्रति उनका गहन संदेहवाद, जो कि बीसवीं सदी के गहन भयावहता से प्रेरित था, कुछ का उन्होंने व्यक्तिगत रूप से अनुभव किया था ने उन्हें दार्शनिक एवं धर्मशास्त्रीय थेअलोजियन इमानुअल लेविनास के कार्यों के साथ बौद्धिक संलग्नता की प्रेरणा दी। इस प्रोजेक्ट ने बाउमन को जिसे हम नैतिक फिनोमिनोलॉजी कह सकते हैं को विकसित करने की प्रेरणा दी जिसमें नैतिक कार्य के स्त्रोतों को बुनियादी, मानवीय क्या होना चाहिये एवं समाजीकरण से पूर्व की प्रक्रिया के रूप में समझा गया।

बाउमन का नैतिकता पर कार्य काफी विवादास्पद रहा है। उसे अक्सर समाजशास्त्रियों की नजरों में चुनौतीपूर्ण देखा गया।

परन्तु बाउमन का संस्थाओं की विनाश होती हुयी शक्ति एवं मानव एजेन्ट की नैतिक क्षमता को सीमित एवं क्षीण करने की उनकी प्रवृत्ति का समाजशास्त्रीय चिंतन (दार्शनिक की अपेक्षा) विलक्षण भी है एवं अति आवश्यक भी है। उनके कार्य को समस्त समाजशास्त्रीयों द्वारा निरंतर पढ़ा जायेगा, जिन्हें उम्मीद है कि विषय सिर्फ प्रशासनिक विज्ञान से अधिक भी कुछ होगा। ■

पीटर मेकमिसलोद, मेनचेस्टर विश्वविद्यालय, यू. के.

> जिगमण्ट बाउमन, एक संशयी आदर्शवादी

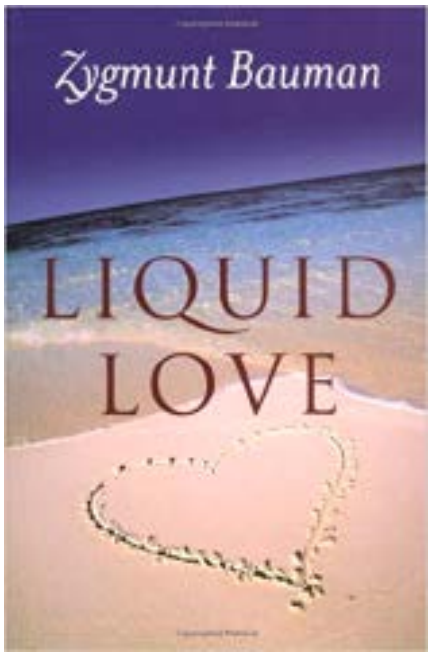

जिगमन्ट बाउमन की जीवन कथा को आसानी से बीसवीं सदी के पोलिश बुद्धिजीवी वर्ग के प्रभावी वर्णन में ढाला जा सकता है। युद्ध के भयावह अनुभव के पश्चात, साम्यवादी प्रोजेक्ट से मोहित हो, यह पीढ़ी असली मौजूदा समाजवाद को, उसके अपरिवर्तनशील, अधिनायक प्रकृति को पहचानने से पहले, सुधारने के प्रयासों में जुटी थी। बाद में, यही बुद्धिजीवी वर्ग 1989 में साम्यावादी शासन के उखाड़ने में सम्मिलित होगा। आखिरकार, उन्होंने लोगों को आजादी की मुश्किल उपहार को उपयोग में लेने की शिक्षा देने की भूमिका को अपनाकर, अपनी जीत का आनंद लिया।

खुशी की बात हैं कि जिग्मन्ट बाउमन इस कहानी या इसके पीछे स्थित प्रक्षेपवक्र में फिट नहीं होते हैं। यद्यपि वे इतिहास में डूबे थे, उन्होंने उसके मुख्य धारा का कभी भी अनुसरण नहीं किया। बदलते ऐतिहासिक संदर्भों के प्रति संवेदनशील होते हुए, वे अपनी आवाज को बनाये रखने में कामयाब थे।

उनके दृष्टिकोण को संशयी आदर्शवाद के रूप में परिभाषित किया जा सकता है : सामाजिक व्यवस्था का विश्लेषण करते हुए, बाउमन ने हमेशा आदर्शवाद के उन तत्वों को उजागर किया जो प्रभुत्व की संरचना को बनाये रखने में मदद करते हैं परन्तु उन्होंने सामाजिक परिवर्तन की वकालत और आलोचना को मजबूत करने के लिए आदर्शवाद का आह्वान भी किया। इस दृष्टिकोण की जड़े बाउमन के युद्ध के बाद के पौलेंड के अनुभवों में अंतर्निहित हैं और उनके बाद की कृतियों की तरफ बाहर फैलती हैं।

> स्तालिनवाद, एक विजातीय अनुभव

कम से कम पौलेंड में, स्तालिनवाद के प्रति युद्ध–पश्चात के बुद्धिजीवी वर्ग की प्रतिबद्धता का प्रभावी विवरण निस्संदेह सीजेला मिलोस की कृति कैप्टिव माइंड, जिसे बाद में साहित्य के लिए नोबल पुरस्कार मिला, में पाया जा सकता है। यह पुस्तक पौलेंड के शिक्षित वर्ग को धर्म से वंचित एवं विनाशवाद से तबाह के रूप में प्रस्तुत करती है। साम्यवाद ने विश्व की एक व्यापक व्याख्या को पेश कर और बुद्धिजीवियों को इसके पुनर्निर्माण की उम्मीद बँधा, इस शून्यता को भरा है। मार्क्सवाद सुसंस्कृत मनुष्यों के मस्तिष्क को लुभाने के लिए पर्याप्त जटिल था और इसने राजनैतिक शक्ति और लोगों दोनों को ही निकटता की भावना प्रदान की। मिलोस साम्यावाद और स्तालिनवादी कार्यप्रणाली के लिए प्रतिबद्धता को अर्ध–धार्मिक संदर्भ में चित्रित करते हैं। इस तरह वे युवा बुद्धिजीवियों की उत्सुकता और नयी व्यवस्था के वादे में उनके निवेश की व्याख्या करते हैं।

यह कहानी स्तालिनवाद के गहन रूप से संलग्न नवीन सांस्कृतिक अभिजात वर्ग के अनुभवों से आंशिक रूप से मेल खाती है लेकिन निश्चित रूप से इसे स्तालिनवाद की तरफ जाने वाले सभी मार्गों या उसको अनुभव करने वाले विभिन्न तरीकों को समझने के लिए काम में नहीं लिया जा सकता है। हमारे लिए, यह जूलियन हॉकफेल्ड, युवा जिगमन्ट बाउमन और वॉरसा विश्वविद्यालय के सभी मार्क्सवादी समाजशास्त्रीयों जिसमें जर्जी वाइतर, मारिया हिज्जोविच, वोड्जिमिरज वेस्लोवस्की और अलेक्जेंड्रा जसिंस्का–कनिया सम्मिलित है, के लिए उच्चतम महत्व वाली हस्ती के सम्बन्ध में विशिष्ट महत्व रखता है।

1950 के दशक के प्रारम्भ में, हॉकफेल्ड ने विश्वविद्यालय से समाजशास्त्र को एक बुर्जुआ विज्ञान, जिसे समाजवादी राज्य में सहन नहीं किया जाना चाहिए, को हटाने का आव्हान किया। हॉकफेल्ड आवश्यक रूप से मिलोस के विवरण से मेल नहीं खाता था : यह युद्ध–पूर्व वैज्ञानिक एवं पोलिश पॉलिटिकल पार्टी (PPS) में कार्यकर्त्ता था जिसे यह उम्मीद थी कि युद्ध के पश्चात् साम्यवादी शासन के अंतर्गत स्वतन्त्र समाजवादी दलों को चलाना संभव होगा। जब यह स्पष्ट हो गया कि मॉस्को से स्वतन्त्र रहने वाले सभी दलों को खत्म करने की स्तालिन की योजना थी, हॉकफेल्ड ने PPS को कम्यूनिस्ट पोलिश वर्कस पार्टी से जुड़ने के लिए प्रेरित किया जो अंततः 1948 में पोलिश यूनाइटेड वर्कस पार्टी की स्थापना के साथ सम्पन्न हुआ। स्तालिनवाद के प्रति हॉकफेल्ड की प्रतिबद्धता बौद्धिक ..... से नहीं अपितु राजनैतिक जगह में ..... की कम होती संभावना के समक्ष एक रणनीति चुनाव से उपजी थी। हालांकि उनकी उम्मीद कि वे अपने नये दल में अपनी राजनैतिक गति–विधियों को बरकरार रख पायेंगे बेकार साबित हुई। संसद के सदस्य होने के बावजूद वे अतिशीघ्र हाशिये पर आ गये, हालांकि अपनी शैक्षणिक गतिविधियों के हिस्से के रूप में उन्होंने व्यवस्था की आलोचना, विशेष रूप से 1956 में स्तालिनवाद के अंत के बाद, करना जारी रखा। हाकफेल्ड ने समाजवाद के तहत अलगाव की कार्यप्रणालियों के विश्लेषण का आह्वान किया। उन्होंने लोकतांत्रिक केन्द्रवार के सिद्धान्त के एक पूरक के रूप में संसद की भूमिका को ध्यान में रखा और राजनीति को समर्पित एकमात्र समाजवादी शैक्षणिक पत्रिका : सामाजिक–राजनैतिक अध्ययन की रचना की।

उनके गुरू के अनुभवों का वास्तविक समाजवाद के यथार्थ की बाउमन की समझ पर कुछ प्रभाव पड़ा। यद्यपि बाउमन स्पष्ट तौर पर पूंजीवाद एवं समाजवाद के मध्य शीत युद्ध संघर्ष में समाजवाद की तरफ थे, उनके लेख और प्रवृत्तियों ने कुछ संदेह व्यक्त किये। हॉकफेल्ड द्वारा रेखांकित किये गये मार्ग का अनुसरण करते बाउमन दो मोर्चों पर लड़ते हैं। समाजवादी समाजशास्त्री के रूप में वे पूंजीवादी की आलोचना करते हैं और समाजवाद की स्थिति से भी संतुष्ट होने से इंकार करते हैं। वे पुराने पूंजीवादी उपकरणों और आदतों वे दृढ़ाग्रह तक गिराये बिना इन कमियों की तरफ इशारा करते हैं।

>>

> समाजवाद की समाजवादी आलोचना

बाउमन द्वारा 1968 के पहले लिखी गई पुस्तकों में, पूंजीवाद और समाजवाद दोनों को औद्योगिक समाजों की तरह माना गया। इसका अर्थ है दोनों ही बड़े पैमाने पर उत्पादन कामगार वर्ग का विकास और बड़े नौकरशाही संगठनों से चित्रित होते हैं। अतः समाजवादी समाज को पूंजीवादी समाजों के ज्ञान को अलग रख कर अकेले नहीं समझा जा सकता है।

इस काल की बाउमन की कृतियां पश्चिमी समाजशास्त्र की वैज्ञानिक विरासत को पोलिश संस्कृति के साथ आलोचनात्मक रूप से आत्मसात करने के उनके प्रयासों से चित्रित हैं। ऐसा कर वे समाजवादी समाज का विश्लेषण करने के लिए एक सैद्धान्तिक फ्रेमवर्क तैयार करते हैं। निश्चित रूप से, यह समाज पूंजीवाद के स्वामित्वप के संयोजन, संस्तरण स्थापित करने के तरीकों और आधुनिकीकरण का विचार जो पूंजीवाद के तहत पूंजीपतियों के आधिपत्य में होता है, न कि समाजवादी केन्द्रीय योजनाकर्त्ता द्वारा निर्देशित हो, से भिन्न होता है। आइरन कर्टेन के दोनों तरफ, हालांकि हमें शक्ति के ह्रास, श्रम का अलगाव और वैयक्तिक जीवनकथा एवं सामूहिक जीवन के मध्य के जोड़ में कमी का अनुभव होता है। अतः अपने लोकप्रिय निबन्ध 1964 दैनिक जीवन में समाजशास्त्र (बाद में समाजशास्त्रीय रूप से सोचना का आधार) में बाउमन ने बहस की कि समाजशास्त्र को न सिर्फ निर्णयकर्त्ताओं और अभिजन अपितु सामान्य लोगों से बात कर आलोचनात्मक रूप से इन प्रक्रियाओं का अनुकरण करना चाहिए।

बाउमन के मार्ग के जोखिम चरित्र का शीघ्र ही खुलासा हुआ। 1965 में उन्होंने उन छात्रों के लिए आवाज उठाई जो कुरोन और मोदजेलवस्की द्वारा वास्तविक वर्तमान समाजवाद की संशोधित आलोचना द ओपन लेटर–टू द पार्टी जारी करने के सम्बन्ध में दमन का सामना कर रहे थे। बाउमन को एकल–दलीय शासन के लिए संभावित खतरे के शक से देखा गया। तीन वर्ष पश्चात, छात्र प्रतिरोधों के समक्ष जैसे सरकार ने वैधता की चाह रखी, विश्वविद्यालय से बाउमन की बर्खास्तगी, तथाकथित उपद्रवियों और प्रभावों के खिलाफ ''बहादुरी'' का मुख्य संकेत था। यहूदी वंशज के अन्य हजारों लोगों की तरह, बाउमन को पौलेंड छोड़ने पर मजबूर होना पड़ा और निष्कासन का जीवन जीना पड़ा।

> समाजशास्त्री की आदर्शवादी भूमिका

पौलेन्ड से बाउमन के निष्कासन ने उनकी चुप्पी का सर्वाधिक लम्बे काल के प्रारम्भ को चिन्हित किया (पौलेंड में घटित यहूदी–विरोधी घटनाओं पर सीधे एवं संस्कृति पर सामान्य पुस्तकों के लेखन के अलावा) उनकी प्रथम पुस्तक, समाजवाद : एक सक्रिय आदर्शवाद, नई परिस्थितियों में आलोचना के कार्य को निर्मित करने का प्रयास, ने बाउमन के आगे के अनुसंधान कार्यक्रम और विवेचनात्मक समाजशास्त्री के रूप में उनके परिप्रेक्ष्य को परिभाषित किया। लेसजेक कोलाकोवस्की जैसे पोलिश बुद्धिजीवी वर्ग के कई प्रतिनिधियों से भिन्न, बाउमन ने निरंकुशवाद–विरोध के पक्ष में समाजवाद के आदर्शवादी वादे को पूर्ण रूप से खारिज नहीं किया।

> समाजवाद : एक सक्रिय आदर्शवाद

'सोशियेलिस्म : द एक्टिव यूटोपिया' में बाउमन ने समसामयिक सामाजिक जीवन के संयोजन में संस्कृति की बढ़ती हुयी भूमिका के संबंध में जागरूकता का आव्हान किया। यह आव्हान सामाजिक व्यवस्था का निर्माण करने एवं संघर्ष से मुक्ति पाने में व्यक्ति की भूमिका की अहमियत को नोट करता है। इस जागरूकता के लिये सबसे पहले जरूरी है यह स्वीकार करना कि सभी सामाजिक प्रघटनाओं का निर्धारण उत्पादन की प्रक्रियाओं द्वारा निर्धारित नहीं होता है एवं दूसरा कि सभी प्रकार के प्रभुत्व एवं दमन–यहां पर बाउमन ने ज्होलोकोस्ट का जिक्र किया है–का उद्भव संपत्ति की असमान पहुंच से नहीं होता है। इसी समय, व्यक्ति पर ध्यान जो आधुनिक उपभोक्ता समाजों एवं सामाजिक बदलाव की वकालत आन्दोलनों का जो कभी–कभी हमें प्रभुत्व के दो महत्वपूर्ण प्रकार की तरफ देखने नहीं देते। उनमें से एक है–केन्द्र एवं परिधि के मध्य वैश्विक असममितता के साथ साथ राष्ट्र–राज्य में धनी एवं गरीब के मध्य वैश्विक असममितता।

बाउमन के बाद की गतिविधियां उस प्रोजेक्ट के निरंतरता के रूप में मानी जा सकती हैं जिसकी रूपरेखा 'सोशियेलिस्म : द एक्टिव यूटोपिया' में खींची गई। उनकी आधुनिकता और उत्तर आधुनिकता पर व्यापक रूप से पढ़ी एवं पहचानी स्वीकार की गयी पुस्तकें, (जो आधुनिकता एवं उत्तर आधुनिकता) आदर्शवाद की तरफ संशयवाद को प्रकट करती है। इस विश्वास कि पूर्वानुमेय एवं पारदर्शी समाज का निर्माण करना संभव है, ने ऐतिहासिक रूप से साबित कर दिया कि यह हिंसा का स्त्रोत हो सकता है जो कि राज्य के द्वारा संगठित हो, उनके विरूद्ध जो शुद्ध समाज के स्वप्न में सही नहीं बैठते। समकालीन उत्तर आधुनिक समाजों में, ऐसी खतरनाक दृष्टि को सामान्यतया त्याग दिया गया है परन्तु इसका यह अर्थ नहीं है कि हक समकालीन संस्कृति के केन्द्र में निहित आदर्शवादी विचारों के नकारात्मक परिणामों को नजरअंदाज कर सकते हैं। इसमें शामिल है वो विश्वास कि व्यक्तियों में यह सार्वभौमिक क्षमता होती है कि वो अपना निर्माण स्वतंत्र रूप से कर सके, उन असीम संभावनाओं में से चुनाव करते हुये जो बाजार प्रदान करता है। बाउमन ने इस आदर्शवादी वादे के लिये आकर्षण का वर्णन 'मारडेनिटी एंड एम्बीवेलेंस' में किया। परन्तु उन्होंने इसके खतरे की भी चर्चा की, जिसमें शामिल है निरंतर अपर्याप्तता की भावना, विषय की उन्मादपूर्ण गतिविधि जिसे प्रामाणिक परिचय की खोज है, विशेषज्ञता पर निर्भरता और अंत में अन्य व्यक्तियों का तत्वों में बदलने का खतरा जो बाजार प्रदान करता है।

उपभोगतावादी समाज की व्यवस्था में रहने के नकारात्मक परिणों के साथ, बाउमन ने निरंतर रूप से उस वर्ग की तरफ इशारा किया जिनको इससे बाहर रखा गया था। अधिकतर जिनको बाहर रखा गया था वो अदृश्य रहे, क्योंकि प्रभावकारी संस्थागत एवं प्रतीकात्मक उपकरणों ने उन्हें उपभोगतावादी अनुभव के क्षितिज से परे रखा। यह है गरीब, बेघर, अप्रवासी एवं शरणार्थी, जिन्हें बाउमन ने 'व्यर्थ जीवन' के रूप में उद्धृत किया है। उन्होंने तर्क दिया है, आलोचना की भूमिका है कि उनको दृष्टि में रखे, जो हमें याद दिलाते रहे कि अपवर्जित वो लोग है जिन्हें परामर्श, सुरक्षा एवं सम्मान की आवश्यकता है। वो बन्धन जो हमें उनके साथ जोड़ सकता है वो हमारे भौतिकवादी रूचियों पर आधारित नहीं हो सकता, न ही राजनीतिक लाभ पर जो अपवर्जित के साथ गठजोड़ से निकला हो। अपितु यह, नैतिक है, जो उन उद्दीपनों पर आधारित है जो सभी लोगों के समुदाय के अनुभव से संबंधित है।

अपने कार्य को इस आदर्शवादी आवेग के पोषक के रूप में परिभाषित करते हुये, बाउमन ने स्वयं को पूर्व यूरोपियन बुद्धिजीवी वर्ग के एक वृहद भाग के विरूद्ध खड़ा कर लिया। इससे इनकी भूमिका उन समाजों के एक गवाह एवं प्रशिक्षक के रूप में परिभाषित हुयी जो अपरिहार्य सामाजिक परिवर्तन के साथ चलने की कोशिश करते हैं। बाउमन ने दिखाया, हालांकि समाजशास्त्री सामाजिक जीवन की गतिकी को समझने का प्रयास करते हैं, उन को उनका भी साथ देना चाहिये जो समाज के हाशिये पर है एवं अपनी मानवता से वंचित है। ■

मासीज ग्डूला,
वारसाव विश्वविद्यालय, पोलैंड

> जिगमन्ट बाउमन को याद करते हुए

पीटर बेइहर्ज के साथ जिगमन्ट बाउमन।
सियान सुप्सकी द्वारा फोटो

जब कोई सम्राट विदा होता है, तब प्रायः मातम होता है और कुछ घूरना जैसा होता है। क्या यह अंतराल है? क्या जिगमन्ट बाउमन एक सम्राट थे? मैं ऐसा नहीं समझता। वो देर से ख्याति पाने वाले, एक असंतुष्ट प्रतिष्ठित व्यक्ति थे, जो दस सैकंड की पकड़ में निराश हो जाते थे। समझदारी, जैसा कि वो कहा करते थे, छोटे टुकड़ों में नहीं आती है। वो एक अव्यवस्थित शोहरत प्राप्त व्यक्ति थे। वो एक आंतरिक/बाह्य व्यक्ति थे।

बाउमन की अंग्रेजी में प्रथम पुस्तक, जो कि ब्रिटिश मजदूर आंदोलन पर आधारित थी, 1972 में आयी। उनके इस प्रयास के लिये एडवर्ड थोम्पसन ने उन्हें हाशिये पर कर दिया और वो वर्षों तक अदृश्य रहे या छोर पर रहे। वो अपने साथियों द्वारा उपेक्षित किये गये, फिर उन पर स्वयं की साहित्यिक चोरी के लिये आरोप लगा, उस समाजशास्त्र के लिये जिसे कथित रूप से उन्होंने ''बनाया था'', (जिसे प्रायः उचित प्राधिकृत डाटा बैंक के बजाय रूपक के द्वारा विवेचित किया जाता है), एवं उनके कम्यूनिस्ट अतीत पर प्रश्न चिन्ह लगाया गया; यकीनन वो किसी चीज के दोषी थे। उनके एपिगोन उनको, मंच के बाहर, अपनी रोशनी से दूर रखना चाहते थे।

तब भी बाउमन को विश्वभर में काफी लोगों के द्वारा सुना एवं पढ़ा गया। कई लोगों के लिये, कई जगहों पर यह परिचय व्यक्तिगत रूप से या कागज पर, बदलाव ले कर आया। संभवतः यही ईर्ष्या का स्त्रोत है। बाउमन के फुटनोट से परे हटकर मुद्दों पर आये। उन्होंने उन साथियों के लिये लिखना बंद कर दिया, जिनके

> >

उनके कार्य को क्रमिक ढंग से पढ़ने की संभावना थी। उसकी अपेक्षा उन्होंने खरीददारों एवं दैनिक जीवन के नियमित लोगों के लिये लिखा। उनका लेखन जीवन के आँकड़े, इक्कीसवीं सदी के अनुभव एवं उनके वारिस थे; उन्होंने हम सबको, सम्पूर्ण विश्व की समस्याओं को अपनी समस्याओं के समान लेने के लिये प्रेरित किया। बुद्धिजीवियों का कार्य प्रश्न करना है न कि उनके लिये उत्तर प्रदान करना जो वास्तव में इन समस्याओं से ग्रस्त है। चाहे यह समस्यायें गरीबी से या अनिवार्य गतिशीलता से संबंधित हो या फिर प्रेम, गप एवं वफादारी से संबंधित हो।

संभवतः मैं यहां एक कहानी सुना सकता हूं। अगर बॉमन एक कहानी सुनाने वाले नहीं थे, तब वो निश्चित रूप से बातूनी थे। पच्चीस वर्षों तक, मैंने बाउमन से लीड्स में प्रत्येक वर्ष मुलाकात की। आखिरी बार मैंने उन्हें 2015 में उनकी 90वीं वर्षगाँठ पर देखा था। मैं दक्षिण अफ्रीका के स्टेलेनबॉश में कार्य कर रहा था और वो अचानक से दक्षिण अफ्रीका में आ गये, इससे पहले कि हम केप टाउन के लिये निकलते, और फिर वहाँ से मेनचेस्टर, तद्रूपान्त पीनीस होते हुये ट्रेन से लीड्स जाते। (मैं उनकी आखिरी वर्षगाँठ में शामिल नहीं हो पाया, हम उस वक्त चेंगडू में थे जहाँ हमें बाउमन, जिगमन्ट एवं जानि के विषय में बात करने के लिये आमंत्रित किया था। चीनी भी बाउमन में गहन रूचि रखते है।)

चीन जाने से पहले, मैं 'रिव्यू इंटरनेश्नल डी फिलोसोफी' के लिए बॉमन पर एक लेख पर कार्य कर रहा था। एक आकर्षण जो उनके कार्य में हैं वो यह है कि तीस वर्षों के पश्चात् भी उनकी रूचियों को मैंने क्षीण नहीं पाया। जब मैंने स्टेलेनबॉश विश्वविद्यालय से 'लेजिस्लेटरस् एंड इंटरप्रेटरस् (1987) की एक प्रति उधार ली, तब मुझे यह देख कर काफी प्रसन्नता अनुभव हुई कि उसको प्रत्येक पृष्ठ पर काफी टिप्पणियाँ थीं। अगला लेख जो मैंने उसके प्रत्येक पुनः देखा वो 'लिक्युड मॉरडनिटी' (2000) था। अध्याय तृतीय ''टाइम/स्पेस'' है। फिर वह पृष्ठ खुला जहाँ बॉमन दक्षिण अफ्रीका की तरफ मुखित हुये वास्तव में सोमरसेट वेस्ट की तरफ, जिसके नजदीक ही मैं रहता था और कार्य करता था। उसका विषय? दक्षिण अफ्रीका में गेटेड़ आवास जो एक कलाकृति के रूप में प्रसिद्धि पा चुका था। अभी भी अधूरा है। यहां हम लोग स्वामी एवं दास है, पर्यटक एवं बेघर है, बाउमन की दृष्टि लीड्स से दक्षिण अफ्रीका तक विस्तारित है।

जिस प्रोजेक्ट के साथ वो सम्बन्धित थे, हास्यप्रद रूप से ''हैरिटेज पार्क'' के रूप में कहा गया, जो ल्वान्डल, काफी गर्व और सफलता की एक अश्वेत टाउनशिप से N2 फ्री वे पर एक ठोस एवं जाली वाली विभाजक के चारों ओर स्थापित अधूरा है। उन्होंने त्योरी चढ़ायी एवं शरारत से पूछा (हमेशा ही कुछ शरारत रहती थी), क्या मैंने पुस्तकालय से पुस्तक चुरायी थी? मैंने कहा नहीं, मैंने उधार ली है और यहां मैं आखिरी मौके पर काश मैं लान्सवुड गार्डन्स में उनका सानिध्य प्राप्त कर पाता। सोमरेस्ट वेस्ट से काफी दूर एवं तब भी, हो सकता है, नहीं भी, आधुनिकता अपने काले पक्ष को लेकर यात्रा कर रही है।

यह दूसरों की तरह मेरी भी खुशकिस्मती थी कि मैं बॉमन का अनुवादक था। जैसा कि उन्होंने कहा मेरा कार्य उनके कार्य के अस्त व्यस्तता को व्यवस्थित करना था। वो एक जबर्दस्त लेखक थे, जिन्होंने 58 या इससे कुछ अधिक पुस्तकें अंग्रेजी में लिखी। उनके समय के चिन्हों के साथ, रोजमर्या की समस्याओं, जिन्हें वे ''द्रवित आधुनिकता'' का नाम देते हैं, के साथ संलग्नता की एक शानदार परम्परा है।

किसी भी नवागंतुक को मेरा यह सुझाव है कि बाउमन के लेखन में से कोई भी एक धागा या प्रसंग ले ले एवं उसे सुलझाने का प्रयास करे। संभवतः सिमल के समान, वो एक समाजशास्त्रीय रूप से प्रभावित करने वाले टुकड़ों में जीवन को विश्लेषित करने वाले व्यक्तित्व थे। परन्तु वो हमेशा मार्क्स का अनुसरण करते थे, ताकि उनकी रूचि संस्कृति एवं उससे संबंधों उत्पादन और वितरण के असममित संबंधों के मध्य स्थित के रूप में वर्णित हो और फिर ग्राम्शी की तरह, उन्होंने इस भावना को नहीं त्यागा कि हम और अच्छा कर सकते है।

उनके अंत के पश्चात हम उनके कार्य को कैसे चिन्हित करे? बॉमन के साथ कार्य करते हुये मैंने उनके कार्य के लक्षण बताने के कई प्रयास किये : अतिरिक्तता के रूप में आधुनिकता के आलोचक, अतिरिक्त जनसंख्या का समाजशास्त्र, वैकल्पिक आधुनिकताओं का सिद्धान्त जिसमें नाजी जर्मन या 'व्यर्थ' का समाजशास्त्र भी सम्मिलित है। परंपरागत रूप से, इसको भ्रमजाल रहित आधुनिकता के आलोचक के रूप में वर्णित किया जा सकता है; एक पूर्वी यूरोपियन आलोचनात्मक सिद्धान्त या एक वेबरियन मार्क्सवाद। यहां पर कुछ अन्य प्रोजेक्ट भी है, जिसमें वर्गीकरण के कारण की आलोचना भी शामिल है। हाल ही में, उनके कार्य को समय की पहचान, समय के चिन्हों की आलोचना, उम्मीद की भावना के लिये क्रमिक चेतावनियों के रूप में भी वर्णित किया जा सकता है।

क्या वो एक उदाहरण थे? बेशक; परन्तु वो एक नेता नहीं थे। उनका उदाहरण यह स्पष्ट करने के लिये है कि हम सबको अपने अपने रास्ते पर चलना जरूरी है। यह ही सिर्फ एकमात्र रास्ता है जो आलोचनात्मक समाजशास्त्र की उम्मीद को जीवित रख सकता है। ■

पीटर बेलहार्ज, करटिन विश्वविद्यालय, ऑस्ट्रेलिया

> गैर समाजशास्त्रीय समय में समाजशास्त्र

हॉवर्ड रमोस, कनाडाई समाजशास्त्र संघ के अध्यक्ष एवं डलहौजी विश्वविद्यालय, **रीमा विल्केस,** कनाडाई समाजशास्त्रीय संघ के चयनित–अध्यक्ष एवं ब्रिटिश कोलंबिया विश्वविद्यालय और **नील मेकलागलिन,** मैकमास्टर विश्वविद्यालय, कनाडा

एरियाने हनेमायर द्वारा फोटो

पिछले कुछ वर्षो में दुनिया ने सहज ज्ञानवाद का उभार, विदेशियों से भय, अज्ञातजनभीती (जीनोफोबिया), ब्रेक्सिट वोट (ब्रिटेन का यूरोपीय संघ की सदस्यता छोड़ने के सम्बन्ध में जनमत संग्रह) और डोनाल्ड ट्रम्प के चुनाव की घटनाओं का सामना किया है। यह विश्व उत्तर–सच्चाई, नकली खबरों और कहानियों से भरा पड़ा है जो बड़ी सामाजिक समस्याओं के लिए व्यक्तियों को दोषी ठहराते हैं। सामाजिक समस्याओं के अधिकतर सरलीकृत, मौलिक, और व्यक्तिगत मूल्यांकन समृद्ध हो रहे हैं, जो उस सांस्कृतिक वातावरण को प्रभावित करते हैं जिसमें समाजशास्त्री रहते और काम करते हैं।

विश्व के नेताओं द्वारा बड़े पैमाने पर, सामाजिक दृष्टिकोणों को खारिज कर दिया जाता है। उदाहरण के लिए, फ्रांसीसी प्रधान मंत्री मैनुअल व्हॉल्स ने कहा कि अनुशासन 'माफी–मुक्ति की संस्कृति' है, जबकि कनाडा के पूर्व प्रधानमंत्री स्टीफन हार्पर से आतंकवाद के अंतर्निहित कारणों या स्वदेशी महिलाओं के विरुद्ध हिंसा के बारे में पूछने पर उन्होंने कहा था कि यह 'प्रतिबद्ध समाजशास्त्र' का समय नहीं था. ऐसा प्रतीत होता है कि समाजशास्त्र समकालीन व्यापक प्रवृत्तियों से बाहर है।

शैक्षणिक जगत के बाहर के कई अन्य लोगों के साथ–साथ अनेक नेता और नीतिनिर्माता समाजशास्त्र की उपयोगिता को समझने में असफल रहते हैं। हिंसा की सामाजिक उत्पत्ति और कारणों को समझने के प्रयास या शरणार्थियों, निर्धनता और असमानता के अन्य रूपों को निर्मित करने वाली परिस्थितियों को दूर करने के प्रयासों को तेजी से सरलता से खारिज किया जा रहा

> >

है या हिंसा और उग्रवाद को बढावा देने के आरोप लगाये जा रहे हैं। इस भावना ने एशिया और साथ ही लैटिन अमेरिका में विभाग बंद करने के लिए प्रेरित किया है, और इसका मतलब है कि अनुशासन दूसरे सामाजिक विज्ञानों विशेष रूप से अर्थशास्त्र और मनोविज्ञान के अधीन काम करता है।

हम मानते हैं कि आने वाले वर्षों में समाजशास्त्र के पास निभाने के लिए एक महत्वपूर्ण भूमिका होगी। दुनिया की सबसे अधिक जरुरी समस्या समाजशास्त्रीय तर्क और विश्लेषण के माध्यम से व्यापक संरचनात्मक और ऐतिहासिक गतिशीलता के विश्लेषण की मांग करती है। परन्तु इसे प्रभावी ढंग से करने के लिए विषय अनुशासन में समय के साथ बदलाव लाने की जरूरत है।

समाजशास्त्रियों को न केवल विषय अनुशासन का अभ्यास करने वाले लोगों में बल्कि उनके द्वारा प्रयुक्त किये जाने वाले सिद्धांतों, विचारों और व्यवहारों कार्यप्रणालियो में भी अधिक विविधता लाने की आवश्यकता है। विषय अनुशासन के बाहर के अनेक लोग समाजशास्त्र को अधिक शिक्षाप्रद मानते हैं, यह सामाजिक समस्याओं के लिए पूर्व–निर्धारित समाधान प्रस्तुत करता है जो राजनीतिक होने के बावजूद उन लोगों के लिए अपील करता है।

हम अन्य विषयों अनुशासनों के दृष्टिकोणों से, रूढ़िवादी आवाजों के लिए खुलापन लाने से और नॉन–पैरामीट्रिक मॉडलिंग, मशीन लर्निंग मॉडलिंग और अनुकूली प्रणाली मॉडलिंग जैसी प्रयोगात्मक एवं आधुनिक पद्धतिशास्त्रों के समिल्लित प्रारूप के साथ–साथ दृश्य विश्लेषण और व्याख्यात्मक–गुणात्मक विश्लेषण के नए स्वरूपों से लाभान्वित होंगे। ऐसा करने से यह विषयध्अनुशासन नए विधार्थियों के लिए खुल जाएगा।

समाजशास्त्रियों के लिए यह भी आवश्यक है कि उस व्यापक जनता को भी शामिल करे, जो उनके निष्कर्षों से असहमित रखती है। समाजशास्त्री पर अक्सर अपारदर्शी शब्द–जाल और समाजशास्त्रीय शब्द जैसे 'समाज निर्मित' जो कि अकाट्य तर्क के रूप में समझे जाते है, को प्रयुक्त करने का आरोप लगाया जाता है। 'अभिजात वर्ग' का लेबल लगने और असम्बद्ध होने से बचने के लिए, हमें अपने ज्ञान को दिन–प्रतिदिन की भाषा में अनुवाद करने की आवश्यकता होती है जो शैक्षणिक जगत से बाहर के लोगों को अपील करता है।

सामाजिक हस्तक्षेप के लिए अवसरों की पहचान करना और जल्दी से कार्य करना भी महत्वपूर्ण है. समाज में जो भी बदलाव हुए हैं उन पर समाजशास्त्रियों को ध्यान देना चाहिए, अनुशासन विषय क्या सोचता है से चिपके रहने के बजाय समाज में उभरती हुई सामाजिक समस्याओं पर ध्यान देना चाहिए– औद्योगिक क्रांति के दौरान या बाद में निर्मित सिद्धांतों के आधार पर– यदि यह जन्म दर वृद्धि काल के अनुभवों को संबोधित करता है।

दुनिया भर के समाज जिन दीर्घकालिक मुद्दों का सामना कर रहे हैं हमे उन्हें शामिल करने की जरूरत है, जैसे वर्गीय असमानताएं या स्थानीय लोगों के साथ सामंजस्य और वि–औपनिवेशीकरण, साथ ही वे मुद्दे जो व्यापक स्तर पर विषय अनुशासन की मुख्यधारा से गायब हैं, जिनमें जलवायु परिवर्तन के साथ अनुकूलन, कृत्रिम बुद्धि और रोबोटिक्स के उभार, जेंडर और अन्तःलैंगिकता से संबद्ध बदलते मानदंड और अपेक्षाएं, या दुनिया भर में निरंकुशता के उदय इत्यादि को भी सम्मिलित करने की जरुरत है।

वैश्विक संवाद के इस अंक में, कनाडाई समाजशास्त्री डैनियल बेलाण्ड, फ्यूकी कुरासावा, पेट्रीशिया लैंडोलट, चेरिल टेलेक्सिंग और करेन फोस्टर बताते हैं कि समाजशास्त्र किस प्रकार सार्वजनिक नीति और ज्ञान का संकलन करने में योगदान देता है, और यह नागरिकता और पर्यावरण के बारे में अंतर्निहित अन्याय के बारे में हमारी समझ को दिशा देते हैं। यहां तक कि गैर–समाजशास्त्रीय काल में भी समाजशास्त्री अपना योगदान कर सकते हैं, करते हैं, और नेतृत्व प्रदान करते हैं।

समाजशास्त्री अपने ज्ञान की सीमाओं के बारे में नम्रता के साथ, उनके लिए सम्मान जिनके प्रति हम असहमति रखते हैं, और हमारे अपने निष्कर्षों पर आश्चर्यचकित होने के लिए खुलापन, अपने वर्तमान समय को निर्देशित करने के लिए आवश्यक सामाजिक साक्षरता को विकसित करने में हमारी मदद कर सकते हैं – और उस प्रक्रिया में दुनिया की सबसे महत्वपूर्ण सामाजिक समस्याओं के अनेक दीर्घकालिक समाधान प्रदान करने के साधन उपलब्ध करवा सकेंगे। ■

हॉवर्ड रमोस से पत्र व्यवहार हेतु पता <howard.ramos@dal.ca>
रीमा विल्केस से पत्र व्यवहार हेतु पता <wilkesr@mail.ubc.ca>
नील मेकलागलिन से पत्र व्यवहार हेतु पता <ngmclaughlin@gmail.com>

> जन नीति में समाजशास्त्र की प्रतिबद्धता

डेनियल बेलाण्ड, जॉनसन सोयामा ग्रेजुएट स्कूल ऑफ पब्लिक पॉलिसी, कनाडा एवं निर्धनता, सामाजिक कल्याण एवं सामाजिक नीति की आई.एस.ए. की शोध समिति के अध्यक्ष (RC19)

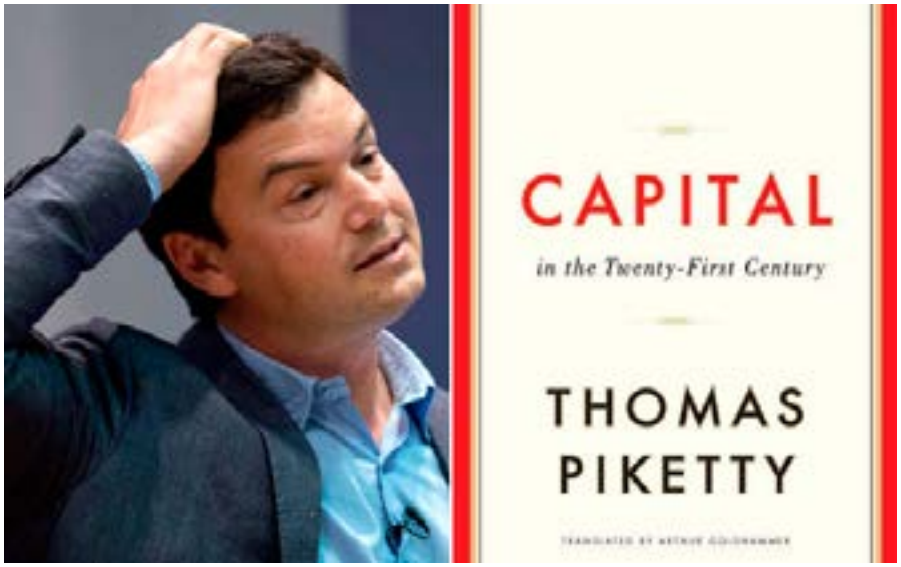

असमानता के विद्रोही अर्थशास्त्री–थॉमस पिक्केटी–क्या अर्थशास्त्री समाजशास्त्रियों की जगह चुरा रहे हैं?

अधिकांश विश्व में, नीतियों के क्षेत्र में समाजशास्त्र का स्तर अर्थशास्त्र की तुलना में निम्न है – कनाडा के पूर्व प्रधानमंत्री स्टीफन हार्पर का 'प्रतिबद्ध समाजशास्त्र' के विरुद्ध उपेक्षापूर्ण आह्वान स्थिति को स्पष्ट करता है। एक कनाडाई पॉलिसी स्कूल में काम करने वाले समाजशास्त्री के रूप में, मैं अर्थशास्त्रियों के साथ रोजाना बातचीत करता हूं और नियमित रूप से उनके काम का उपयोग अपनी स्वयं की छात्रवृत्ति में करता हूँ। अर्थशास्त्र के बारे में एक असाधारण तथ्य यह है कि नीतियों के क्षेत्र में यह सबसे प्रतिष्ठित सामाजिक विज्ञान है, यह विषय जटिल सैद्धांतिक और पद्धतिशास्त्रीय उपकरणों का प्रयोग करके मूर्त ठोस नीतिगत समस्याओं के बारे में बोलेन की सामर्थ्य रखता है।

लेकिन यह जब नीति के निहितार्थ प्रभावों पर ध्यान केंद्रित करता है, जो मुख्यधारा के अर्थशास्त्र की ताकत होते हैं, तो समाजशास्त्र विषय अनुशासन कमजोर साबित होता है. इनमें से प्रमुख हैं विषयों को निष्कासित करने की प्रवृत्ति जिन्हें समाजशास्त्रियों और अन्य सामाजिक वैज्ञानिकों ने लंबे समय से सार्वजनिक नीति के लिए महत्वपूर्ण, जटिल अंत:विषयक वार्ता के रूप में स्वीकार किया है।

फिर भी, यदि समाजशास्त्रियों को नीति की दुनिया में प्रवेश करने की उम्मीद है, यदि वे नीति संबंधी बहस को आकार देकर अपना काम करना चाहते हैं, और यदि वे शैक्षणिक जगत से परे विषय अनुशासन को प्रासंगिक बनाना चाहते हैं, तो उन्हें अर्थशास्त्रियों से एक पेज लेना होगा। समाजशास्त्रियों को अपने शोध के संभावित नीतिगत प्रभावों को पहचानने की जरुरत है और यह जानने की आवश्यकता है कि इन नीतियों के निहितार्थ को नीति निर्माताओं को कैसे प्रसारित करना है ।

यह कार्य विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि अर्थशास्त्रियों का अनुसंधान के क्षेत्र में हस्तक्षेप बढता जा रहा है जहां कभी समाजशास्त्रियों का वर्चस्व होता था। महत्वपूर्ण अपवादों के बावजूद (कनाडा में सामाजिक नीति के बारे में जॉन मैल्स और आप्रवासी नीति के बारे में जेरार्ड बुचर्ड और विक्टर सात्जिविच पर विचार किया जाएगा), आम तौर पर समाजशास्त्रियों को विशेष रूप से नीतिगत सलाह के वैध या प्रमुख स्रोतों के रूप में नहीं देखा जाता है – यहां तक कि असमानता के संबंध में जैसे आय, जेंडर या नृजातीय असमानताओं के विषय पर लिखने का एक लम्बे समय

> >

तक समाजशास्त्रीयों का वर्चस्व था। हाल तक, अधिकांश मुख्यधारा (अर्थात् गैर–मार्क्सवादी) के अर्थशास्त्रियों ने असमानता पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया क्योंकि नव–क्लासिकल मॉडल में यह अच्छी तरह से फिट नहीं था। हालांकि, हाल ही में अर्थशास्त्रियों ने असमानता से निपटना शुरू कर दिया है, और इसे कम करने के उद्देश्य से स्पष्ट नीतिगत सुझाव दिए गए हैंय थॉमस पिक्केटी की पुस्तक, कैपिटल इन द ट्वेंटी–फर्स्ट सेंचुरी (2013), दुनियाभर में नीति निर्माताओं के आकर्षण का केंद्र बनी हुई है। क्योंकि यह एक प्रतिष्ठित अर्थशास्त्री द्वारा लिखी गई है, और नीतियो के क्षेत्र में अर्थशास्त्र की प्रभावी स्थिति के कारण, पिक्केटी का काम अनेक समाजशास्त्रियों के काम की तुलना में ज्यादा ध्यान आकर्षित कर रहा है, जो कि बढ़ती असमानताओं पर पहले ही प्रकाशित हो चुका है।

इसके बावजूद या शायद इसलिए, समाजशास्त्रियों को नीति समर्थको और निर्णय लेने वालों तक पहुंचने के लिए एक अतिरिक्त प्रयास करने की आवश्यकता है। अर्थशास्त्रियों की तुलना में समाजशास्त्री असमानता पर अधिक महत्वपूर्ण और इतिहास केन्द्रित आधारित दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं (अर्थात बुद्धिजीवी जो असमान विषम शक्ति संबंधों पर चर्चा करते हैं और ठोस नीति क्षेत्रों में समय के साथ उनका क्रमिक विकास करते हैं), इसलिए यह इतना महत्वपूर्ण है कि असामनता के विषय पर बहस में नीतियों के क्षेत्र में उनकी विशिष्ट आवाज सुनाई देती है. आम तौर पर, असमानता के संदर्भ में और उससे परे, व्यावहारिक नीति कार्य को विषय अनुशासन में अधिक महत्त्व दिया जाना चाहिए अगर समाजशास्त्री अपने आसपास के विश्व को आकार देने में और अधिक प्रत्यक्ष भूमिका निभाना चाहते हैं।

यदि हम तैयार ठोस नीति प्रस्तावों के साथ नीति निर्माताओं के पास जाना सीखते हैं, तो वे देख सकते हैं कि आज दुनिया की सबसे बड़ी समस्याओं से निपटने में समाजशास्त्र कितना प्रासंगिक है। समाजशास्त्रियों को भी अर्थशास्त्रियों के साथ जुड़ना चाहिए जबकि यह सुनिश्चित किया जा रहा है कि वे आज की समस्याओं के व्यावहारिक समाधान प्रदान करते हैं। इसका अर्थ यह है कि असमानता पर काम कर रहे समाजशास्त्रियों को अपनी सिफारिशों के बारे में नीति प्रकरण (हाथ में लिए गए कुछ वास्तविक कार्यक्रम जैसे कनाडा के वृद्ध लोगो के लिए गारंटीकृत आय अनुपूरक कार्यक्रम और देश की संघीय समरूपता प्रणाली) के बारे में और अधिक सावधानी से विचार करना चाहिए और वित्तपोषण एवं क्रियान्वयन जैसे मुद्दों पर विचार करना चाहिए– जिस पर अर्थशास्त्री और निर्णय निर्धारक निकटता से ध्यान देते हैं।

दूसरे शोध क्षेत्र जहां समाजशास्त्रियों का पारम्परिक रूप से प्रभुत्व है – और जहां अर्थशास्त्री अब प्रवेश कर रहे हैं वह है मानदंडों और अस्मिता निर्माण का विश्लेषण। जबकि पिकटे सामाजिक असमानता पर बहस के विषय में अर्थशास्त्र के क्षेत्र में एक नया चेहरा हो सकता है, अर्थशास्त्र में नोबेल पुरस्कार विजेता जॉर्ज एकरलोफ और उनके सहयोगी राहेल क्रैटन इस विषय में पारंगत हैं जिसे वे अस्मिता के अर्थशास्त्र (2010) की संज्ञा देते हैं। अस्मिता का अर्थशास्त्र सांस्कृतिक मानदंडों (लैंगिक संबंधो और बच्चों व वृद्ध लोगों के साथ व्यव्हार जैसे मुद्दों के बारे में) पर और कैसे वे मानव व्यवहार को आकार देते हैं जैसे मुद्दों पर पर ध्यान केंद्रित करता है, एक विषय के रूप में समाजशास्त्र के साथ यह दोनों मुद्दे मजबूती से जुड़े हैं।

यद्यपि इनका काम अकादमिक जगत के बाहर उस रूप में नहीं जाना जाता जिस रूप में पिकटे के काम को जाना जाता है, अस्मिता के अर्थशास्त्र का उदय एक महत्वपूर्ण घटना है क्योंकि मुख्यधारा के अर्थशास्त्रियों ने असमानता की तुलना में मानदंडों और अस्मिता की ऐतिहासिक रूप से कहीं अधिक उपेक्षा की है। अंतःविषय अन्तःशास्त्रीय अंतर्विषयक दृष्टिकोण से यह अच्छी खबर है कि कम से कम कुछ अर्थशास्त्रियों ने मानदंडों और अस्मिता की खोज की है, क्योंकि यह गंभीर अन्तःशास्त्रीय अंतर्विषयक संवाद को उभार दे सकता है। एकेरलोफ और क्रान्टोन के योगदान से समाजशास्त्री यह जान सकते है कि इन मुद्दों पर काम करने वाले शिक्षाविद कैसे नीतिगत मुद्दों के लिए ठोस समाधान उत्पन्न कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, युवा लोग वयस्कों के संबंध में स्वयं को कैसे देखते हैं, इसके अध्ययन से शैक्षणिक उपलब्धि में सुधार करने या अधिक प्रभावी धूम्रपान विरोधी नीति (एंटीस्मोक्लिंग पॉलिसी) तैयार करने में मदद मिल सकती है। समाजशास्त्रियों ने पहले भी ऐसी नीति निदान प्रस्तुत कर रखे हो सकते हैं, लेकिन अस्मिता का अर्थशास्त्र हमें याद दिलाता है कि सामाजिक मानदंड और अस्मिता नीति शोध के लिए प्रमुख मुद्दे हैं। इस अनुभूति से क्षेत्र में काम करने वाले और अधिक समाजशास्त्रियों को उनके आनुभविक विश्लेषण से प्राप्त नए नीति समाधानों को डिजाइन और बढ़ावा देने के लिए प्रोत्साहित होना चाहिए।

ये उदाहरण बताते हैं कि मुख्यधारा के अर्थशास्त्री अंततः महत्वपूर्ण सामाजिक घटनाओं पर अधिक ध्यान दे रहे हैं दृ जिन पर समाजशास्त्री लंबे समय से अध्ययन करते रहे है. अंतःविषयक सहयोग के ये नए अवसर इन क्षेत्रों में काम करने वाले समाजशास्त्रियों के लिए एक चुनौती भी पेश करते हैं जो कुछ अलग करना चाहते हैं। इन समाजशास्त्रियों और उनके सहयोगियों को विषय के अन्य उपक्षेत्रों में शैक्षणिक जगत से बहार अपने नीतिगत सुझावों को सक्रिय रूप से बढ़ावा देने के लिए आगे आना चाहिए। उन्हें सामान्य नागरिकों, अधिवक्ताओं और निर्णय निर्माताओं तक पहुंचने के लिए पारंपरिक और सोशल मीडिया दोनों का उपयोग करना चाहिए, यह सुनिश्चित करने के लिए कि नीतिगत बहस में "प्रतिबद्ध समाजशास्त्र" अनिवार्यता हो जाता है जिसे राजनीतिज्ञ उपेक्षा के साथ सरलता से नजरअंदाज कर सकते हैं। ■

डेनियल बेलाण्ड से पत्र व्यवहार हेतु पता <daniel.beland@usask.ca>

> कनाडा में अनिश्चित गैर–नागरिकता

पेट्रिशिया लेण्डोल्ट, टोरंटो विश्वविद्यालय, कनाडा एवं प्रवसन का समाजशास्त्र की आई. एस. ए. की अनुसंधान समिति के सदस्य (RC 31)

सार्वजनिक बहस में समाजशास्त्र एक निर्णायक भूमिका में रहता है क्योंकि यह सामाजिक मुद्दों पर दबाव डालने की सामान्य समझ को चुनौती देता है। उदाहरण के लिए, प्रव्रजन एवं आव्रजन (प्रवसन एवं अप्रवसन) के बारे में विचार करें। कनाडा और अन्य उपनिवेश आबादी वाले देशों में देश की राष्ट्रीय आबादी में वृद्धि के लक्ष्य के साथ आव्रजन को आम तौर पर एक स्थायी कदम के रूप में देखा जाता है। हालांकि प्रव्रजन के समाजशास्त्र से पता चलता है कि अस्थायी प्रवास बढ़ रहा है और प्रव्रजन को बढ़ावा देने वाली नीतियां अनिश्चित गैर–नागरिकता को उत्पन कर रही हैं। एक समाजशास्त्रीय दृष्टि वर्तमान आव्रजन प्रणाली की प्रभुत्व–विरोधी व्याख्याओं और सामाजिक असमानता पर इसके प्रभाव को प्रस्तुत करती है।

वैधानिक प्रस्थिति और नागरिकता वैश्विक स्तर पर कल्याण एवं गतिशीलता के महत्वपूर्ण निर्धारक माने जाते हैं। परंतु वे असमानता को भी उत्पन्न करते हैं। हाल के वर्षों में राज्यों ने बढ़ते प्रव्रजन को रोकने के लिए गैर–नागरिकों के लिए नई वैधानिक श्रेणियां बनाकर, गैर–नागरिकता को अधिकृत वाहक बनाने वाली संस्थाओं को संगठित करे, प्रमुख प्रवासियों को अनिश्चित वैधानिक प्रस्थिति में सालों बिताने और अक्सर प्रवासियों को अवैधानिकीकरण की ओर धकेलने के कारण बढ़ते वैश्विक प्रव्रजन को जवाब दिया।

रास्ते और नागरिकता को तेजी से प्रतिबंधित कर दिया गया, जबकि प्रवासियों को हिरासत में लेने और निर्वासित करने के लिए अतिरिक्त वैधानिक प्रणालियों में वृद्धि की गई। इस प्रकार का वैश्विक बदलाव एक देश से दूसरे देश में भिन्न–भिन्न है, लेकिन कनाडा में, अस्थायी और स्थायी आव्रजन के बीच बदलते रिश्तों ने अनिश्चित गैर–नागरिकता को उत्पन्न किया है जो कि आव्रजन, श्रम–बाजार और कार्य के अनुभव में व्यक्त हुआ है।

अनिश्चित गैर–नागरिकता से अभिप्राय अस्थायी या सीमित वैधानिक प्रस्थिति और विभेदकारी समावेशन से सम्बद्ध अनुभवों से है। अनिश्चित वैधानिक प्रस्थिति का अर्थ है कि किसी व्यक्ति को केवल एक देश में उपस्थित रहने का एक अस्थायी कानूनी अधिकार प्राप्त है जिसमें राज्य के अधिकारों तक उसकी या तो सीमित पहुंच होती है या कोई पहुंच नहीं होती। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि अनिश्चित गैर–नागरिकों को निर्वासित किया जा सकता है, राज्य अनिश्चित गैर–नागरिकों को बंदी बना सकता है या राष्ट्रीय क्षेत्र में जबरन हटा सकता है।

अनिश्चित गैर–नागरिक एक ऐसे देश में रहते हैं, काम करते हैं और अपने परिवार को पालते–पोसते हैं, जहाँ उनके उपस्थित होने, काम करने और राज्य संसाधनों का उपयोग करने के अधिकारों में कानून द्वारा कटौती होती है। कनाडा में अनिश्चित वैधानिक प्रस्थिति वाली जनसंख्या में अस्थायी प्रवासी श्रमिक, अंतरराष्ट्रीय छात्र, शरणार्थी अभियुक्त, विशेष वीजा प्राप्त लोग और कोई भी जो प्रस्थिति से बाहर है कि सभी श्रेणियों सम्मिलित हैं। 2010 में 34 करोड़ की आबादी वाले देश कनाडा में 1.2 से 1.7 करोड़ की बीच अनिश्चित गैर–नागरिक रह रहे थे और काम कर रहे थे।

कनाडा में दीर्घकालिक जनसंख्या वृद्धि के लिए एक अल्पकालिक श्रमिक आपूर्ति के रूप में कुछ अप्रवासियों और अन्य अप्रवासियों की इच्छा के बीच हमेशा एक तनाव रहा है। ऐतिहासिक रूप से दीर्घकालिक और अल्पकालिक लक्ष्यों के बीच संतुलन को दो–मार्गीय आव्रजन प्रणाली के माध्यम से हल किया गया था। एक मार्ग उन अस्थायी प्रवासियों के लिए था जो महत्वपूर्ण प्रतिबंधों के साथ आते हैं जहां वे काम कर सकते थे, चाहे तो अपने परिवार को भी ला सकते थे और कितने भी समय तक रह सकते थे। इस तरह के अस्थायी मार्ग पर शामिल प्रवासियों में चीनी लोग थे जो 1880 के दशक में रेलवे में काम करने के लिए आए थे, 1950 के दशक में कैरेबियाई महिलाएं घरेलू कार्य करने के लिए आयी थीं और 1970 के दशक में मैक्सिकन श्रमिक मौसमी कृषि कार्य करने आए थे। एक दूसरे मार्ग में संघीय अंक प्रणाली के माध्यम से चुने गये अप्रवासियों को शिक्षा, अधिकारिक भाषा बोलने की क्षमता और पारिवारिक संबंधों के आधार पर स्थायी निवास का प्रस्ताव दिया। 1990 के दशक तक ये दोनों मार्ग संगठनात्मक रूप से और असम्बद्ध रूप से अलग–अलग थे, अस्थायी श्रमिकों को गैर–नागरिकों के रूप में लाने वाला पहला मार्ग काफी हद तक अदृश्य था जबकि राष्ट्र–निर्माण के लिए अप्रवासियों को लाने वाला दूसरा मार्ग बहुत ही स्पष्ट था। बाद वाला मार्ग अप्रवासियों के कनाडाई मॉडल के अनुरूप था और हमारे सामूहिक उत्सव का केन्द्र था।

2000 के दशक में संघीय आव्रजन नीति ने स्थापित दो–मार्गीय प्रणाली को समाप्त कर दिया। पहला, स्वतंत्र कुशल अप्रवासियों के

> >

> *"अनिश्चित गैर–नागरिक कनाडा के सामाजिक और आर्थिक संरचना में पिरोये हुए"*

लिए पात्रता के मानदंड जैसे अधिक धन, उच्च शैक्षणिक उपलब्धि और अधिकारिक भाषा में प्रवीणता के स्पष्ट संकेतकों के साथ लोगों का चयन करने के लिए संकुचित हो गये थे। दूसरा, शरणार्थियों, शरण चाहने वालों और परिवार–वर्ग के प्रवासियों के प्रवेश के लिए पात्रता के मानदंड को भी संकुचित कर दिया गया। तीसरा, अस्थायी विदेशी श्रमिकों के लिए कौशल की आवश्यकता उच्च–कौशल और निम्न–कौशनल वाली व्यावसायिक श्रेणियों के लिए अनुमति देने में ढील दी गई थी। अंत में, चयनित अस्थायी प्रवासियों को स्थायी आवास में रूपांतरित करने हेतु सक्षम बनाने के लिए नए तंत्र स्थापित किये गये। नियोक्ता प्राथमिक मध्यस्थ होते हैं जो गैर–नागरिक मजदूरों के अस्थायी आव्रजन से स्थायी आव्रजन में संक्रमण को निर्धारित करते हैं। संक्षेप में, प्रत्यक्ष स्थायी आव्रजन, अस्थायी प्रव्रजन मार्गों को व्यापक करने और कुछ अस्थायी प्रवासियों को स्थायी आव्रजन मार्ग पर जाने की अनुमति देने के लिए मार्ग को सकरा (संकुचित) कर दिया गया था। परिणामस्वरूप, अब कनाडा में अस्थायी प्रवेश लगातार स्थायी प्रवेश की प्रक्रिया को आगे बढ़ा रहा है।

अस्थायी और स्थायी प्रवजन के बीच नए संबंधों का कनाडा के काम और श्रम बाजार पर प्रभाव पड़ा–जैसे अनिश्चित गैर–नागरिक श्रमिक आर्थिक परिदृश्य पर एक नये और अधिक स्पष्ट स्थिरता के साथ उभरे। 1990 के दशक तक अस्थायी प्रवासी श्रमिक मौसमी कृषि–उद्योग उत्पादन, नगर, उच्च स्तरीय सेवा क्षेत्र, और घरेलू देखभाल कार्य तक सीमित थे, परंतु अब यह पैटर्न बदल गया है। 2011 तक, बड़े और छोटे नगरीय केंद्रों तथा ग्रामीण क्षेत्रों में, देश के हर प्रांत और क्षेत्र में अस्थायी श्रमिक उपस्थित थे। इस भौगोलिक प्रसार के साथ–साथ व्यावसायिक उतार–चढ़ाव भी आए। 2005 में अस्थायी विदेशी श्रमिकों के लिए सूचीबद्ध शीर्ष पांच व्यवसायों को उच्च कौशल के रूप में वर्गीकृत किया गया और वे रचनात्मक उद्योगों तक सीमित थे। 2008 में शीर्ष व्यवसायों में खाद्य सेवा कार्य और निर्माण–कार्य निम्न स्थान पर थे।

अनिश्चित गैर–नागरिक और नागरिक श्रमिक राज्य और नियोक्ता के संबंध में अलग–अलग अधिकारों के साथ अब संपूर्ण कनाडा में कार्यस्थलों पर एक–दूसरे के साथ काम करते हैं, परंतु इन मिश्रित वैधानिक–प्रस्थिति वाले कार्यस्थलों के बारे में हक बहुत कम जानते हैं। निश्चित रूप से, श्रम बाजार में निर्वासित गैर–नागरिक श्रमिकों की उपस्थिति का सभी कर्मचारियों पर कुछ प्रभाव पड़ता है। अन्य देशों के आंकड़ें श्रम मानकों और कार्यस्थल की स्थितियों से जुड़े भूमि के सामान्यीकृत क्षरण/ह्रास की ओर संकेत करते हैं।

अनिश्चित गैर–नागरिकता श्रमिकों, नियोक्ताओं और राज्य के बीच तथा नागरिक व गैर–नागरिक श्रमिकों के बीच शक्ति के संतुलन को परिवर्तित करती है। विशेष रूप से, निर्वासन योग्यता श्रम–बाजार में दावा करने और अधिकारों का प्रयोग करने की गैर–नागरिक श्रमिकों की क्षमता को सीमित करती है। बेशक, नागरिकों और निर्वासित गैर–नागरिक श्रमिकों के बीच यह अंतर सौ साल पहले भी उतना ही सच था जितना कि आज है। तब और अब के कनाडा के बीच जो अंतर है वह है–अनिश्चित गैर–नागरिकता के केन्द्रीयता, प्रभावित लोगों की संख्या का बढ़ना, द्वि–मार्गीय आव्रजन प्रणाली में परिवर्तन और एक हद तक अनिश्चित गैर–नागरिकों को कनाडा के सामाजिक और आर्थिक ताने–बाने में सम्मिलित करना। ■

पेट्रिशिया लेण्डोल्ट से पत्र व्यवहार हेतु पता <landolt@utsc.utoronto.ca>

> पर्यावरणीय न्याय के द्वारा समाजशास्त्र को समर्पित करना

चेरिल तिलकसिंह, रायरसन विश्वविद्यालय, कनाडा

न्यू ब्रूंसविक, कनाडा में कौल गैस अन्वेषण के खिलाफ प्रदर्शनकारियों की रैली

जब दुनियाभर के शहरों में नस्लवाद और दैशवाद में वृद्धि देखी जा रही है, यह प्रवृत्ति टोरंटो को नजरअंदाज करती हुयी दिखाई देती है। यह आश्चर्य की बात हो सकती है, क्योंकि टोरंटो भी दुनिया के सर्वाधिक बहुसांस्कृतिक शहरों में से एक है, और अन्य बड़े शहरों की तरह, यह भी सबसे अच्छी और सबसे खराब, दोनों शहरी परिस्थितियों को संभालता है।

पिछले साल में, दुनिया भर में शहरी विरोध प्रदर्शनों में एक वृद्धि हुयी है, और टोरंटो कोई अपवाद नहीं है। 2016 के अमेरिकी चुनाव से उत्पन्न हो रहे विवादों, फिलिन्ट के जल संकट के शिकार लोगों के विरोध; स्टैंडिंग रॉक, नार्थ डकोटा में पाइपलाईन के खिलाफ बड़े पैमाने पर देशज–प्रेरित कार्यवाही; या उत्तर–नस्लीय समस्या का ब्लैक लाइव्स मैटर की चुनौती जो कभी अस्तित्व में नहीं थी। प्रत्येक सामाजिक मीडिया और सड़कों पर सहस्त्राब्दि की पीढ़ी के द्वारा चलाये गये विरोध का उदाहरण है।

इसी प्रकार के तनाव और लामबंदियां टोरंटों में भी उभरी हैं, जहां अधिकांश आबादी विदेश में जन्मी है और कई नस्लीयकृत हैं। कुछ के लिये, लंबे समय से बहुसांस्कृतिक संस्कृति के लिये माने जाने वाले शहर में नस्लीय घटनाओं में वृद्धि चौंकाने वाली है। टोरंटों के ब्लैक लाइव्स मैटर आंदोलन ने पुलिस हिंसा के खिलाफ प्रदर्शन में शहर की प्रमुख ग्रे प्राइड परेड को विलंबित कर दिया था। तमिल शरणार्थीयों ने इसके मुख्य राजमार्गों को अवरूद्ध कर दिया था, निवासियों को इस हद की याद दिलाते हुये जिस तक नस्लीय लोग शहर की उपनगरों में सामाजिक और स्थानीय रूप से विभाजित थे।

सक्रियता और हस्तक्षेप के विभिन्न रूपों के लिये जिम्मेदार इन घटनाओं को अलग राजनीतिक और आर्थिक तनावों की तरह सरल रूप से समझने के बजाय, सक्रियता, कार्यवाही और मुद्दों के मध्य कड़ी को देखते हुये नीति सुधारों के लिये दवाब

> >

बनाना समाजशास्त्रीयों के लिये महत्वपूर्ण है। मैं तर्क देता हूं कि पर्यावरणीय न्याय समाजशास्त्र को बिल्कुल यही करने के लिये एक छतरी प्रदान करता है।

पर्यावरणीय न्याय एक सैद्धांतिक ढांचा और एक सामाजिक आंदोलन दोनों है जो कि सामाजिक न्याय के मुद्दे को पर्यावरणीय आंदोलन में मिला देता है। संरक्षण से जुड़े परंपरागत और अपवर्जनात्मक विचारों का विस्तार कर के, पर्यावरणवाद के अधिक समावेशी विचारों तक, पर्यावरणीय न्याय, स्वास्थ्य, आवास और नगर नियोजन से लेकर नियंत्रित/शासन करने तक की सामाजिक और पर्यावरणीय समस्याओं की एक विस्तृत श्रंखला को समाहित करता है।

सक्रियता के एक दृष्टिकोण के रूप में, पर्यावरणीय न्याय सक्रिय सामाजिक और पर्यावरणीय नीति के लिये लड़ने के लिये नागरिक अधिकार आंदोलनों से जुड़ी हुई विरोधों रणनीतियों – घेराबंदीयां, याचिकायें, और मीडिया अभियानों– पर आधारित है। रोबर्ट बुलार्ड के शुरूआती काम से प्रेरित, पर्यावरणीय न्याय समुदाय–उन्मुख समाजशास्त्र का उदाहरण बन गया है जो कि आज की परस्पर सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और पर्यावरणीय चिंताओं के लिये उत्तरदायी और प्रासंगिक है।

अपने प्रारंभिक रूप में, पर्यावरणीय न्याय ने हाशिये के, नस्लीय, कम आय और देशज लोगों द्वारा अनुभव किये जा रहे पर्यावरणीय जोखिमों के असमान स्थानिक वितरण पर प्रकाश डालने पर ध्यान केंद्रित किया। कनाडा में, इसमें घटिया बुनियादी ढांचे की चल रही औपनिवेशिक विरासत के साथ एक नाम जोडना और भूमि और संसाधनों के बारे में निर्णय लेने में देशी लोगों के साथ परामर्श की कमी शामिल है। इस संबंध में, भूमि अधिकारों, स्वास्थ्य और पारिस्थितिकी तंत्र के जोखिमों के बारे में साझा चिंताओं ने सामाजिक न्याय मुद्दों – और अलबर्टा में तेल रेत विकास के बारे में और स्टैंडिंग रॉक में डाकोटा पहुंच पाईपलाइन विरोधों के देशी विरोधों के बीच एक स्पष्ट संबंध बनाने की कडियां निर्मित की हैं।

टोरंटों सहित, शहरी केंद्रों में पर्यावरणीय न्याय, ने यथास्थिति पर सवाल उठाने के लिये ढांचा प्रदान करने और शहरी विकास की असमान प्रक्रियाओं के समाधानों की ओर बढ़ाया है। इस तरह के रूझान नस्लीय कम–आय वाले समुदायों में व्यवस्थित विनिवेश से जुड़े है, जो कम हरित स्थान और कम स्वस्थ भोजन के विकल्पो और साथ ही किफायती आवास की कमी, सार्वजनिक परिवहन तक सीमित पहुंच और policing की अधिक मात्रा और सामाजिक कलंक में परिणित होता है।

कनाडाई पर्यावरणीय समाजशास्त्री, दुनिया भर के अन्य लोगों की तरह, यह जांच रहे हैं कि पर्यावरणीय गैर–सरकारी संगठन, मीडिया और सरकारी नीतियां कैसे हाशिये के कनाडाई लोगों की जरूरतों को देखते और जवाब देते हैं। उनका काम उजागर करता है कि कैसे पर्यावरणीय अन्याय तब स्पष्ट बन जाता है जब हम पूछते हैं कि किसको क्या मिलता है और किस तरीके से।

संसाधनों और शक्तियों की पहुंच में असमानतायें सक्रियता की कई वर्तमान धाराओं को पार करती है और उनको एक कर सकती है। टोरंटों में, और विश्व–स्तर पर, सफेद विशेषाधिकार आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरण संबंधी लाभों से जुड़ा है। निर्णय लेने के ऐतिहासिक स्वरूप मौजूदा शक्ति संरचनाओं को मजबूत करते और यथास्थिति को बनाये रखते हैं, ताकि जब अच्छे इलाकों में सुधार होता है, गरीब इलाके और अधिक नीचे जाते हैं।

हाल ही में टोरंटों में, पर्यावरणीय न्याय को अलबर्टा के गंदे तेल के टार सैंड विस्तार के खिलाफ और वैश्वीकरण की बढ़ती असमानताओं के खिलाफ विरोध में एक बैनर की तरह इस्तेमाल किया गया। जैसा कि बहुराष्ट्रीय कंपनियां अपनी उत्पादन सुविधाओं/इकाईयों को कम विकसित देशों में स्थानांतरित करती हैं, जहां मजदूरी कम है और पर्यावरण संबंधी नियम कम कठोर हैं, वैश्विकरण गरीब और नस्लीयग्रस्त–जो कि अपने कार्यस्थलों, घरों और समुदायों में पर्यावरण–संबंधी अन्याय के चपेट में आसानी से आ सकते हैं–स्थानीय रूप से और साथ ही वैश्विक रूप से जोड़ता है।

जलवायु बदलाव पर्यावरणीय न्याय कार्य कर रहे समाजशास्त्रीयों के लिये एक वैश्विक चिंता है। कनाडा में, एक आर्थिक ईंजन के रूप में जीवाश्म ईंधन पर कनाडा की निर्भरता से जलवायु न्याय की राजनीति पेचीदा हो गयी हैं, जिसके लाभार्थी पाइपलाईन विस्तार के संबंध में जलवायु परिवर्तन के प्रभावों और चिंताओं को दूर और प्रबंधनीय रूप में देखते हैं। इसके विपरीत, कम–विकसित देशों में जो कि प्राकृतिक आपदाओं के लिये अधिक असुरक्षित है, अधिकतर कमजोर बुनियादी ढांचे, बड़ी तटीय बस्तियों और निर्वहन मछली पकड़ने और कृषि पर अधिक निर्भरता के साथ, कार्बन उत्सर्जन के कारण जलवायु परिवर्तन के प्रभाव अधिक निकट दिखाई पड़ते हैं। इस प्रकार, वैश्विक नतीजों के संदर्भ में कनाडा में स्थानीय ऊर्जा के बारे में फैसले बनाने की बहुत जरूरत हैं।

साथ लेकर इन उदाहरणों से पता चलता है कि पर्यावरणीय न्याय के कम से कम तीन पहलू हैं जो इन संकट और विरोधों के समय में प्रतिबद्ध समाजशास्त्र को सूचित कर सकते हैं।

पहला, समाजशास्त्रीयों को अंतर्विषयक दृष्टिकोणों के लिये खुलने की जरूरत है। पर्यावरणीय न्याय गुणात्मक, संख्यात्मक, स्थानिक और कानूनी पद्धतियों पर आधारित है और भूगोल, कानून, शहरी नियोजन, सार्वजनिक स्वास्थ्य और समाजशास्त्र के सैद्धांतिक रूपरेखाओं में स्वयं को स्थापित करता हैं। कुछ पर्यावरणीय न्याय शोध उनके उद्धरणों और अनुभवों को उजागर करने पर ध्यान केंद्रित करते हैं जो पर्यावरणीय जोखिमों, नस्लीयता और अन्य अक्सर अनदेखे दमनों से ग्रसित हैं। ये छुपे हुये उद्धरण परिवर्तन की प्रक्रिया के अध्ययन के एक महत्वपूर्ण शुरूआती बिंदु हैं।

दूसरा, समाजशास्त्रीयों को सरकार और निजि हितधारकों से सामाजिक और पर्यावरणीय नीति सुधारों की वकालत करने की आवश्यकता है। सामाजिक और पर्यावरणीय समस्याओं की हमारी समझ लगातार विकसित हो रही है, और स्थानीय और वैश्विक स्तर पर जलवायु परिवर्तन से जुड़े हुये स्वास्थ्य, आर्थिक और पर्यावरणीय जोखिमों से असमानुपातिक रूप से प्रभावित असुरक्षित जनसंख्या को बचाने के लिये जलवायु न्याय हस्तक्षेप की जरूरत है।

अंत में, नीति के क्रियान्वयन से परे, अपवर्जित समुदायों के दृष्टिकोण से नयी नीतियों की निगरानी और मूल्यांकन में समाजशास्त्रीयों के लिये निभाने के लिये एक भूमिका है, एक कार्य जो अंर्तअनुभागीय दृष्टिकोण से लाभ देगा। पर्यावरणीय न्याय के लेंस का उपयोग करके, समाजशास्त्री नीतियों और एक अधिक न्यायपूर्ण दुनिया के निर्माण के बीच के संबंध को मजबूत करने में मदद कर सकते हैं। ■

चेरिल तिलकसिंह से पत्र व्यवहार हेतु पता <teeluck@arts.ryerson.ca>

> अन्य किसी समय जैसे में (पूर्णतया कभी नहीं) समाजशास्त्र

कैरेन फोस्टर, डलहाउसी विश्वविद्यालय, कनाडा

हैलिफैक्स, नोवा स्कोटिया, कनाडा में फरवरी 2017 में एक घर में देखा गया। केरन फोस्टर द्वारा फोटो

जैसा कि हम जानते हैं कि अनेक लोगों ने वर्ष 2016 को विश्व के अंत के रूप में चिन्हित किया था। ब्रैक्सिट वोट और ट्रम्प की चुनावी जीत ने जनवादी विद्रोह को उत्पन्न किया, फिलीपींस में राष्ट्रपति दुतेर्ते की हिंसा एवं निरंकुश सरकारों तथा राजनीतिक दलों के पुनरूत्थान ने नवउदारवादी लोकतांत्रिक पूंजीवादी व्यवस्था को हिला दिया। राजनीतिक लहरों के साथ–साथ हमने 'झूठी खबरों' का प्रसार तथा दुनिया भर में 'राजनीतिक शुद्धता' के विरूद्ध बढ़ती प्रतिक्रिया को देखा है जिसे कुछ लोग एक नये 'उत्तर–सत्य' युग की संज्ञा देते हैं।

ऐसा लगता है कि तथ्यों का उतना प्रभाव नहीं होता जितना कि मतों एवं भावनाओं से फर्क पड़ता है। 'दूसरों' के लिए सहानुभूति हमेशा कम समय के लिए होती है और विश्व में सदैव यह देखा गया है कि हक कुछ सबसे खराब मानव जनित अत्याचारों का जोखिम बार–बार उठाते हैं। इस तरह के राजनीतिक दौर में समाजशास्त्र उपहास का एक प्रमुख लक्ष्य बन जाता हैं, परंतु यदि हम समाजशास्त्रीय कल्पना का प्रयोग करते हैं, तो हम छिपी हुई सूक्ष्मता को भी देख सकते हैं तथा इसमें आशा और आगे क्या करना है, के बारे में संकेत छिपे होते हैं।

इतिहास में बिखराव देखना बहुत आसान हो सकता है, तथा निरंतरता को देखना बहुत मुश्किल। समाजशास्त्र और उसके सहयोगी विषयों ने कार्य का अंत, इतिहास का अंत एवं यहां तक कि स्वयं समाजशास्त्र के अंत से भी पहले अनेक प्रकार के विघटन, समाप्ति तथा शुरूआत की घोषणा की थी। हालांकि आगे की जांच और समय बीतने के साथ इस प्रकार के दावे शांत हो गये। हर बिखराव के साथ सदैव निरंतरता की संभावना भी बनी रहती है। फोको का कथन सत्य प्रतीत होता है : प्रत्येक क्षण 'किसी भी समय की तरह एक समय होता है या एक ऐसा समय होता है जो किसी अन्य की तरह कभी नहीं होता है।'

समाजशास्त्रियों–विशेष रूप से ऐतिहासिक समाजशास्त्र से सम्बद्ध समाजशास्त्रियों–के रूप में हमारा काम पहले जो कुछ हुआ है के साथ अब क्या हो रहा है, के बारे में पता लगाना होता है ताकि हक छिपे हुए कारणों को अथवा बाधा उत्पन्न करने वाले कारकों को दोष देना न भूल सके। उदार लोकतांत्रिक समाज की हानि अपने विनाश के बीच आंशिकतः स्वयं अपने भीतर रखने पर हमें शोक करने के लिए अच्छी तरह से मजबूर कर सकती

> >

है, ठीक इसी तरह इसके पुनर्निर्माण के लिए जोकि इसका उत्तर नहीं था।

यहां तक कि समाजशास्त्र का समाज के साथ प्रत्यक्ष संबंधों के रूपांतरण–शासित राज्य, नागरिक संगठनों या विश्वविद्यालय के माध्यम से–की ऐतिहासिकता को उचित ढंग से तथा आलोचनात्क ढंग से मूल्यांकित करना चाहिए। हमारे विषय के विशेषज्ञों एवं विचारों ने शक्ति के साथ अस्थिर प्रकृति के सम्बंध बनाए हुए हैं, न तो वे पूर्णतः अभिजात वर्ग 'में' शामिल होते हैं और न ही कभी पूर्णतः अभिजात वर्ग से 'बाहर' होते हैं।

उदाहरण के लिए, प्रथम विश्व युद्ध के बाद यूरोप में राष्ट्रीय सीमाओं को फिर से रेखांकित करने के लिए अमेरिकी सरकार ने जिन विशेषज्ञों को भर्ती किया था उनमें समाजशास्त्री सबसे अग्रणी थे। परंतु उनमें से अनेक, जिनमें शिकागो विश्वविद्यालय के डब्ल्यू. आई. थामस भी सम्मिलित थे, को उनके पदों से हटा दिया गया और अंतराष्ट्रीयता, राष्ट्रीय अस्मिता एवं सामाजिक व्यवस्था के विषय में उनके विचार जो कि अंतराष्ट्रीयता पर मित्र राष्ट्रों के विचारों से विरोधाभासी थे, पर उन्हें सार्वजनिक रूप से शर्मिंदा किया गया।

महत्वपूर्ण बात यह है कि थॉमस एवं अन्य समाजशास्त्री जो उत्तर–युद्ध नीति बनाने वाले समूहों द्वारा अस्वीकृत कर दिए गए थे, अपनी सरकार के एजेंडे में समाजशास्त्र को कैसे सम्मिलित किया जाये, के बारे में चिंतित नहीं थे। सरकारी सेवा में सच्चा बने रहने के लिए उन्होंने अपने शोध कार्य के साथ समझौता नहीं किया। हालांकि, उन्होंने गरीबों, अप्रवासियों और हाशिए पर स्थित अन्य लोगों के साथ प्रत्यक्ष रूप से काम किया, वास्तव में उनकी रक्षा करने और उनके हितों को आगे बढ़ाने के लिए संस्थाओं का निर्माण किया।

सरकार और सामाजिक आंदोलनों के साथ समाजशास्त्र की कुछ उलझने विकट थी। यहां सुजनन विज्ञान संबंधी आंदोलन (यूजनिक्स आंदोलन) को एक स्पष्ट और आश्चर्यजनक उदाहरण के रूप में देखा जा सकता है। यहां तक कि उलझनें तुलनात्मक रूप से सौम्य लगती है, जैसे 20वीं शताब्दी के मध्य में हमारे विषय (समाजशास्त्र) की केन्द्रीयता सामाजिक सम्बन्धों का संप्रदाय था जो मानवीय दुःखों को समझने में समाजशास्त्र का प्रयोग करता था–इस मामले में, कार्य के औद्योगिक संगठन का कर–भार लोगों और समाज पर था।

इस प्रकार के ऐतिहासिक उदाहरण हैं जिनके मूल्यांकन किये जाने की आवश्यकता है, यदि समकालीन समय में निरंकुशतावाद और फासीवाद के बारे में हमारा सर्वाधिक बुरा डर सच हो जाए। हम वर्तमान में समाजशास्त्र को व्यवहार में लाने के बारे में चिंतित हैं। यदि यह एक प्रोफेशन (पेशे) के रूप में उभरता है तो यह सबसे खराब होगा और तब हमें नैतिकता के नियमों की समीक्षा करने, परिष्कृत एवं मजबूत करने की आवश्यकता होगी ताकि हम अपने कौशल और ज्ञान को अन्याय की सेवा में न लगाएं। समाजशास्त्रियों को निरंकुशतावाद पर विशेषज्ञता प्राप्त हैं, परंतु उनके द्वारा हमेशा बिना किसी मतलब के इसका विरोध किया जाता है।

समाजशास्त्रियों को यह भी स्वीकार करना होगा कि समाजशास्त्र कभी भी सामाजिक जीवन को निर्देशित करने वाली शक्तियों व संस्थाओं के एकल संबंधों से जुड़ा एक समरूपीय व वृहद् विषय नहीं था। यह ज्ञान, पद्धतियों एवं सिद्धांतों की एक बहुमुखी इकाई के रूप में एक ही समय में किसी के पक्ष में और किसी के विरूद्ध नहीं होता।

इस तथ्य पर विचार करें कि अमेरिकी राष्ट्रपति के चुनाव के मद्देनजर, जब हम मानते थे कि कोई भी समाजशास्त्रीय व्याख्या सुनना नहीं चाहता था, समाजशास्त्री आर्ली रसेल होच्शचाइल्ड की पुस्तक 'स्ट्रेंजर्स इन दियर ऑन लैंड' (अपनी खुद की भूमि पर अजनबी), जिसमें ट्रम्प के विशिष्ट मतदाताओं का विश्लेषण किया गया है, न्यूयार्क टाइम्स की सबसे अधिक बिकने वाली पुस्तक बनी।

अन्य कामों के अलावा, होच्शचाइल्ड का नवीनतम काम ग्रामीण समाजशास्त्र से संबंधित है, समाजशास्त्र की एक उप–शाखा जो सार्वजनिक नीति को प्रभावित करने के पर्याप्त अवसर प्रदान करती है। परिधिमूलक समुदायों, जहां वैश्वीकरण की कीमत हमेशा लाभ से अधिक होती है, में काम करने वाले नीति–निर्माता अपनी मूलभूत मान्यताओं में से कुछ को स्वीकार कर रहे हैं–उदाहरण के लिए, किसी भी कीमत पर आर्थिक विकास की कामना, निर्यात–प्रधान अर्थव्यवस्थाओं की व्यवहारिकता तथा यह धारणा कि बड़ा तो स्वतः ही बेहतर होता है–अब और अधिक उपयोगी अथवा मान्य नहीं है। उन्होंने यह भी अनुभव किया कि जब सार्वजनिक या संस्थागत नीति सामूहिक व्यवहारों, मूल्यों, मानदंडों और विश्वासों पर ध्यान नहीं देती है तब क्या होता है।

दुनिया भर के लोगों का एक आलोचनात्मक समूह, शिक्षाविद् और नीति–निर्माता वैकल्पिक आर्थिक विचारों का निर्माण कर रहे हैं तथा बौद्धिकता एवं सक्रियता का बढ़ता आकार पारिस्थितिकी एवं आर्थिक आधारों पर, आर्थिक विकास के अंतहीन प्रयासों पर सवाल उठा रहा है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर, एक तेजी से बढ़ रहा समुदाय आर्थिक सफलता के उपायों को अस्थिर करने के लिए काम कर रहा है, जैसे जीडीपी, जिसने घरेलू और अंतरराष्ट्रीय नीति को बहुत अधिक प्रभावित किया है। ऐसे अस्थिर प्रयास 'अन्य विश्व' को खोलने की क्षमता रखते हैं–हालांकि उनके पास उसी थके हुए अंत की ओर बढ़ने की क्षमता भी है, वे आलोचना के लिए होते हैं।

यही कारण है कि समाजशास्त्री का काम कभी नहीं किया जाता है। अभी भी समाजशास्त्रीय ज्ञान के लिए भूख है। अगर हम समझते हैं कि हमारे विचारों ने आकर्षण खो दिया है, या हमारे विषय उच्च स्तर से गिर गये हैं तो हमें अधिक स्पष्ट रूप से सोचना चाहिए कि वास्तव में हमें क्या बदलाव लाना है। यह स्पष्टता विचारों की गुणवत्ता के माध्यम से ही आएगी जो समाजशास्त्री को उसकी विविधता के बावजूद समाजशास्त्रीय कल्पना के माध्यम से सुसंगत बना देती है। ■

कैरेन फोस्टर से पत्र व्यवहार हेतु पता
<Karen.Foster@Dal.Ca>

> संकटग्रस्त समय में मीडिया को साथ जोड़ना

फ्यूकी कुरासावा, यॉर्क विश्वविद्यालय, कनाडा और आईएसए की रिसर्च कमेटी ऑन सोशियोलाजिकल थ्योरी (RC16) के बोर्ड की सदस्य

इस विशेष क्षण में समाजशास्त्रीयों को मीडिया के साथ जुडने के लिये आमंत्रित करना मुश्किल ही अनूकूल प्रतीत होता है। अमेरिकी जनवादी राष्ट्रवादों और धार्मिक कट्टरवादिताओं का प्रसार राजनीतिज्ञों और मशहूर हस्तियों – श्रेणियां जो इनफोटेन्मेंट के युग में अधिकाधिक धुंधली होती नजर आती हैं– को किसी भी प्रकार की निपुणता के प्रति अज्ञानता या द्वेषभाव खुले आम दिखाने के लिये उत्साहित करता है। समाजशास्त्री राजनैतिक दुश्मनी या प्रचलित उदासीनता का सामना कर सकते है, क्योंकि हम असुविधाजनक सच्चाइयों को उजागर करते हैं जो कि संजोये गये सिद्धांतों, या सामान्यीकृत, (लौकिक और धार्मिक) पवित्र, और सामाजिक संसार के बारे स्वप्रमाणित दिखायी देने वाले सामान्य ज्ञान का भेदन, को कमजोर और या उसका चारों ओर से खंडन कर सकते हैं।

मीडिया से जुडाव का आव्हान समाजशास्त्रीय समुदाय के भीतर एक व्यापक मान्यता के खिलाफ भी हो जायेगा जो मीडिया संगठनों को कॉर्पोरेट और राज्य शक्ति के साधनों के रूप में देखते हैं, या जो समाजशास्त्रीयों, जो समाचार समूहों के साथ काम करते हैं, को डरपोक, सतही, और प्रचार–इच्छुक अनुरागी जो गंभीर विद्वतापूर्ण कार्य करने के लिये प्रतिबद्ध नहीं समझते है। पिछले कुछ सालों में, भी, सामाजिक मीडिया प्लेटफॉर्मों के माध्यम से सार्वजनिक क्षेत्र में अकादमिक हितों के लिये "कैसे करें" मार्गदर्शिकाओं की एक वृद्धि ने, अनजाने में एक धारणा को पोषित किया है कि परंपरागत मीडिया सांस्कृतिक और तकनीकी अप्रचलन के कचरा पात्र में फिसलती जा रही है।

इन दलीलों में जो कुछ भी सच का तत्व हो, मीडिया से अलगाव समाजशास्त्रीयों को संचार के माध्यमों की पहुंच से वंचित कर देगा। इस समय में मॉस मीडिया की पहुंच बेमिसाल बनी हुई है– कि महत्व पूर्ण सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक और आर्थिक बहसों पर समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य को अधिक व्यापक रूप से सुने जाने की जरूरत है।

इसके अलावा, मीडिया के साथ जुडाव सार्वजनिक और पेशेवर समाजशास्त्रीयों को बेहतर बनाता है। साथ ही यह हमें विचारों, रायों, और अनुभवों की एक विस्तृत श्रंखला, जो अन्यथा उपलब्ध नहीं होगा, का सामना करने में सक्षम बनाता है, चिंतन करने, ढांचा बनाने और शैक्षिक संभाषण के अनभ्यस्त दर्शकों को हमारा काम प्रस्तुत करने के लिये विवश करता है।

एक वैश्विक परिप्रेक्ष्य से, कनाडा का अनुभव मूल्यवान सबक प्रदान करता है। इसके दो प्रभावी, भाषायी रूप से– आधारित सार्वजनिक क्षेत्र दो सबसे आम तरीके शामिल और प्रतिबिंबित करता है जिस तरह से दुनियाभर के मीडिया संगठन समाजशास्त्रीयों को देखते हैं– और, इसके विपरीत, दो रणनीतियों का उदाहरण देता है जिसके माध्यम से पेशेवर विशेषज्ञों या सार्वजनिक बुद्धिजीवियों के रूप में समाजशास्त्री समाचार समूहों के माध्यम से सार्वजनिक चर्चाओं में भाग लेते हैं।

अंग्रेजी बोलने वाले कनाडा में, बाकी की एंग्लो–अमेरिकन दुनिया की तरह, पेशेवर समाजशास्त्र अनुशासनात्मक अभ्यास का एक अधिक प्रचलित तरीका है। यहां, समाचार समूह प्राथमिक रूप से समाजशास्त्रीयों को कवरेज प्राप्त कर रहे एक सटीक विषय पर विशेषज्ञों के रूप में चाहते हैं (कहने के लिये, सीरिया के शरणार्थीयों का

> >

समाधान, या सामाजिक मीडिया से प्रेरित उच्च माध्यमिक विद्यालयों में उत्पीडन)। उसी समय, अमेरिकी और ब्रिटिश प्रवृतियों के अनुरूप, एंग्लो–कनाडाई समाजशास्त्र अर्थशास्त्र, मनोविज्ञान और राजनीतिक विज्ञान के सामने अपेक्षाकृत अधीनस्थ सार्वजनिक स्थिति तक ही सीमित रह गया है, जिनके पेशेवरों ने परंपरागत रूप से प्रतिष्ठित राष्ट्रीय टेलीविजन और रेडियो पैनलों या समाचार पत्रों के रिकॉर्डों में अधिक उपस्थिति का आनंद उठाया हैं।

फ्रेंच बोलने वाले क्यूबेक में, दूसरी ओर, समाजशास्त्र एक सार्वजनिक भूमिका रखता है जो इसके एक पेशेवर वाले से प्रतिद्वंदिता करता है, और प्रायः आगे बढ जाता है, –वैसे ही जैसा ये लैटिन अमेरिका और महाद्वीपीय यूरोप में करता है जहां यह विषय अपेक्षाकृत उच्च स्तर की सामाजिक–सांस्कृतिक आदर और बौद्धिक प्रतिष्ठा का लाभ उठाता है। समाजशास्त्रीयों ने 1960 के दशक के anti-clerical और आधुनिकीकरण करने वाले "Révolution tranquille" के बाद से francophone Québécois सामूहिक पहचान और राष्ट्रवााद के सामाजिक और सांस्कृतिक आधारों की अभिव्यक्ति के महत्वपूर्ण तरीकों में योगदान दिया है। नतीजतन, क्यूबेक में समाजशास्त्री सार्वजनिक बुद्धिजीवीयों और पत्रकारों के रूप में देखे जाने लगे। अक्सर, पत्रकार या मेजबान वृहद सामाजिक और राजनीतिक प्रश्नों पर राय देने के लिये, किसी एक दिये गये विषय के बारे में "एक समाजशास्त्री के रूप में, आप क्या सोचते हैं"? यह पूछते हुये समाजशास्त्रीयों के पास आते हैं।

यद्यपि उपरोक्त टिप्पणीयां कनाडा के संदर्भों से निकली हैं, समाजशास्त्र की स्थिति का दोहरा चरित्र– या तो एक विशिष्ट पेशे या एक सार्वजनिक बौद्धिक उद्देश्य के रूप में – अन्य अनेक परिस्थितियों में सामान्यीकृत किया जा सकता है। इसके अलावा, क्योंकि उनके जोखिम और पुरस्कार अलग होते हैं, ये कार्य करने का प्रत्येक तरीका मीडिया से जुडाव के लिये एक विशिष्ट रणनीतियों के समूह की मांग करता है– और प्रत्येक सभी पेशेवरों के लिये मूल्यवान सबक प्रदान करता है।

एंग्लो–अमेरिकन दुनिया में, जहां समाजशास्त्र की वैद्यता कम अच्छे से स्थापित और सैद्धांतिक रूप से पेशेवर विशेषज्ञता में आधारित है, तीन नियम संकाय का प्रचार करने के प्रयास में मदद कर सकते हैं:

- **अपनी स्थिति को समझें।** अपने राष्ट्रीय मीडिया के वैचारिक और पेशेवर क्षेत्रों का अध्ययन करें, यह समझने के लिये कि आपसे क्या भूमिका निभाने के लिये कहा जा सकता है। निर्माता या पत्रकार क्यों आपकी मांग कर रहें हैं; किस हद तक आपकी विशेषज्ञता निवेदित है; और एक उपस्थिति के दौरान या एक लेख में आपके बयान की रूपरेखा कैसे तैयार की जायेगी?
- **विविध आहार को अपनाओ।** मीडिया समाजशास्त्र के प्रतिनिधि निदर्शन के विश्लेषणात्मक सिद्धांतों को साक्षात्कारों पर लागू करें जो आप कम प्रतिष्ठित और कम जानकारी वाले समाचार स्त्रोंतों जैसे सामुदायिक रेडियो स्टेशनों, छोटे समाचार पत्रों, इत्यादि से बात करते हुये दे सकते है। यह आपको ऐसे दर्शकों तक पहुचंनें की अनुमति देती है जो हो सकता है कि आपके साथ परिचित ना हो, और किसी विशेष विषय पर एक समाजशास्त्रीय सुविधा के बिंदु के द्वारा परेशान हो।
- **राय सस्ती होती हैं, परंतु (समाजशास्त्रीय) तथ्य बहुत मेहनत से कमाये जाते हैं।** सामाजिक मीडिया के समय में, सभी के पास एक राय है और एक मंच है जिससे उसको प्रसारित किया जाये। एक पेशेवर विशेषज्ञ के रूप में आपकी differentia specifica, फिर, शोध निष्कर्षों पर अपनी बात रखने, लोकप्रिय गलत धारणाओं का सामना करने के लिये तथ्यों को प्रस्तुत करने, और साथ ही एक विशेष घटना को इसके वृहद सामाजिक–ऐतिहासिक और तुलनात्मक संदर्भ में स्थित करने की क्षमता से स्फुटित होती है।

लैटिन अमेरिका, महाद्विपीय यूरोप और francophone क्यूबेक जैसे स्थानों के लिये, जहां समाजशास्त्री नियमित रूप से सार्वजनिक बुद्धिजीवी की भूमिका निभाते हैं और जहां मीडिया से जुडाव पेशेवर विशेषज्ञता की ओर मोड देता है, मै दो प्रस्ताव पेश करता हूं:

- **सामना करने को आकार दो।** चूंकि पत्रकार और निर्माता सामान्यतः आपके साथ एक पूर्व साक्षात्कार करेंगें और आपकी राय को बहुत महत्व देंगें, उस दृष्टिकोण को ढालने का अवसर लेंगें जो कहानी लेगी। पूछताछ के वैकल्पिक तरीकों का सुझाव दो, साक्षात्कार के लिये दूसरे व्यक्ति की अनुशंसा करो, या बाद में विषय पर रिपोर्ट, डेटा और यहां तक कि (ध्यान दें!) रेफरीड पत्रिका के लेख या पुस्तक भेजकर ध्यान रख सकते हैं।
- **अपनी नजरें पुरस्कार पर रखो।** यह मानते हुये कि आपको एक सार्वजनिक बुद्धिजीवी के रूप में देखा जायेगा, दुनिया की स्थिति के बारे में व्यापक बयान देना या कारण संबंधों पर अनुमान लगाना ललचाने वाला होगा। इसके बजाय, साक्षात्कार को उन मुददों पर मोड दो जो आपकी विशेषज्ञता के क्षेत्रों को छूते हैं। ऐसा एक सटीक तरीके से करों जो मुख्य बिंदुओं पर ध्यान देता हैं, जो कि सुलभ है, तब भी ना ही हल्का करते हुये और ना ही 'आसान करते' हुये एक विश्लेषण प्रदान करता है।

एक अंतिम बिंदु सभी परिस्थितियों पर लागू होता हैः ठीक समय ही सब कुछ है। कठिन समयसीमायें और अस्थायी समाचार योग्यता मीडिया के लिये अनुल्लंघनीय है। आपको उनके अंतिम समय के अनुरोधों को समायोजित करने और आपके अपने कार्यक्रम के बीच संतुलन खोजने की जरूरत है। पत्रकार, निर्माता, और संपादक आपके उनको साक्षात्कार देने का समय पाने और आपके op-ed piece को प्रकाशित करने का इंतजार नही करेगें और ना कर सकते हैं, जब एक बार उनकी कहानी प्रस्तुत की जा चुकी हो या जनता की चेतना से धुधंली हो गयी हो।

यह सुझाव देने के बजाय समाजशास्त्रीयों को बातूनी या थकाऊ पंडित बन जाना चाहिये, मैं मीडिया के साथ नये सिरे से सहयोग का तर्क दूंगा। यह हमें समाजशास्त्र के सार्वजनिक व्यवसाय और एक पेशेवर अनुशासन, दोनों उददेश्यों के रूप में विकसित होने में योग्य बनायेगा, एक जनसंपर्क चक्र के प्रकार, उद्यमीय नैतिकतायें, या सनकी अवसरवादिता का एक विकल्प जो कि अक्सर उन मुश्किल समयों के ज्ञान को पार कर जाता है। ■

फ्यूकी कुरासावा से पत्र व्यवहार हेतु पता
<kurasawa@yorku.ca>

> अमरीकी विश्वविद्यालय : अप्रवासी संघर्षों के लिए नये स्थल?

सैंड्रा पोर्टोकेरों और **फ्रांसिस्को लारा गार्सिया,** कोलंबिया विश्वविद्यालय, यूएसए

अमरीकी विश्वविद्यालयों के छात्रों ने माँग की कि उनके परिसर बिना दस्तावेज के छात्रों के लिए आश्रय स्थल हों।

जून 15, 2012 को, ओबामा प्रशासन ने Deferred Action for Childhood Arrivals (DACA) कार्यक्रम के सृजन की घोषणा की, जिसने 1.7 मिलियन युवा गैर–दस्तावेजी प्रवासियों जिन्होंने संयुक्त राज्य में बच्चों के रूप में प्रवेश किया था, को निर्वासन से नवीनीकरण करने योग्य द्विवर्षीय प्रशासनिक राहत प्राप्त करने की अनुमति देने के लिये अमेरिका प्रवासी नीति को बदल दिया। DACA इन युवा गैर–दस्तावेजी प्रवासियों की वर्क परमिट पात्रता को भी बढा देता है और उच्च शिक्षा के लिये अधिक पहुंच प्रदान करता है। संयुक्त राज्य के अधिकांश निवासी स्वतंत्रताओं को मान कर चलते हैं जैसे कि निर्वासन के डर के बगैर चलने का विशेषा–धिकार, नौकरियों के लिये आवेदन करना और शिक्षा प्राप्त करना। DACA इन युवा और गैर–दस्तावेजी के लिये ये स्वतंत्रतायें बढा देता है और कम से कम स्थगित अवधि के दौरान लोगों को इन विशेषाधिकारों का

> >

आनंद लेने की अनुमति देता है जो संयुक्त राज्य को अपना घर समझते हैं ।

संयुक्त राज्य में राष्ट्रपति के रूप में डोनाल्ड ट्रंप के चुनाव के बाद, मन की शांति के बदले चिंता ले ली गयी। प्रवासी–विरोधी बयानों से उपजा डर जो ट्रंप के अभियान की विशेषता थी, जंगल की आग की तरह फैल गया। सबसे जल्दी, DACA लाभार्थीयों को डर था कि ओबामा प्रशासन के द्वारा बढायी गयी सुरक्षाओं को तुरंत रद्द कर दिया जायेगा। परंतु चिंता की भावनायें बहुत आगे निकल गयीः सभी प्रस्थितियों के प्रवासियों को डर है कि नये कठोर प्रवासी प्रतिबंध उन सभी को प्रभावित कर सकते हैं।

जनवरी 27, 2017 को इन आशंकाओं की पुष्टि हो गयी, जब राष्ट्रपति ने सात मुस्लिम–बहुल देशों के लोगों को देश में प्रवेश से रोकने वाले एक कार्यकारी आदेश पर हस्ताक्षर किये। आदेश की व्यापक भाषा और असमान कार्यान्वयन के कारण, सभी देशों और कानूनी प्रस्थितियों के प्रवासी –शरणार्थीयों और अमेरिकन नागरिकों सहित –मुश्किल चक्कर में फंस गये और देशभर में विरोध फूटने लगे। सभी प्रवासी, चाहे वो शरणार्थी हो, विद्यार्थी वीजा धारक और स्थायी निवासी, एक ऐसे संयुक्त राज्य में उठे, जहां ये संभावना बहुत अधिक तेजी से बढी है कि उनसे पूछताछ की जा सकती है, हिरासत में लिया जा सकता है और यहां तक की उन्हें देश में प्रवेश करने से भी रोका जा सकता है। राज्य विभाग निर्देशों ने अमेरिकी नागरिकों के प्रवेश भी प्रतिबंधित कर दिया जिनके पास प्रतिबंध वाली सूची के देशों की दोहरी नागरिकता थी ।

रातोंरात, जोखिम ना सिर्फ गैर–दस्तावेजी के लिये, बल्कि अप्रवासी नाम के साथ लगभग किसी को भी शामिल करने के लिये बढा हुआ दिखाई दिया। यद्यपि Seattle में एक संघीय जिला न्यायालय ने आदेश को शीघ्र ही रोक दिया, पूरे प्रकरण ने सुझाया कि ट्रंप व्हाइट हाउस की प्रवासी नीति विशिष्टताओं पर कम ध्यान देगी– एक चिंता जिस को मार्च 6, 2017 पर बल मिल गया, जब राष्ट्रपति के नये कार्यकारी आदेश ने छह प्रमुख रूप से मुस्लिम देशों के नागरिकों को संयुक्त राज्य में प्रवेश से रोक दिया था, जो कई पीढियों की प्रवासी नीतियों में सबसे कठोर हस्तक्षेपों मे से एक था।

ये संघर्ष कहीं भी इतने अधिक स्पष्ट नहीं हुये, शायद, जितने अमेरिकी कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में। संस्थागत रूप से, निजि और सार्वजनिक विश्वविद्यालय दोनों अपने शिक्षकों, प्रशासनिक व्यक्तियों और छात्र निकायों में अधिक से अधिक प्रवासियों के विजातीय समूहों पर ध्यान केंद्रित करते हैं। ओबामा के प्रशासन के DACA कार्यक्रम ने इस विविधता का विस्तार किया थाः DACA प्राप्तकर्ता, अंत में कॉलेजों में दाखिला ले सकते थे, विश्वविद्यालयों से संबद्ध हो सकते थे जिनके कमरे अंतर्राष्ट्रीय छात्रों से भरे हुये थे और जिनकी कक्षायें सबसे अधिक शिक्षित प्रवासी वर्ग से निर्मित प्रोफेसर समुदाय के नेतृत्व में चल रही थी। कोई और समकालीन संस्था विभिन्न वर्गों, वर्णों और नृवंश और इस प्रकार के विविध प्रवासी प्रस्थिति वाले इतने सारे लोगों को इकठ्ठा नहीं कर सकती है।

इस प्रकार, यह आश्चर्य की बात नहीं है कि पूरे देश के विश्वविद्यालयों ने यात्रा प्रतिबंधों पर आपत्ति जताते हुये अनेक आवाजें उठायी हैं। 13 फरवरी 2017 को, सभी Ivy League विश्वविद्यालयों सहित 16 विश्वविद्यालयों द्वारा तैयार कार्यकारी आदेश को चुनौती देते हुये एक न्यायिक संक्षिप्त विवरण न्यूयोर्क के Eastern District के अमेरिकी जिला न्यायालय में दायर किया गया। संक्षिप्त विवरण में जोर दिया गया कि रक्षा और सुरक्षा के मुद्दों को ऐसे तरीके से संबोधित किया जा सकता है जो कि सीमाओं के पार विचारों और लोगों के मुक्त प्रवाह और हमारे विश्वविद्यालयों में प्रवासियों के स्वागत सहित उन मूल्यों के साथ संगति में हो जिनके लिये अमेरिका हमेशा खड़ा रहा है।

इसी प्रकार से, अमेरिकन समाजशास्त्रीय परिषद् (ASA) ने ट्रंप के प्रारंभिक कार्यकारी आदेश का विरोध करते हुये और सामूहिक कार्यवाही का प्रभावी क्रियान्वयन कैसे किया जाये, के लिये सुझाव शामिल करते हुये जनवरी 30, 2017 को एक बयान जारी किया। समाजशास्त्रीयों के रूप में, ASA ने हमें याद दिलाया, हम संगठनों के एक बडे नेटवर्क में जुडे हुये है, एक नेटवर्क जो अधिक प्रभावी हो सकता है यदि हम सक्रिय हो जाये और सहयोग लें। एक पल जब द्वेषपूर्ण प्रवासी–विरोधी बयानबाजी करने वाले एक व्यक्ति को संयुक्त राज्य का राष्ट्रपति चुना गया हो, समाज के ताने बाने में शैक्षिक संस्थायें अवलोकनकर्ता से सक्रिय प्रतिभागियों में विकसित होने के लिये धकेली जाती है, चिंतन करते हुये, जैसा कि इसे माइकल बुरावे प्रस्तुत करते हैं[1], एक अद्वितीय स्थिति जो विश्वविद्यालय आज की दुनिया में, साथ–साथ समाज के अंदर और बाहर, साथ ही समाज में प्रतिभागी और समाज के अवलोकनकर्ता के रूप में रखते हैं। अलग तरह से रखा जाये, इन सार्वजनिक बयानों ने समाजशास्त्र के क्षेत्र को शक्ति को एक क्षेत्र बना दिया है।

विश्वविद्यालय परिसरों मे विभिन्न प्रवासी समूहों के बीच अप्रत्याशित क्रियाशीलता के ओर ध्यान देने के लिये समाजशास्त्री अच्छा काम करेंगे –एक नयी प्रघटना जो कि शायद अध्ययन–संबंधी परिस्थिति के लिये अनूठी है। आज, संस्थायें जो आम तौर पर प्रवासियों का प्रतिनिधित्व करती है या रोजगार देती हैं, विशिष्ट आर्थिक प्रोफाइल और शैक्षिक स्तर वाले प्रवासियों की वकालत करती हैंः उदाहरण के लिये, कृषि चैंबर सस्ते ओर प्रचुर कृषि श्रमिकों और गैर–दस्तावेजी दैनिक–श्रमिकों की गारंटी देने वाली नीतियों के लिये लॉबी करते हैं, जबकि सिलिकान वैली में तकनीकी फर्में अत्यधिक–कुशल इंजीनियरों और कम्प्यूटर वैज्ञानिकों के भर्ती और नौकरी पर शीघ्र करना चाहते हैं। परंतु अमेरिकन विश्वविद्यालय, अन्यथा विभिन्न प्रवासी समूहों के विविध विन्यास को एकत्र करके, ट्रंप एजेंडा के कुशल प्रतिरोध या प्रवासी सामाजिक आंदोलनों के लिये आयोजन स्थल के रूप में काम करने की असामान्य क्षमता रखते है। वैकल्पिक रूप से, सहयोग को अमल में लाने की विफलता, अंर्तअनुभागीय सहयोग की सीमाओं और अप्रवासी समूहों में मजबूत एकता नेटवर्कों को बनाने की चुनौतियों के लिये instructive, साथ ही, खुलासा करती हुई होगी।

सब मिलाकर, जैसा कि अमेरिकन नागरिक समाज ने ट्रंप युग की चुनौतियों का जवाब दिया है, समाजशास्त्रीयों को विश्वविद्यालयों के अंदर पार–प्रवासी समूह क्रियाशीलता का करीब से ध्यान रखना होगा। इसकी वृहद महत्ता के बारे में अनुमान लगाना अभी बहुत जल्दी होगा, परंतु जब समय आयेगा, हमें एक दृष्टिकोण की आवश्यकता होगी जो अमेरिकन विश्वविद्यालय की असामान्य स्थिति का सैद्धांतिकरण करे, यह याद रखते हुये कि विश्वविद्यालय विविध हितों के प्रतिच्छेदन का बहुआयामी स्थान हैं। ■

वेरोनिका पोर्टोकेरों से पत्र व्यवहार हेतु पता <svp2118@columbia.edu>
फ्रांसिस्को लारा गार्सिया से पत्र व्यवहार हेतु पता <f.laragarcia@columbia.edu>

[1] "Redefining the Public University: Developing an Analytical Framework," Transformations of the Public Sphere, Social Science Research Council, 2011.

> अर्जेंटीना के संपादकीय दल का परिचय

जुआन इग्नासियो पाओवानी, फ्यूचर रिसर्च (RC 07) और तर्क एवं पद्धतिशास्त्र (RC 33) पर आई. एस. ए. शोध समितियों के सदस्य, **पिलार पी पुइग** और **मार्टिन उर्त्सुन,** ला प्लाता राष्ट्रीय विश्वविद्यालय अर्जेंटीना

हम ग्लोबल डॉयलोग (GD) से कोलंबिया में मेजो एल्वारेज रिवादुल्ला के निरीक्षण में किये गये त्रुटिहीन स्पैनिश अनुवाद के 5 वर्षों के बाद 2016 में जुड़े। तब से, GD के प्रत्येक अंक ने एक चुनौती और अवसर दोनों प्रदान कियेः कई सप्ताहों के गहनकार्य के बाद हमें उपलब्धि की बहुत अच्छी भावना महसूस हुई हैं।

अनुवाद कभी भी सीधा–सपाट नहीं होता है। जैसा कि रोमानियन टीम ने हाल ही में देखा, एक प्रारंभिक समस्या नये शब्द होते हैं जिनका औपचारिक रूप से अभी तक अनुवाद नहीं किया गया है। लेकिन यह देखते हुये कि स्पैनिश भाषा व्यापक रूप से अकादमिक और अंतर्राष्ट्रीय संगठनों दोनों में इस्तेमाल होती है, हम अंग्रेजी समाजशास्त्रीय और राजनीतिक नये शब्दों के स्पैनिश समकक्षों के लिये कई स्त्रोतों–लेखों, रिपोर्टों, श्वेतपत्रों आदि पर भरोसा करते हैं। हालांकि, यह तथ्य कि स्पैनिश इतनी व्यापक है विशिष्ट चुनौतियां भी खड़ा करता है। स्पैनिश विश्वभर में 500 मिलियन मूलतः बोलने वालों के साथ 21 देशों की आधिकारिक भाषा है। हर संभाग में, यहां तक कि विद्वानों के मंडल में भी, भाषा का अपना एक विशिष्ट संस्करण होता है, जिसमें एक ही अवधारणा अलग अलग ढंग से कही जा सकती है। इस समस्या से निबटने के लिये, हम एक अधिक ''तटस्थ'' स्पैनिश सबसे अच्छे तरीके से कहने के लिये और कैसे स्थानीय और क्षेत्रीय भाषायी प्रकारों के साथ न्यायोचित बने, पर बहस करते हुये बहुत सारा समय बिताते हैं।

फिर भी, प्रस्तुतीकरण और ग्रहणीयता के अनेक रूपों की जटिलतायें एक विशिष्ट भाषा के परे जाती है। उदाहरण के लिये, एक अंग्रेजी शब्द का अनुवाद करने की कोशिश करते हुये जिसका साफ तौर पर ''पारदर्शी'' स्पैनिश समकक्ष है–उदारवाद–एक राजनेता के वैचारिक झुकाव को दर्शाते समय जटिल साबित हुआ। हमारा पहला विकल्प स्पैनिश शब्द लिबरल था। परंतु स्पेन और अधिकांश लैटिन अमेरिकन देशों दोनों में लिबरल का स्पष्ट रूढ़िवादी अर्थ है। एक विकल्प progresista (प्रगतिशील) शब्द का उपयोग करना था, परंतु कई लैटिन अमेरिकन संदर्भों में, यह शब्द वामंपथी विचारों को उजागर करता है। इस प्रकार, progresista का उपयोग यहां एक ऐसे राजनेता की ओर इंगित करने के लिये पूरी तरह से अनुचित होता जो, उदाहरण के लिये, परिवार के मूल्यों के बारे में खुले दिमाग वाला हो, परंतु फिर भी नवउदारवादी अर्थशास्त्र, व्यापक सैन्य हस्तक्षेप और समान नीतियों (जैसा कि विकसित देशों के तथाकथित उदारवादी करते हैं) का समर्थन करता हो। इस प्रकार के शब्द का अनुवाद करने में विभिन्न विकल्पों और उनके निहितार्थों की गहन जांच शामिल होती है।

अन्य समस्या जिसका हक नियमित रूप से सामना करते हैं, संज्ञाओं के लिंग से संबंधित है, जो कि अंग्रेजी और स्पैनिश में बहुत ही अलग ढंग से उपयोग किये जाते हैं। बेशक GD की संपादकीय टीम दुनियाभर में महिलाओं के संघर्षों से अवगत है, और पत्रिका विभिन्न देशों में महिलाओं के अधिकारों, लिंग मुद्दों और नारीवादी वार्ताओं के बारे में लेख शामिल करती है। कई आलोचक मानते हैं कि स्पैनिश (और अन्य भाषायें) लैंगिक पूर्वाग्रह रखती हैं; इस प्रकार, कुछ लेखक–विशेषकर जब लैंगिक असमानताओं और संबंधित विषयों को संबोधित करते हुये–इस तरक के पूर्वाग्रहों से निबटने के लिये जानबूझ कर लेखन रणनीतियां अपना सकते हैं। परंतु जैसा कि हम प्रायः पहले तीसरी भाषा में लिखा जा चुके अंग्रेजी पाठ का अनुवाद करते है (जिसमें लैंगिक पूर्वाग्रह अधिक स्पष्ट हो सकता है), मूल भाषा में पूर्वाग्रहित और सैक्सिसस्ट लेखन को चुनौती देने के उद्देश्य वाला लेखक का सूक्ष्म शब्द चयन हमारे अनुवाद में अनिच्छापूर्वक छुपा हो सकता है।

अन्य संपादकीय टीमों से अलग, हमने ला प्लाता राष्ट्रीय विश्वविद्यालय के समाजशास्त्र विभाग के कुछ अधिक छोटे समूह के बीच हमारे कार्यभार को केंद्रित करना पसंद किया। GD का अंग्रेजी संस्करण मिलने के पश्चात्, पीलार और मार्टिन विषयसंबंधी लगाव और व्यक्तिगत रूचि के अनुसार लेखों को बांट देते हैं। अनुवादक अपने आप हर लेख का अनुवाद करते हैं और फिर एक दूसरे के कार्यों की जांच करते हैं। बाद में, जुआन सारे अनुवादों को पूर्णतया और विस्तृत रूप से दोहराता है। इस सारी प्रक्रिया के दौरान हमें लोला बुसुतिल की अमूल्य सलाह मिल जाती है। उनकी कई भाषाओं में अच्छी योग्यता और अनुवाद करने का लंबा अनुभव हमें जी. डी. के स्पैनिश संस्करण को बेहतर बनाने में मदद के लिये महत्वपूर्ण है।

GD में भाग लेना, हमारी अनुवाद करने के कौशल का विकास करने के और साथ ही सामाजिक विषयों और संदर्भों की अमित विविधता के संपर्क में लाने के, दोनों के लिये बहुत ही समृद्ध करने वाला रहा है। ग्लोबल डॉयलोग हमें संसार को बेहतर तरीके से जानने में मदद करता है, और ऐसा करने में यह हमारी समाजशास्त्रीय कल्पना को उद्दीप्त करता है।

>>

जुआन इग्नासियो पियोवानी ला प्लाता राष्ट्रीय विश्वविद्यालय के समाजशास्त्र विभाग में सामाजिक अनुसंधान पद्धतियों के प्रोफेसर हैं और राष्ट्रीय वैज्ञानिक और तकनीकी अनुसंधान परिषद (CONICET, अर्जेंटीना) में अनुसंधानकर्ता हैं। उन्होंने अपनी एम. एससी की डिग्री सामाजिक अनुसंधान पद्धतियों और सांख्यिकीय में लंदन विश्वविद्यालय से जो कि अब शहर है और पीअन्जा रोम विश्वविद्यालय (इटली) से समाज विज्ञान की पद्धति में पी एच डी की डिग्री अर्जित की। वह कोर्बोदा राष्ट्रीय विश्वविद्यालय (अर्जेंटीना) में सामाजिक विज्ञान में और फेडरल यूनिवर्सिटी ऑफ रियो दि जनारियो (ब्राजील) में समाजशास्त्र और मानवविज्ञान के स्नातकोत्तर कार्यक्रम में एक पोस्ट–डाक्टोरल फैलो थे। कई वर्षों तक, उन्होंने इतिहास और समाजशास्त्रीय पद्धतियों के आधार और तर्क पर शोध संचालित किया। 2011 से रिसर्च प्रोग्राम ऑन अर्जेनिटिनियन कन्टेम्पररी सोसाइटी (PISAC), एक पहल जो कई परियोजनाओं को जोड़ती है और देशभर की सरकारी विश्वविद्यालयों के 50 समाज विज्ञान संकाय को शामिल करती है, के निर्देशक हैं।

पिलार पी पुइग ने समाजशास्त्र की पढाई ला प्लाता राष्ट्रीय विश्वविद्यालय, अर्जेंटीना में की है। वह वर्तमान में इसी विश्वविद्यालय में सामाजिक विज्ञान में पी एच डी की विद्यार्थी हैं। उनका शोध पर्यावरण के समाजशास्त्र के अंदर तैयार किया गया है और उनकी रूचि पर्यावरण, शहरी संदर्भों में गरीबी और असमानता में है। वह समाजशास्त्र विभाग में काम करती है, जहां उन्होंने गरीबी और असमानता के अध्ययन में पद्धतिशास्त्र संबंध मुद्दों से संबंधित अनेक परियोजनाओं में भाग लिया है। पीलार ला प्लाता शहर के आस पास के वंचित क्षेत्रों में विस्तार कार्यक्रमों में और वर्पटाल विश्वविद्यालय (जर्मनी) के साथियों के साथ विभिन्न विनिमय गतिविधियों में भी शामिल है।

मार्टिन उर्त्सुन ने समाजशास्त्र की पढाई ला प्लाता राष्ट्रीय विश्वविद्यालय (अर्जेंटीना) में की है, जहां वह वर्तमान में CONICET द्वारा दी गयी एक छात्रवृत्ति के साथ सामाजिक विज्ञान में डॉक्टरेट की पढ़ाई कर रहे हैं। मार्टिन वर्तमान की "preemptive" तकनीकी उपकरणों पर आधारित सुरक्षा नीतियों, प्रमुखतः शहरी विडियो निगरानी पर शोध संचालित कर रहे हैं। वह सैद्धांतिक रूप से व्यवहारिक समाजशास्त्र के द्वारा और विज्ञान, तकनीक और समाज के अध्ययनों द्वारा सूचित नृवंशविज्ञान दृष्टिकोण का अनुसरण करते हैं। वह लोकप्रिय शिक्षा में भी रूचि रखते हैं और सामाजिक आंदोलन के अंतर्गत आयोजित व्यस्कों के लिये एक पीपुल्स हाई स्कूल में शिक्षक और कार्यकर्ता दोनों के रूप में भाग लेते हैं।

जुआन इग्नासियो पाओवानी से पत्र व्यवहार हेतु पता <juan.piovani@presi.unlp.edu.ar>
पिलार पी पुइग से पत्र व्यवहार हेतु पता <pilarpipuig@gmail.com>
मार्टिन उर्त्सुन से पत्र व्यवहार हेतु पता <martinjurtasun@gmail.com>